प्रवेशांक

वर्ष 2018

उत्थान

सामाजिक परिवर्तन का सार्थक प्रयास

SBGBT

सोच बदलो गाँव बदलो टीम एवं इको नीड्स फाउंडेशन

SBGBT TEAM

उत्थान

सामाजिक परिवर्तन का सार्थक प्रयास

प्रवेशांक वर्ष 2018

सम्पादक मण्डल

प्रधान सम्पादक
डॉ. सत्यपालसिंह मीना

सम्पादक
दिनेश मीना
अजय रावत

सम्पादन सहयोग
हरिमोहन जी
सत्येन्द्र रावत
प्रेम रावत
मनीराम मीना

SBGBT

सोच बदलो गाँव बदलो टीम
एवं इको नीड्स फाउंडेशन

विषय सूची

क्र.	शीर्षक	पृष्ठ क्र.
1.	प्रस्तावना	03
2.	संदेश – श्री पी.के. दाश, श्री पतंजलि झा, प्रो. रूपसिंह बरेठ	05
3.	विज़न	08
4.	यात्रा के विभिन्न सोपान	09
5.	अपनी बात	11
6.	यात्रा के उद्देश्य	12
7.	सोच बदलो गांव बदलो अभियान – अब तक का सफर।	14
8.	सोच बदलो गांव बदलो अभियान की जरूरत क्यों ?	20
9.	अभियान का जनमानस पर असर ।	22
10.	बदलाव की कहानी – लोगों की जुबानी ।	
	i. विकास का नयी इबारत – स्मार्ट विलेज 'धनौरा' ।	24
	ii. अथक व भागीरथी प्रयास – धनेरा व खिन्नौट ।	28
	iii. नशाखोरी पर पाई पूर्ण विजय – दुर्गसी ।	32
	iv. बड़ापुरा ने दिखाई बड़ी सोच – बड़ापुरा ।	33
	v. ढाणी में बही विकास की बयार– हलकारा (बिछौछ) सवाई माधोपुर ।	35
	vi. युवाओं ने ली व्यसनों से दूर रहने की शपथ – खरगापुरा (गोविंदपुरा) ।	36
	vii. महिलाओं और ग्रामीणों ने लगाई शराब और जुआ पर रोक – चिलाचौंद ।	37
	viii. युवाओं ने किया विकास समिति का गठन – बरौली ।	38
	ix. बदलाव के लिए उठ खड़े हुए दो गांव – कोयला व कांकरई ।	39
	x. 70 साल में पहली बार दिवाली पर गांव में जुआ नहीं – सुरारी कलां ।	40
	xi. ग्रामीणों ने कहा बुराइयों को अलविदा –झाला ।	41
	xii. ग्रामीणों ने नशे व बुराइयों को छोड़ किया शिक्षा की ओर रुख – सुनीपुर ।	42
	xiii. आदर्श गांव में दिखा बदलाव का असर – खानपुर मीणा ।	43
	xiv. वर्षों से टूटी सड़क का प्रशासन व ग्रामीणों ने मिलकर किया जीर्णोद्धार – उमरेह ।	45
	xv. सीमांत गांव ने की विकास की रफ्तार तेज – विलोनी ।	46
	xvi. जगाई शिक्षा की अलख – अंगारी ।	48
	xvii. अनोखी व अद्भुत होली – कांसोटी खेड़ा ।	50
	xviii. बदली सोच ने की वर्षों की आस पूरी, आजादी के 70साल बाद बनी सड़क – रघुवीर पुरा।	52
	xix. ग्रामीणों ने किया गांव के रास्तों को अतिक्रमण मुक्त – हांसई ।	56
11.	वर्तमान में जारी महत्वपूर्ण सरकारी योजनाओं की संक्षिप्त जानकारी – रामलखन एवं हेमराज।	57
12.	डिजिटल तकनीक की उपयोगिता और युवाओं की भागीदारी – मनीराम एवं उदय।	60
13.	कविता 'उत्थान'– हरि मर्मट ।	67
14.	स्वच्छ लोकतंत्र की आवश्यकता – सुरेश 'प्रभु', सुरारी कलां ।	68
15.	वन अधिकार अधिनियम – रामेश्वर दयाल, खिन्नौट ।	70
15.	सूचना का अधिकार अधिनियम 2005 – मनीराम	73
17.	कविता "सोच बदलो गांव बदलो" – 'कवि' अजय रावत ।	78
18.	'मृत्युभोज' एक सामाजिक कलंक – देवेन्द्र प्रताप दुर्गसी।	80
19.	जानकारी और जागरूकता – विकास की पहली आवश्यकता – प्रोफेसर प्रियानन्द अगड़े ।	83
20.	प्राकृतिक आईना व समाजीकरण की प्रक्रिया – डॉ. सत्यपाल सिंह मीना, स्मार्ट विलेज 'धनौरा'।	88
21.	समाचार पत्रों में	90

प्रस्तावना

प्रिय पाठकों,

ग्रामीण विकास व जन चेतना को समर्पित, "उत्थान" पत्रिका का यह पहला अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए बेहद खुशी की अनुभूति हो रही है। जैसा कि आप सभी जानते हैं कि भारत की आत्मा गांवों में बसती है और भारत की लगभग 70 प्रतिशत आबादी आज भी गांवों में निवास करती है। इसके बावजूद, एक ओर जहां शहरों में विकास के नित नए आयाम स्थापित किए जा रहे हैं, वहीं दूसरी ओर हमारा ग्रामीण भारत आज भी विकास की दृष्टि से हाशिए पर है। आज भी हमारे गांव बुनियादी सुविधाओं से कोसों दूर हैं। इसके पीछे जो खास वजह नजर आती है, वह है – ग्रामीण इलाकों में रह रहे लोगों में जन जागरूकता की कमी, भ्रष्ट तंत्र और जटिल सरकारी प्रक्रिया। केंद्र व राज्य सरकारें हर वर्ष ग्रामीण विकास के लिए करोड़ों के बजट प्रस्ताव पास करती हैं और विभिन्न योजनाएं लेकर आती हैं। लेकिन, ग्रामीण क्षेत्रों में जागरूकता के अभाव, पारदर्शिता की कमी व रसूखदार लोगों के बोलबाले के चलते इसका समुचित लाभ, लाभार्थियों तक नहीं पहुंच पाता है और ज्यादातर बजट व योजनाएं साकार रूप नहीं ले पाती हैं। सरकारी तंत्र भी डिजिटल इंडिया के सपने को संजोए पारदर्शिता के लिए तमाम कोशिशें कर रहा है। लेकिन, अभी तक अपेक्षित परिणाम हासिल करना बाकी है।

ऐसे में जरूरत है, ग्रामीणों में विकास की जन चेतना पैदा करने की, उनमें उनके अधिकारों के प्रति जागरुकता लाने की, विभिन्न सरकारी योजनाओं को उनके असली हकदारों तक पहुंचाने की, सरकारी तंत्र के प्रयासों को ताकत देने की। तभी धरातल पर अपेक्षित बदलाव देखने को मिल सकते हैं, हमारे गांव भी विकास की मुख्यधारा से जुड़ सकते हैं और हमारा भारत भी सही मायनों में विकसित राष्ट्र के सपने को साकार कर सकता है।

इसी उद्देश्य व थीम पर केन्द्रित है – "सोच बदलो – गांव बदलो" अभियान। इस अभियान के माध्यम से पिछले 1वर्ष में राजस्थान, महाराष्ट्र व मध्य प्रदेश के कई गांवों में जनसभाएं आयोजित कर, लोगों में विकास की जन चेतना पैदा करने व बदलाव के लिए युवा पीढ़ी को प्रेरित करने की सफल कोशिश की गयी है। इन जनसभाओं के माध्यम से लोगों को विभिन्न सरकारी योजनाओं, सरकारी तंत्र की प्रक्रियाओं को सरल व आम भाषा में समझाने की कोशिश की गयी है, जनसहभागिता से विकास में भागीदार बनने के लिए प्रेरित करने की कोशिश की गयी है। ग्रामीणों से सीधे मुखातिब होकर उनकी परेशानियों को समझकर, उनके समाधान खोजने की कोशिश की गई है। ग्रामीणों को विभिन्न बीमारियों से बचाव हेतु, अपने गांव व आसपास के परिवेश में स्वच्छता

बनाए रखने, खुले में शौच मुक्त गांव बनाने व पर्यावरण संरक्षण हेतु वृक्षारोपण करने की प्रेरणा दी गयी है। ग्रामीण बच्चों को अच्छी शिक्षा व संस्कारों के लिए प्रेरणा देने के साथ–साथ अंधविश्वासों व सामाजिक कुरीतियों को त्यागकर वैज्ञानिक सोच को बढ़ावा देने का संदेश भी इस अभियान के माध्यम से दिया गया है। ग्रामीण व पिछड़े तबके के गरीब बच्चों को अच्छी शिक्षा व अवसर उपलब्ध कराने के उद्देश्य से कस्बों व ग्राम स्तर पर किफायती दरों/निशुल्क कोचिंग संस्थान व लाइब्रेरीज की स्थापना की गई है।

सोच बदलो गांव बदलो अभियान की सफलता ने ही "उत्थान" वार्षिक पत्रिका को लिखने की प्रेरणा दी। "उत्थान" पत्रिका के माध्यम से, "सोच बदलो – गांव बदलो" अभियान की मुहिम, विभिन्न गांवों/कस्बों/शहरों में बदलाव के लिए किए गए व्यक्तिगत अथवा सामूहिक प्रयास व अनुभव, विभिन्न सरकारी योजनाओं की जानकारी, पारदर्शिता के लिए डिजिटल इंडिया के तहत सरकारी महकमों से सीधे संपर्क करने व विभिन्न सरकारी योजनाओं से यथोचित लाभ लेने के तरीके एवं विभिन्न विषय विशेषज्ञों के स्वतंत्र विचारों को आप पाठकों तक पहुंचाने का प्रयास है।

इस अंक में "सोच बदलो गांव बदलो" अभियान की शुरुआत से लेकर अब तक के सफर, वर्तमान परिदृश्य में इसकी जरूरत, जनमानस पर इस मुहिम के सकारात्मक प्रभावों, स्मार्ट विलेज "धनौरा" की माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी के हाथों देश के मॉडल विलेज खिताब तक की यात्रा, महत्वपूर्ण सरकारी योजनाओं की संक्षिप्त जानकारी, डिजिटल तकनीक व सूचना प्रौद्योगिकी के इस आधुनिक युग में, विकास कार्यों में युवा पीढ़ी की भागीदारी बढ़ाने के उद्देश्य से, युवाओं के लिए ऑनलाइन/ऑफलाइन टूल्स को उपयोग में लाने के कुछ आसान तरीकों इत्यादि को आप पाठकों तक पहुंचाने की कोशिश की गयी है। SBGBT के प्रबुद्ध साथियों द्वारा लिखे, उपयोगी जानकारी को समाहित किए हुए, प्रेरणादायक उद्धरण भी इस अंक में शामिल किए गए हैं। ग्रामीण भारत को समर्पित इस पत्रिका के सभी लेख बेहद सरल व आम भाषा में आप तक पहुंचाने की कोशिश की गयी है।

जय हिन्द ।

सादर

संपादक मण्डल

भारत सरकार
GOVERNMENT OF INDIA
वित्त मंत्रालय / राजस्व विभाग
MINISTRY OF FINANCE
DEPARTMENT OF REVENUE
केन्द्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड
CENTRAL BOARD OF DIRECT TAXES
नार्थ ब्लॉक, नई दिल्ली – 110 001
North Block, New Delhi - 110 001

प्रसन्न कुमार दाश
सदस्य, केन्द्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड

संदेश

यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि सोच बदलो गाँव बदलो टीम के माध्यम से ग्रामीण परिवेश में पले बढ़े युवाओं के समग्र प्रयासों से ग्रामीण क्षेत्र में विकास की अभूतपूर्व क्रांति का मार्ग प्रशस्त किया जा रहा है ।

कहा जाता है कि भारत की आत्मा गाँवों में बसती है। शहरी क्षेत्र का विकास भर हो जाने से भारत का पूर्ण विकास संभव नही है। भारत को पूर्ण विकसित देशों में श्रेणी में अग्रणी बनाने हेतु गाँवों के समग्र विकास की योजना बनाकर उसे शत् प्रतिशत् समर्पण भाव से लागू करने पर ही गाँवों का विकास संभव हो सकता है, किन्तु मात्र शासकीय योजनाओं, जन प्रतिनिधियों, प्रशासनिक अधिकारियों के भरोसे ग्रामीण क्षेत्रों का विकास होना एक दिवास्वप्न जैसा प्रतीत होता है।

मैं बधाई देना चाहता हूँ सोच बदलो गाँव बदलो टीम के सभी कार्यकर्ताओं को जिन्होंने अल्प समय में इस क्षेत्र में इतना उल्लेखनीय कार्य किया है।

इसी कड़ी में सोच बदलो गाँव बदलो टीम की वर्ष भर की गतिविधियों को समाहित करते हुए पत्रिका 'उत्थान' का प्रकाशन किया जा रहा है जिसके लिए समस्त कार्यकर्ता एवं सदस्य बधाई के पात्र हैं ।

उज्ज्वल भविष्य हेतु शुभकामनाएँ...

– पी. के. दाश
सदस्य, केन्द्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड

भारत सरकार

प्रधान मुख्य आयकर आयुक्त कार्यालय
आयकर भवन, 48, अरेरा कॉलोनी,
होशंगाबाद रोड, भोपाल

पतंजलि झा
प्रधान निदेशक – अन्वेषण

संदेश

सोच बदलो गाँव बदलो टीम के नेतृत्व में राजस्थान के धौलपुर के एक गाँव से ग्रामीण विकास की जो यात्रा आरंभ हुई है, इसने देखते ही देखते ही आसपास के गाँवों में मानो विकास की गंगा ही बहा दी है।

सभी कार्यकर्ताओं के समर्पण, किसी प्रकार की प्रसिद्धि की लालसा न रखते हुए गाँवों के चहुँमुखी विकास का जो स्वप्न साकार किया उस हेतु मैं सभी कार्यकर्ताओं, सक्रिय सदस्यों और विशेष रूप से मेरे अधीनस्थ डॉ. सत्यपालसिंह मीना (संयुक्त निदेशक, आयकर) को विशेष साधुवाद देना चाहता हूँ जिन्होंने ग्रामीण विकास का ऐसा मार्ग प्रशस्त किया है, जिसे यदि हर कोई अपना ले तो गाँवों का समग्र विकास किया जा सकता है।

महात्मा गांधी ने ग्रामीण भारत के विकास को लेकर जो स्वप्न देखा था, आज आजादी के 72 वर्षों बाद सोच बदलो गाँव बदलो टीम के माध्यम से साकार होता दिखाई दे रहा है।

सोच बदलो गाँव बदलो टीम द्वारा प्रकाशित यह पत्रिका 'उत्थान', वास्तव में ग्रामीण जनजीवन के उत्थान की गाथा ही है, जिसके लिए समस्त कार्यकर्ता एवं सदस्यों को बधाई देता हूँ एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

Patanjali

– पतंजलि झा
प्रधान निदेशक – अन्वेषण, आयकर, भोपाल

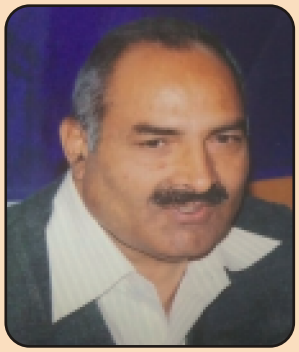

संदेश

यदि भारत देश की सम्पूर्ण प्रगति देखना हो तो हमें गाँवों की ओर रुख करना पड़ेगा। किन्तु विडम्बना यह है कि ग्रामीण भारत विकास के मामले में आज भी शहरी क्षेत्रों की तुलना में अत्यंत पिछड़ा हुआ है।

शहरी भारत और ग्रामीण भारत में विकास के इसी असंतुलन को दूर करने का प्रयास धौलपुर जिले के कुछ युवाओं ने सोच बदलो गाँव बदलो टीम के माध्यम से किया है और मुझे यह कहते हुए बड़ा आनन्द हो रहा है कि धौलपुर के ही छोटे से गाँव धनौरा के होनहार सपूत और मेरे विद्यार्थी डॉ. सत्यपालसिंह मीणा (संयुक्त आयकर निदेशक) के नेतृत्व में क्षेत्र के युवाओं ने इस क्षेत्र में विकास की गंगा प्रवाहित करने का भगीरथी प्रयास किया है जिसमें वे निःसंदेह सफल भी हो रहे हैं।

सोच बदलो गाँव बदलो टीम के द्वारा समय–समय पर विभिन्न गाँवों में लोगों के साथ मिल बैठकर, बैठकें आयोजित कर लोगों को आपसी वैमनस्य भुलाकर गाँव के विकास, अंधविश्वास उन्मूलन, शराबबंदी, जुआ बंदी आदि हेतु जागरुक किया जा रहा है। इस कार्य में क्षेत्र में पदस्थापित शासकीय कर्मचारियों द्वारा भी शासन की विभिन्न जनकल्याणकारी योजनाओं की जानकारी प्रदान कर उनका अधिक से अधिक लाभ लेने हेतु ग्रामीणजनों को प्रोत्साहित किया जा रहा है।

युवाओं द्वारा जलाई गई परिवर्तन की यह मशाल अनवरत् जलती रहे, ऐसी शुभकामनाएँ प्रेषित करते हुए इस पत्रिका के प्रकाशन अवसर पर सभी को शुभकामनाएँ देता हूँ।

–प्रो. रुपसिंह बारेठ
पूर्व उप कुलपति,
स्वामी दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर

सोच बदलो गाँव बदलो अभियान

विज़न

- समाज में विकास की जन चेतना व जन जागरूकता पैदा करना ।
- लोगों को उनके अधिकारों व कर्तव्यों के प्रति जागरुक करना ।
- ग्रामीणों को सरकारी योजनाओं यथा केन्द्र/राज्य/नाबार्ड और विकास कार्यक्रमों की जानकारी देना और उनके लाभ लाभार्थियों तक पहुँचाने में सरकारी एजेन्सीज का सहयोग करना।
- वित्तीय समावेशन सुनिश्चित करने के लिए वित्तीय साक्षरता कार्यक्रम आयोजित करना।
- स्वयं सहायता समूह, किसान समूह, महिला मंडल, युवा संगठन एवं चौपाल जैसी व्यवस्थाओं को स्थापित करके लोगों को नियमित रूप से भागीदारी हेतु प्रेरित करना और गांव के सुधार एवं विकास कार्यों पर परिचर्चा तथा सामूहिक निर्णय के लिए पेरित करना।
- गांवों की स्थानीय समस्याओं पर विचार–विमर्श करना और उनका स्थानीय स्तर पर समाधान खोजने का प्रयास करना। गांवों के विकास को गति देने के लिए गांव विकास समितियों का गठन करना।
- बच्चों को अच्छे संस्कारों और अच्छी शिक्षा के लिए प्रोत्साहित करना। बच्चों में मानवीय मूल्यों का समावेश करना ताकि शिक्षा की गुणवत्ता के साथ साथ सामाजिक स्तर में भी सुधार हो । इस हेतु गांवों में बाल सस्कार केन्द्रों की स्थापना करना।
- प्रतिभाशाली बच्चों को नियमित रूप से सम्मानित और प्रोत्साहित करना। शिक्षा के क्षेत्र में जरूरतमंद बच्चों की आर्थिक सहायता करना। ग्राम/उपखण्ड स्तर पर पुस्तकालय खुलवाना और उत्थान कोचिंग संस्थान के नाम से कोचिंग संस्थानों की स्थापना करना।
- युवा पीढ़ी का उचित मार्गदर्शन करना। युवा उर्जा को सही दिशा देना व राष्ट्र निर्माण में युवा भागीदारी बढ़ाना।
- लोगों को पर्यावरण के विषय में जागरूक बनाना ताकि पेड़ व पानी का संरक्षण किया जा सके । खेती की आधुनिक तकनीकों व सरकारी योजनाओं की जानकारी उपलब्ध कराना ताकि उन्नत खेती के साथ हमारे गांवों में खुशहाली लायी जा सके।
- लोगों में पारस्परिक सद्भाव, समरसता, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और मानवतावादी सोच को बढ़ावा देना। न्याय और लोकतांत्रिक मूल्यों पर आधारित समतामूलक समाज का निर्माण करना।

यात्रा के विभिन्न सोपान

यात्रा के विभिन्न सोपान

"सोच बदलो – गाँव बदलो" यात्रा की पूर्व संध्या पर डॉ सत्यपाल सिंह जी का उदबोधन

दोस्तों नमस्कार,

सोच बदलो गांव बदलो यात्रा की पूर्व संध्या पर मैं आप सभी से जन जागरूकता और जन चेतना पैदा करने के लिए शुरू होने वाले युवाओं के प्रयासों में शामिल होने का आह्वान करता हूं। अपने अधिकारों और दायित्वों के प्रति सजग युवाओं ने समाज और राष्ट्र के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को निभाने के उद्देश्य से एक अभिनव अभियान की शुरुआत करने का निर्णय किया है। इस अभियान का केंद्र बिंदु गांव के बुजुर्गों, युवाओं, महिलाओं, सरकारी कर्मचारियों और सामाजिक कार्यकर्ताओं को एक मंच पर लाकर गांव विकास के लिए कार्य करने हेतु प्रेरित करना है। यह एक अभूतपूर्व घटना है कि सरकारी कर्मचारी और जागरूक युवा एक मंच पर आकर एक नई सोच व अनूठी पहल के साथ बदलाव की इबारत लिखने की कोशिश करने जा रहे हैं। यह यात्रा ग्रामीण भारत के विकास में बाधक संकुचित व संकीर्ण मानसिकता से बाहर निकलने, एक नई प्रगतिशील सोच देने और बरसों से हाशिए पर रहे ग्रामीण विकास को रफ्तार देने की एक कोशिश है। यह मुहिम ग्रामीण क्षेत्रों में आपसी सहयोग व सौहार्द पुनर्स्थापित करने और इसे आगे बढ़ाने की एक कोशिश है। यह अभियान युवा पीढ़ी की असीमित ऊर्जा को सकारात्मक व रचनात्मक दिशा देने और नशा व व्यसन मुक्त समाज निर्माण करने का एक प्रयास है।

मुझे आशा ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास है कि कल की सुबह, एक नई उम्मीद की किरणों के साथ, एक नई सोच को जन्म देगी। कल 14 मई रविवार, से शुरू होने वाली ऐतिहासिक यात्रा संपूर्ण ग्राम विकास के महत्वाकांक्षी सपने को साकार करने की दिशा में एक सकारात्मक व बड़ी शुरूआत होगी। यह यात्रा ग्रामीणों को सरकारी योजनाओं की समुचित जानकारी देने, ग्राम सभा के सदस्य के रूप में मिले अधिकारों व कर्तव्यों के प्रति जागरूक करने, ग्राम विकास के सरकारी प्रयासों को ताकत देने, जनसहभागिता का महत्व समझाने के साथ–साथ, ग्रामीण इलाकों में जन जागरूकता पैदा करने की एक अभिनव शुरुआत होगी। यह यात्रा, बच्चों व युवा पीढ़ी में अच्छे संस्कारों को मजबूत करने, उनका मार्गदर्शन करने के साथ–साथ अपने गांव, समाज व राष्ट्र के प्रति जिम्मेदारी का भाव जगाने की एक कोशिश होगी।

साथियों, बदलाव के प्रति आप सभी युवाओं का उत्साह काबिले तारीफ है। इस अवसर पर मैं आप सबसे निवेदन करता हूं कि यात्रा के दौरान लोगों के समक्ष अपनी बात रखते समय भाषा पर पूर्ण संयम रखेंगे। ऐसा कोई कार्य नहीं करेंगे जिससे कि किसी की भावनाएं आहत हों। प्रत्येक व्यक्ति अपनी क्षमता और योग्यता से इस मिशन में काम कर रहा है और प्रत्येक की अपनी महत्वपूर्ण भूमिका है। अतः किसी भी व्यक्ति को महान बताने या प्रशंसा करने से बचें। मैं भी आप सभी की तरह एक कार्यकर्ता मात्र हूँ और अपना पूर्ण योगदान देने का वायदा आपसे दोहराता हूँ। हमारे बुजुर्ग, हमारा सबसे बड़ा सम्मान हैं। अतः यात्रा के दौरान उनकी उपेक्षा या आलोचना का कोई स्थान नहीं होना चाहिए। हमें हमारे बुजुर्गों के मार्गदर्शन और उनके अनुभव के साथ–साथ महिलाओं व बच्चों को साथ लेकर एक सभ्य समाज का निर्माण करना है और ग्रामीण विकास को एक नई दिशा देनी है। हमें यह तथ्य ध्यान में रखना चाहिए कि सामाजिक व्यवस्थाओं में बदलाव एक बेहद धीमी प्रक्रिया है। केवल संगठित व्यवस्थित और निरंतर प्रयासों से ही बदलाव लाया जा सकता है। अतः अपने विचार रखते समय सकारात्मक सोच व धैर्य का परिचय दें। इस यात्रा में हमें आपसी मतभेद और अहम भाव को एक ओर रखकर सबको साथ लाना है। इस बात का खास ध्यान रखें कि कल्पना व आदर्शवादिता से इतर जमीनी स्तर पर बदलाव ला सकने वाले विचारों को ही प्राथमिकता दें। यह यात्रा किसी भी तरह का कोरा दिखावा या मान–प्रतिष्ठा हासिल करना नहीं है, बल्कि ग्रामीण युवाओं द्वारा एक सच्चे सिपाही की भांति अपने गांव व समाज के प्रति अपना फर्ज अदा करने, अपने कर्तव्यों का निर्वहन करने और एक अभूतपूर्व बदलाव लाने की, एक क्रांतिकारी शुरुआत है।

इन्हीं शब्दों के साथ आप सभी को इस ऐतिहासिक यात्रा और इसकी सफलता के लिए अग्रिम शुभकामनाएँ।

डॉ सत्यपाल सिंह मीना,
संयुक्त आयकर आयुक्त, इंदौर

सोच बदलो गाँव बदलो यात्रा

यात्रा के उद्देश्य :

वैचारिक जन चेतना और जन जागरूकता ही समाज के विकास आधार है। हमारे गॉवों में जागरूकता का अभाव, शिक्षा का निम्न स्तर, रोजगार या व्यवसाय के साधनों का अभाव, आधारभूत सुविधाओं जैसे रहने योग्य घर, पीने योग्य पानी, पक्की सड़कें, शौचालय का अभाव, अच्छी स्वास्थ्य सेवाओं का अभाव, आधुनिक खेती के प्रति अनभिज्ञता, पानी की कमी, सरकारी योजनाओं व विकास कार्यक्रमों के विषय में पर्याप्त जानकारी का अभाव और योग्य लाभार्थी तक योजनाओं का लाभ न पहुंचना इत्यादि। इन्हीं समस्याओं ने समाज में सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक लोकतंत्र और न्याय स्थापित कर एक समतामूलक समाज स्थापित करने में बड़ी बाधा खड़ी की हुई है। अतः इन सभी समस्याओं के समाधान और ग्रामीण भारत के जीवन स्तर में गुणात्मक परिवर्तन लाने के लिए शिक्षित, जागरूक और संगठित युवा पीढ़ी ने नई सोच, नए उत्साह और उमंग के साथ ''सोच बदलो गॉव बदलो'' अभियान की शुरुआत की है। यह अभियान निम्न उद्देश्यों के साथ काम कर रहा है :

1. गांवों में सकारात्मक सोच और रचनात्मक कार्यों द्वारा जन जागरूकता पैदा करना और विकास के लिए जन चेतना पैदा करना ताकि हम अपने अधिकारों व कर्तव्यों के प्रति सचेत हों और विकास प्रक्रिया का हिस्सा बनें।
2. गॉवों की स्थानीय समस्याओं पर विचारविमर्श करना और उनका स्थानीय स्तर पर समाधान खोजने का प्रयास करना। गांवों के विकास को गति देने के लिए ''गांव विकास समितियों'' का गठन करना। जिसका मुख्य उद्देश्य ग्राम सभा और ग्राम पंचायत के साथ सहयोगात्मक समन्वय द्वारा गांव के विकास के लिए कार्य करना।
3. युवा पीढ़ी का उचित मार्गदर्शन करना और युवाओं की उर्जा का सकारात्मक दिशा देना ताकि हमारे युवा प्रगति पथ पर आगे बढ़ें, राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया में सहभागी बनें और अपने माता–पिता, गांव व देश का नाम रोशन करें।
4. बच्चों को अच्छे संस्कारों और अच्छी शिक्षा के लिए प्रोत्साहित करना। बच्चों में मानवीय मूल्यों को समावेश करना ताकि शिक्षा की गुणवत्ता के साथ–साथ सामाजिक स्तर में भी सुधार हो। इस हेतु गांवों में बाल संस्कार केन्द्रों की स्थापना करना। सरकारी विद्यालयों में शिक्षा की गणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए कार्य करना।
5. प्रतिभाशाली बच्चों को नियमित रूप से सम्मानित और प्रोत्साहित करना। शिक्षा के क्षेत्र में जरूरतमंद बच्चों की आर्थिक सहायता करना। गांवों में पुस्तकालय खुलवाना और उनका नियमित संचालन करना। उत्थान कोचिंग संस्थान के नाम से कोचिंग संस्थानों की स्थापना करना और संचालन करना।
6. ग्रामीणों को सरकारी योजनाओं और विकास कार्यक्रमों की जानकारी देना। सरकारी योजनाओं यथा केन्द्र, राज्य, नाबार्ड आदि की जानकारी और उनके लाभ लाभार्थियों तक पहुंचाने में सरकारी एजेंसीज का सहयोग

करना। इस अभियान का मूल मंत्र है – आमजन की सक्रिय भागीदारी ही विकास का आधार है।

7. वित्तीय समावेशन सुनिश्चित करने के लिए वित्तीय साक्षरता कार्यक्रम आयोजित करना। वित्तीय समावेशन के महत्व के प्रति ग्रामीणों को जागरूक करना तथा क्रेडिट (KCC/GCC/ACC) के विषय में जागृति लाना । अधिकतम लोगों को बैंकिंग व्यवस्था से जोड़ने का प्रयास करना।

8. स्वयं सहायता समूह, किसान समूह, महिला मंडल, युवा संगठन एवं चौपाल जैसी व्यवस्थाओं को स्थापित करके लोगों को नियमित रूप से भागीदारी हेतु प्रेरित करना और गांव के सुधार एवं विकास कार्यों पर परिचर्चा तथा सामूहिक निर्णय के लिए प्रेरित करना। सहकारी समितियों के माध्यम से स्थानीय स्तर पर रोजगार पैदा करने का प्रयास करना।

9. लोगों को पर्यावरण के विषय में जागरूक बनाना ताकि पेड़ व पानी का संरक्षण किया जा सके। इसके अन्तर्गत वृक्षारोपण, जल संरक्षण अभियान, अतिक्रमण मुक्ति अभियान, स्वच्छता अभियान इत्यादि कार्यक्रम संचालित करना। किसानों को खेती की आधुनिक तकनीकों व सरकारी योजनाओं की जानकारी उपलब्ध कराना ताकि उन्नत खेती के साथ हमारे गांवों में खुशहाली लायी जा सके।

10. लोगों में पारस्परिक सद्भाव, समरसता, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और मानवतावादी सोच को बढ़ावा देना। न्याय और लोकतांत्रिक मूल्यों पर आधारित समतामूलक समाज का निर्माण करना।

सोच बदलो गांव बदलो टीम जागरूक, सजग, संवेदनशील और प्रबुद्ध युवाओं/नागरिकों विशेष रूप से ग्रामीण परिवेश से संबंध रखने वाले युवाओं से आग्रह करती है कि अपने सकारात्मक, उर्जावान, नवाचारी विचारों और सुझाावों से गांवों के संपूर्ण विकास में महत्वाकांक्षी सपने को पूरा करने में अपनी सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करें।

आओ । सकारात्मकता और रचनात्मकता पर आधारित एक नए ग्रामीण भारत का निर्माण करें।

– सोच बदलो गांव बदलो टीम

> “गाँव, समाज और राष्ट्र के प्रति अपने उत्तरदायित्व के पालन करने का ही दूसरा नाम गाँव बदलो सोच बदलो टीम है ...”

सोच बदलो गाँव बदलो अभियान

अब तक का सफर...

मूलतः इस विचार की उत्पत्ति राजस्थान के धौलपुर जिले से हुई । अपने गांव को स्मार्ट विलेज के रूप में पहचान दिलाने वाले, धौलपुर के जनमानस के प्रिय डॉ. सत्यपाल सिंह मीना, जो कि भारतीय राजस्व सेवा में 2006 बैच के अधिकारी हैं और इको नीड्स फाउंडेशन के फाउंडर प्रोफेसर प्रियानंद अगड़े ने मिलकर, धौलपुर के कुछ सक्रिय और कर्मठ युवा साथियों को साथ लेकर, विकास के संदर्भ में हाशिए पर चल रहे ग्रामीण क्षेत्रों में जन चेतना व जन जागरूकता पैदा करने के उद्देश्य से एक विशाल जन चेतना व जन जागरूकता यात्रा करने का मन बनाया । इस जन चेतना यात्रा को "सोच बदलो गांव बदलो यात्रा" का नाम दिया गया और इस यात्रा के माध्यम से महाराष्ट्र, राजस्थान और मध्यप्रदेश के लगभग 100 गांवों को कवर करने का लक्ष्य रखा गया । इसके लिए कोऑर्डिनेटर्स की मदद से गांवों का चयन किया गया, जहां जन चेतना यात्रा के दौरान जनसभा रखने की रूपरेखा तैयार की गई । हर गांव में टीम कोऑर्डिनेटर नियुक्त किए गए थे । जैसे–जैसे यात्रा आगे बढ़ी, अपार जनसमर्थन व सहयोग मिलने से यह यात्रा एक अभियान का रूप लेती चली गई । दिन–ब–दिन "सोच बदलो गांव बदलो अभियान" अपने सकारात्मक व रचनात्मक कार्यों के चलते लोगों की सोच और विचारधारा में बदलाव लाने लगा । इस अभियान और विचारधारा से जुड़ने वाले लोगों की टीम 21मई 2017 से "सोच बदलो गांव बदलो टीम" के रूप में पहचानी जाने लगी । वर्तमान में यह अभियान इन तीनों राज्यों के अतिरिक्त कई अन्य राज्यों के गांवों, शहरों व कस्बों में युवा दिलों की धड़कन बन चुका है । यही इस अभियान की सबसे बड़ी सफलता भी कही जा सकती है क्योंकि इस सकारात्मक मुहिम ने युवा पीढ़ी की ऊर्जा को

सृजनात्मक व रचनात्मक कार्यों के प्रति अभिप्रेरित किया है ।

सोच बदलो गांव बदलो अभियान की विधिवत शुरुआत "सोच बदलो गांव बदलो यात्रा" के रूप में 1 मई 2017को इको हाउस (कार्यालय), इको नीड्स फाउंडेशन, औरंगाबाद (महाराष्ट्र) से सुबह 8.00 बजे, माननीय डॉक्टर सत्यपाल सिंह मीना (IRS) के कर कमलों द्वारा हरी झंडी दिखाकर हुई । यहां सबसे पहले यह यात्रा, गांव परसोड़ा (वैजपुर), औरंगाबाद पहुंची। यहां विभिन्न जन सभाओं के माध्यम से लोगों में जागरूकता व जन–चेतना पैदा करने का प्रयास किया गया। तत्पश्चात 14 मई 2017 की शाम 5.00 बजे यह यात्रा, प्रोफेसर प्रियानंद अगड़े और डॉ. सत्यपाल सिंह मीना के मार्गदर्शन में, राजस्थान के धौलपुर जिले के स्मार्ट विलेज 'धनौरा' पहुंची। चूंकि यात्रा के सूत्रधार डॉ. सत्यपाल सिंह मीना, राजस्थान के धौलपुर जिले से संबंध रखते हैं। अतः इस यात्रा के यहां पहुंचने से पूर्व ही युवाओं और लोगों में जबरदस्त उत्साह व कौतूहल का भाव था।

14 मई 2017 की शाम, यात्रा के राजस्थान पहुंचने पर पहले पूरे स्मार्ट विलेज 'धनौरा' में सोच बदलो गांव बदलो यात्रा के बैनर व नारे/स्लोगनों के साथ पैदल मार्च किया गया, उसके बाद विशाल जनसभा का आयोजन किया गया । इस अवसर पर सभी लोगों से इस पहली और ऐतिहासिक जन चेतना यात्रा में बढ़–चढ़कर भाग लेने हेतु आह्वान के साथ ग्राम विकास में जनसहभागिता का महत्त्व समझाया गया। 15 मई 2017 की सुबह 8.00 बजे सोच बदलो गांव बदलो यात्रा धौलपुर के सीमांत गांव विलोनी पहुंची और लोगों को जनसभा के माध्यम से यात्रा के उद्देश्य और कार्यों के बारे में विस्तृत जानकारी देते हुए वक्ताओं ने संबोधित किया। हर गांव की अपनी कुछ समस्याएं होती हैं, इस बात को ध्यान में रखते हुए, यात्रा के किसी भी गांव में पहुंचते ही, सर्वप्रथम गांव के ही किसी एक पढ़े लिखे/समझदार व्यक्ति

द्वारा उस गांव की अच्छाइयों और समस्याओं पर संक्षेप में प्रतिवेदन मांगा जाता । प्रतिवेदन के पश्चात कुछ समस्याओं का समाधान मौके पर ही विचार विमर्श कर विद्वान वक्ताओं द्वारा सुझाया जाता और शेष समस्याओं को यात्रा कोऑर्डिनेटर द्वारा अपनी डायरी में नोट कर लिया जाता ताकि भविष्य में इन समस्याओं के समाधान पर विचार किया जा सके और संबंधित गांव को सहयोग किया जा सके। इस तरह यह ऐतिहासिक जन चेतना यात्रा 21 मई 2017तक धौलपुर जिले के विभिन्न हिस्सों में बसे गांवों से होकर गुजरी। बीलौनी के बाद यह यात्रा क्रमशः सरमथुरा, कांसोटी खेड़ा, कछपुरा, सिंगोरई, कुहावनी, उमरेह, कोयला, चिलाचौंद, कांकरेट, बीझौली, कुरिगमा, धनेरा और खानपुर मीना इत्यादि गांवों में पहुंची और जनसभाओं के माध्यम से लोगों से सीधे मुखातिब होकर उनकी व्यक्तिगत और गांव की परेशानियों को समझने की कोशिश की गई। गांव के लोगों को उपलब्ध सरकारी योजनाओं का लाभ प्राप्त करने, उनके अधिकारों के प्रति सजग रहने और जन सहभागिता के महत्व को समझाया गया। लोगों से प्रशासन के साथ जनसहयोग के द्वारा गांव के विकास में तेजी लाने के लिए तथा आगे आने के लिए आह्वान किया गया। इस प्रकार यह यात्रा लोगों में उनके अधिकारों व कर्तव्यों के प्रति जागरूकता व जन–चेतना का प्रसार करते हुए, 4 जून 2017 को ग्राम अखेपुर (डबल चौकी) जिला देवास, मध्य प्रदेश में जाकर थमी । आज भी सोच बदलो गांव बदलो यात्रा विभिन्न पड़ावों के रूप में अनवरत जारी है।

बदलाव की यह लहर यहीं नहीं रुकी । अगस्त 2017में, SBGBT ने सोच बदलो गांव बदलो अभियान के अपने पहले प्रकल्प "ग्रीन विलेज – क्लीन विलेज" के तहत 60से भी अधिक गांवों में गांव–गांव जाकर वृक्षारोपण कर,

पर्यावरण संरक्षण की दिशा में एक मजबूत कदम बढ़ाया । इस कार्यक्रम के तहत टीम साथियों ने अलग–अलग ग्रुप में गांव–गांव जाकर लोगों को पेड़ों का महत्व बताया और सार्वजनिक स्थलों के साथ–साथ ग्राम वासियों की सुविधानुसार सुरक्षित स्थानों पर वृक्षारोपण किया गया, जहां इन पौधों को नियमित रूप से पानी उपलब्ध किया जा सके । साथ ही साथ इस कार्यक्रम के माध्यम से लोगों को स्वच्छता का संदेश भी दिया गया । सभी गांवों में लोगों ने इस कार्यक्रम में बढ़ चढ़कर भाग लिया और साफ–सफाई कर अपने गांव और गांव के रास्तों को स्वच्छ और सुंदर बनाने में योगदान दिया ।

"ग्रीन विलेज – क्लीन विलेज" कार्यक्रम की सफलता के बाद, SBGBT ने स्कूली शिक्षा को बढ़ावा देने हेतु "आओ पढ़े – आगे बढ़ें" नाम से इस अभियान का एक नया प्रकल्प शुरू किया । इस कार्यक्रम के अंतर्गत टीम ने जिले भर के 100से अधिक विद्यालयों में जाकर जीवन डायरी का वितरण किया और बच्चों को जीवन में सकारात्मक और वैज्ञानिक सोच के साथ आगे बढ़ने और सफल होकर अपनी मातृभूमि के लिए कार्य करने के लिए प्रेरित किया । टीम ने जिन–जिन विद्यालयों में यह कार्यक्रम आयोजित किया उन विद्यालयों के प्रधानाचार्यों, स्टाफ और बच्चों ने SBGBT के इन प्रयासों को दिल से सराहा ।

जन चेतना की इस श्रंखला में, SBGBT ने छात्रों में प्रतियोगी दक्षता बढ़ाने हेतु एक नया प्रकल्प "शिक्षा पाओ – ज्ञान बढ़ाओ" आरंभ किया । इस कार्यक्रम का उद्देश्य ग्रामीण प्रतिभाओं की पहचान कर तथा उन्हें तराश कर प्रतियोगी परीक्षाओं में ग्रामीण क्षेत्रों से सफलता का ग्राफ बढ़ाना है ।

इसी दौरान SBGBT ने महसूस किया कि कई ग्रामीण प्रतिभाएं अपने परिवार की आर्थिक तंगी और विषम परिस्थितियों के चलते अपने मुकाम को हासिल करने से वंचित रह जाती हैं। हर मां बाप अपने बच्चे को जयपुर, कोटा, पटना और दिल्ली जैसे महानगरों में पढ़ने अथवा प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी हेतु नहीं भेज पाते हैं। ऐसे जरूरतमंद परिवारों के बच्चों की मदद हेतु SBGBT ने एक बड़ा, साहसिक और कड़ा निर्णय लेते हुए, बाड़ी और सरमथुरा कस्बे में

"उत्थान कोचिंग संस्थान" खोले जाने का निर्णय लिया। SBGBT द्वारा भविष्य में इस कोचिंग संस्थान को गुणवत्तापूर्ण स्तरीय शिक्षण संस्थान के साथ–साथ बहुआयामी कौशल विकास संस्थान के रूप में पहचान दिलाने की कार्य–योजना है। साथ ही इस कोचिंग संस्थान के बच्चों को लाइब्रेरी की सुविधा देने की भी योजना है। वर्तमान में उत्थान कोचिंग संस्थान सरमथुरा उपखण्ड में और इसकी एक शाखा स्मार्ट विलेज धनोरा में संचालित है।

इन सबके अतिरिक्त SBGBT ने समाज के लिए आपातकाल अथवा विशेष परिस्थितियों में सहयोग को ध्यान में रखते हुए एक अत्यंत महत्वपूर्ण और मानवतावादी कदम उठाते हुए, तत्काल ब्लड उपलब्धता सुनिश्चित करने के

उद्देश्य से, एक ब्लड डोनेशन WhatsApp ग्रुप "रक्तदान – महादान" बनाया । जिसमें टीम के इच्छुक ब्लड डोनर साथियों को जोड़ा गया है । इस ग्रुप ने अपनी सक्रियता और लोगों को अपना अमूल्य रक्त, तत्काल व निःशुल्क उपलब्ध करवाए जाने की उत्तम कार्य व्यवस्था से, समाज के हर तबके में अपनी विशेष पहचान कायम की है और निस्वार्थ सेवा भाव से लोगों के दिलों में SBGBT के प्रति विश्वास को और गहरा किया है। इस ग्रुप के माध्यम से रक्तदाताओं ने, पिछले 1वर्ष में अपना अमूल्य रक्त देकर 100से भी अधिक लोगों के जीवन को बचाने का अभूतपूर्व कार्य किया है और SBGBT की इस अनोखी पहल से, समाज में एक सकारात्मक संदेश दिया है।

सोच बदलो गाँव बदलो अभियान के उपरोक्त सभी प्रकल्पों के प्रभाव से, बेहद अल्प समय (वर्षभर) में समूचे क्षेत्र में क्रांतिकारी, सकारात्मक व रचनात्मक परिवर्तन हुए हैं। शराबबंदी, जुआ बंदी, गुटखा व तंबाकू बंदी, मृत्यु भोज पर रोक, चोरी व अन्य आपराधिक गतिविधियों में कमी देखी गयी है। ग्रामीण इलाकों में "रास्तों के अतिक्रमण और पेयजल की समस्याओं" को ग्रामीणों ने अपने स्तर पर सुलझा कर अनूठी मिसाल पेश की है। युवाओं ने भी विभिन्न छोटे–छोटे रचनात्मक कार्य जैसे गाँव में रोड लाइट लगाना, पीने के पानी की व्यवस्था करना, स्वच्छता कार्यक्रमों का आयोजन करना, पुस्तकालय की स्थापना करना, प्रतिभा सम्मान कार्यक्रम आयोजित करना, सरकार व प्रशाशन से मिलकर अपने गाँव में विकास कार्यों में तेजी लाने का प्रयास करना इत्यादि गतिविधियों में बढ़ चढ़ कर रूचि दिखाना शुरू किया है। SBGBT अपने हर प्रकल्प और गतिविधियों पर अपने कोऑर्डिनेटर और मासिक समीक्षा मीटिंग के माध्यम से निगरानी रखती है।

– सम्पादक मण्डल

□□□□

सोच बदलो गाँव बदलो अभियान की आवश्यकता क्यों ...

"सोच बदलो – गांव बदलो"

एक अभियान – एक विचार

प्यारे मित्रों और साथियों, आज हमारे सामने सवाल है कि "सोच बदलो – गांव बदलो" जैसे अभियान या विचार की आवश्यकता क्यों हुई?इसका उत्तर हमें गांवों के विकास की वर्तमान स्थिति से मिलता हैय परंतु इसका आशय यह नहीं कि देश का विकास ही नहीं हुआ, विकास तो हुआ है, लेकिन, उतना नहीं जितना कि अब तक हो जाना चाहिए था। या यूं कहें कि विकास की रफ्तार बहुत ही धीमी रही है और गाँवों में तो यह गति लगभग न के बराबर है। गाँव आज भी विकास की मुख्यधारा से बहुत पीछे हैं । केंद्र सरकार और राज्य सरकारें भी ग्राम विकास को ध्यान में रखते हुए कई तरह की योजनाएं लाती हैं। प्रशासन का भी प्रयास है कि गाँवों में आधारभूत सुविधाऐं दी जाएं और गांवों का विकास हो। इन सबके बावजूद भी हमारे गाँवों की तस्वीर क्यों नहीं बदल पा रही?इसके पीछे भी कई कारण हैं, उनमें से प्रमुख कारण है : अशिक्षा एवं जन–जागरूकता का अभाव। ग्रामीण आज भी अपने अधिकारों के प्रति जागरुक नहीं है, जनसहभागिता के महत्व को नहीं समझते और न ही अपने वोट की ताकत पहचानते हैं जिसके चलते न तो वह अपना उपयुक्त जन–प्रतिनिधि चुन पाते हैं और न ही चुनाव के बाद अपनी बात उनके सामने रख पाते हैं। गांवों की पिछड़ी स्थिति का एक बड़ा कारण यह भी है कि अक्सर गाँव का पढ़ा लिखा व्यक्ति शहर को पलायन कर जाता है और अपने गाँव व अपने लोगों को भूल जाता है, वहीं दूसरी ओर गाँव के लोग अशिक्षा और आपसी मतभेदों के चलते आज भी गुटों में बटे हुए हैं, बिखरे हुए हैं, एकजुट नहीं है।

हमारा देश गाँवों का देश है। जब तक गाँवों का विकास नहीं हो जाता, तब तक हमारा देश विकसित नहीं हो सकता। बस इसी सोच पर आधारित है हमारा यह "सोच बदलो – गांव बदलो अभियान"। यह अभियान एक विचार है जिसके द्वारा एक सोच देने का प्रयास है, एक विजन देने का प्रयास है कि कैसे हम एक गांव में विकास कर सकते हैं ? कैसे हम गांव के लोगों के जीवन स्तर को बेहतर बना सकते हैं ? इसी पर निरंतर विचार–विमर्श और मंथन के लिए हमारी टीम प्रयासरत है। इस अभियान के तहत जो प्रयास किये जाने हैं, वह इस प्रकार है :

1. प्रत्येक गाँव में रजिस्टर्ड ग्राम विकास समिति का गठन किया जाये, जिसमें गाँव में निवास कर रहे सभी जाति और धर्म के लोगों को शामिल किया जाये। ग्रामस्तर की सभी समस्याओं पर विचार विमर्श, ग्राम विकास के सभी निर्णय और कार्य इस समिति के माध्यम से लिए जायें/किये जायें। ग्राम सभा पंचायत स्तर पर कार्य करती है जबकि यह समिति ग्राम स्तर पर आपसी सहयोग और सौहार्द का प्रतीक साबित होगी।
2. प्रत्येक गाँव में बुजुर्गों, पंच पटेलों के अनुभव के साथ शिक्षित, समझदार व जागरूक युवाओं की ग्राम विकास के कार्यों में भागीदारी सुनिश्चित की जाये ताकि प्रभावी ढंग से निर्णय लिये जा सकें। ग्राम विकास में प्रत्येक बच्चा, युवा, बुजुर्ग और महिला अहम भूमिका निभा सकता है, बस जरूरत है इन सभी को एक साथ आगे आने की, विकास के लिए संगठित होकर कदम बढ़ाने की, अपने प्रयासों को एकजुट करने की, अपने प्रयासों को सही दिशा देने की।
3. ग्राम विकास समिति के माध्यम से प्रत्येक गाँव की शैक्षणिक और आर्थिक स्थिति का सही आंकलन करने हेतु सर्वे किया जाये, साथ ही गाँव में क्या–क्या समस्याएं हैं उनकी पहचान की जाये और उनके संभावित समाधान के लिए चर्चा की जाये। सर्वे के परिणामों के आधार पर कार्यों की प्राथमिकतायें तय की जायें। उसके अनुसार बिजली, पानी, स्वच्छता, चौड़े व अतिक्रमणमुक्त रास्ते, विद्यालय, प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र, स्वस्थ व सौहार्दपूर्ण माहौल, बच्चों को अच्छे संस्कार व बेहतर भविष्य देने व गाँव के पर्यावरण के विकास के लिए कार्य शुरू जायें। इसके लिए सरकारी योजनाओं और ग्रामीणों के आपसी सहयोग से कार्य किए जायें।
4. प्रत्येक गाँव द्वारा अपने गाँव की समस्याओं का मिलजुल कर समाधान निकालने की कोशिश की जाये। जो परेशानियां सरकारी योजनाओं या जन–प्रतिनिधियों के माध्यम से हल हो सकती हैं, उसके लिए सामूहिक रूप से

संगठित होकर प्रयास किये जायें, अपनी बात जन–प्रतिनिधियों के माध्यम से सरकार के समक्ष रखी जाये। ग्राम विकास में सभी की अलग अलग भूमिका तय की जायें क्योंकि जब तक जिम्मेदारियां तय नहीं होंगी, कार्यों की परिणिति अच्छी नहीं होगी। ग्राम विकास समिति के माध्यम से गाँव में उपलब्ध सरकारी संस्थाओं और सरकारी कार्यों की समुचित निगरानी की जाए। साथ ही ग्राम विकास हेतु सरकार द्वारा उपलब्ध फण्ड की समुचित जानकारी व उसके उपयोग पर निगरानी रखी जाये।

5. ग्रामीणों द्वारा शिक्षा पर विशेष रूप से जोर दिया जाये क्योंकि शिक्षित होने पर बहुत सारी समस्यायें स्वतः ही हल हो जायेंगी। इसके लिए ग्राम स्तर पर कोचिंग शुरू की जाए और विद्यालयों का समय समय पर निरीक्षण किया जाए क्योंकि 'शिक्षा की गुणवत्ता' ही विकास का आधार है।
6. प्रत्येक गाँव में हर वर्ष बच्चों को प्रोत्साहित करने के लिए प्रतिभा सम्मान समारोह आयोजित किए जायें तथा बच्चों का मार्गदर्शन किया जाये। बाल संस्कार केंद्र और पुस्तकालय की व्यवस्था प्रत्येक गाँव में सुनिश्चित की जाय। यह स्वीकार्य तथ्य है कि जब गाँव के बच्चे आगे बढ़ेगें तभी गाँव का सर्वांगीण विकास सुनिश्चित हो सकेगा।
7. पर्यावरण किसी भी गांव की सबसे बड़ी धरोहर होती है। अतः पर्यावरण सुरक्षा गाँव के लिए अनिवार्य है क्योंकि जीवन की बहुत सी आवश्यकताएँ पेड़ों के माध्यम से ही पूरी हो सकती हैं। अतः प्रत्येक गांव में अधिक से अधिक वृक्षारोपण किया जाए। पर्यावरण संरक्षण व संवर्धन और जल संरक्षण हेतु प्रयास किए जायेंद्य इसको प्रोत्साहन देने के लिए कई तरह के कार्यक्रम आयोजित किए जायें। बच्चों, महिलाओं व युवाओं को पर्यावरण के महत्व के बारे में जागरूक किया जाये ।
8. स्वच्छता जीवन का अभिन्न अंग है। स्वच्छ जीवन ही, स्वस्थ जीवन को जन्म देता है। अतः गांव को स्वच्छ रखने एवं सुन्दर बनाने को प्रत्येक व्यक्ति अपनी नैतिक जिम्मेदारी समझेय इसके लिए समय–समय पर स्वच्छता कार्यक्रम आयोजित किए जाएं, आम सहमति से रास्तों से अतिक्रमण हटाए जाएं तथा लोगों में स्वच्छता के प्रति जागरूकता पैदा की जाये।
9. सामाजिक समरसता और आपसी सहयोग, विकास की महत्वपूर्ण आवश्यकता है अतः आपसी वाद–विवाद ग्राम स्तर पर ही निपटाए जाएं और पारस्परिक सौहार्द को बढ़ावा दिया जाए। बच्चों में मानवीय मूल्यों का विकास हो, उनमें समाज और राष्ट्र के प्रति कर्तव्य परायणता का भाव पैदा हो जोकि मानव–जीवन की आधार है, इसके लिए बच्चों को अच्छे संस्कार दिये जायें और अच्छी शिक्षा को बढ़ावा दिया जाए।
10. इन सबके साथ–साथ यह अभियान यह सोच देने का प्रयास करता है कि आप सभी अपने अपने गांव के विकास के लिए मिल जुलकर प्रयास करें, गांव को एक परिवार की तरह मानें, उसे किसी जाति या धर्म की सीमाओं में न बांधें द्य हमें आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि जैसे ही आप एकजुट होंगे, अपने अधिकारों को जानेंगे, अपनी ताकत को पहचानेंगे, आपके जन–प्रतिनिधि, प्रशासन आपकी बात को सुनेंगे, आपकी मांगों को मानेंगे।

यह विचारणीय है कि बुजुर्गों का अनुभव, प्रबुद्धजनों का मार्गदर्शन, युवाओं व बच्चों की असीमित ऊर्जा और माताओं–बहनों का सहयोग यदि यह सब एक हो जाये, तो आपके गांव में क्या क्या बदलाव नहीं लाया जा सकता द्य बहुत कुछ बदल सकता है, आपका भी गांव स्वच्छ और साफ–सुथरा हो सकता है, स्वस्थ हो सकता है, अतिक्रमण मुक्त हो सकता है, शिक्षा में आगे आ सकता है, हरा–भरा हो सकता है, सुविधाओं से संपन्न हो सकता है, खुशहाल बन सकता है। बस "एक ईमानदार कोशिश करके तो देखो, निष्काम भाव व त्याग की भावना से काम करके तो देखो, सकारात्मकता के साथ प्रयास करके तो देखो, आपके गाँव की तस्वीर कैसे नहीं बदलती है"। यह हमारा विश्वास है कि जब आप स्मार्ट होंगे, जागरुक होंगे, साथ चलेंगे, सकारात्मक व सहयोगात्मक होंगे, आपसी समन्वय व त्याग की भावना के साथ उठ खड़े होंगे, तो आपका गांव भी स्मार्ट विलेज बन सकता है और फिर आपका देश भी सही मायनों में स्मार्ट और विकसित बन सकता है। जय हिन्द।

– देवेंद्र सिंह, धनेरा
SBGBT कार्यकर्ता

□□□□

अभियान का जनमानस पर असर

सोच बदलो गाँव बदलो अभियान ने अपने एक वर्ष के छोटे से सफर में जनमानस पर व्यापक प्रभाव डाला है। यह अभियान अपने उद्धेश्यों में काफी हद तक सफल रहा है और जनमानस की सोच में क्रांतिकारी परिवर्तन लाया है।

दि. 21 मई 2017 को जन्मी टीम (SBGBT) के अब तक के सफर व कार्यों का संक्षिप्त विवरण :

1. SBGBT ने युवा पीढ़ी व नौजवानों को अपने गांव के प्रति प्रेम व सहयोग के लिए आकर्षित किया है। जिससे गाँवों में एक जिम्मेदारी का माहौल बना है, आज युवा गांव के विकास को अपनी नैतिक जिम्मेदारी मान रहे हैं और आगे आकर अपने गांव के विकास में भागीदारी निभा रहे हैं।
2. ''सोच बदलो–गांव बदलो यात्रा'' के माध्यम से लोगो में भाईचारा, एकता व एक दूसरे के सहयोग से गांव को विकसित करने पर जोर दिया गया जिसके अच्छे परिणाम देखने को मिल रहे हैं। आज 100से भी अधिक गांवों में SBGBT के कार्यों की चर्चा है और लोग आपसी भाईचारे और सहयोग के साथ ग्रामीण विकास हेतु आगे आ रहे हैं, एक साथ बैठकर अपने गांव की समस्याओं व उनके संभावित समाधान पर चर्चा कर रहे हैं ।
3. SBGBT ने अपने समाज के बुद्धिजीवी युवा वर्ग को जोड़ा और एक दूसरे के प्रति सम्मान बढ़ाया है। हमें गर्व है कि समाज के सभी कर्मचारीगण अपने अपने गांव के लिए तन–मन–धन से सेवा कर रहे हैं। यही ईश्वर का आशीर्वाद व तीर्थ है।
4. प्रतीकात्मक रूप में लोगों को पर्यावरण व जल संरक्षण के प्रति जागरूक करने के लिए एक वृक्षारोपण अभियान ''ग्रीन विलेज–क्लीन विलेज'' चलाया गया। जिसे समाज के हर वर्ग द्वारा सराहा गया और लोग पर्यावरण संरक्षण में बढ़ चढ़ कर भाग लेने लगे हैं।
5. बच्चे हमारे गांव और देश का भविष्य हैं, इन्हें मजबूत करने से ही हमारा समाज मजबूत होगा। बच्चों को शिक्षा के प्रति अभिप्रेरणा और अच्छे संस्कार देने के उद्देश्य से SBGBT ने ''आओ पढ़ें–आगे बढ़ें'' कार्यक्रम की शुरुआत की जिसके तहत टीम सदस्यों द्वारा विभिन्न स्कूलों में जाकर, बच्चों को दुर्व्यसनों से दूर रहने/अपने लक्ष्य के प्रति जागरूक करने के साथ–साथ, एक जीवन डायरी का वितरण किया गया। अब तक 20हजार से भी अधिक बच्चो ने हमारे इस कार्यक्रम में हिस्सेदारी निभाई है। सभी विद्यालयों के द्वारा इस कार्यक्रम की सराहना की गयी है।
6. SBGBT की जन चेतना यात्रा का जनमानस पर इतना प्रभाव हुआ कि गांव गांव में लोग बदलाव के लिए उठ खड़े हुए और निर्णायक सभाएं कीं द्य अपने अपने गांव से नशा मुक्ति की दिशा में ठोस कदम उठाए। कई गांवों में शराबबंदी, जुआ बंदी और कुछेक गांव में तो गुटखा और तंबाकू उत्पादों पर भी गांव वालों के द्वारा रोक लगाई गई। महिलाओं ने भी कई गांवों में आगे आकर शराब बंदी के खिलाफ अपनी आवाज उठाई और गांव से अवैध शराब बिक्री की दुकानों को हटाने के लिए एकजुटता दिखाई। यह समाज में व्यसन मुक्ति की ओर एक अच्छा कदम है। हालांकि इस दिशा में शत प्रतिशत परिणाम हासिल करना अभी बाकी है ।
7. सोच बदलो–गांव बदलो यात्रा के माध्यम से लोगों को स्वच्छता के महत्व को भी समझाया गया साथ ही साथ गांव के संकरे रास्तों से अतिक्रमण हटाने के लिए लोगों से अपनी संकीर्ण मानसिकता को छोड़ने का निवेदन किया गया जिसके परिणाम स्वरुप कई गांव के लोगों ने SBGBT के विचारों से प्रभावित होकर अपनी सोच बदली और तुरंत प्रभाव से अपने गांव में मीटिंग आयोजित करके गांव के संकरे रास्तों से अतिक्रमण हटा कर उन्हें चौड़ा किया और गांव में बदलाव की नींव रखी। खासतौर पर युवाओं ने ऐसे कार्यक्रमों में बढ़ चढ़कर भाग

लिया। स्मार्ट विलेज धनौरा, बिलौनी, धनेरा, कांसौटी खेड़ा, सिंगोरई, कुहावनी, हाँसई, खरगापुरा, कांकरेट, कोयला, उमरेह और चिलाचौंद जैसे कई गाँवों ने रास्तों को चौड़ा कर अपने गांव की सुंदरता को तो बढाया साथ ही साथ अपने गांव के लोगों की बड़ी सोच को भी दर्शाया। इससे आसपास के गांवों को भी प्रेरणा मिली और यह कार्यक्रम धीरे–धीरे कई अन्य गांवों में युवाओं द्वारा अनवरत जारी है।

8- SBGBT की एक विशेष उपलब्धि के तौर पर कहा जाए तो अतिशयोक्ति नहीं होगी टीम ने एक ऐसे गांव (रघुवीर पुरा) का दौरा किया जहां आजादी के समय से आज तक कोई मुख्य रास्ता या सड़क नहीं थी टीम सदस्यों द्वारा गांव के लोगों को समझाने का यह असर हुआ कि रघुवीर पुरा गांव के लोगों में ऐसा जोश जागृत हुआ कि वह अपनी छोटी और दकियानूसी सोच को त्याग कर गांव के भले के लिए सहर्ष उठ खड़े हुए और परिणाम आज सभी के सामने है। रघुवीरपुरा जैसा गांव भी आज सड़क मार्ग से जुड़ गया है, SBGBT के प्रयासों से विधायक महोदय ने इसे पक्की डामर सड़क में बदलने के आश्वासन के साथ स्वीकृति भी दे दी है ।

SBGBT ने यात्रा के बाद से एक नियमित समय अंतराल पर गांव गांव जाकर लोगों की समस्याओं को समझा और उनके निराकरण के लिए उपाय सुझाए जिसके अच्छे परिणाम देखने को मिले। गांव खिन्नोट के युवाओं के भागीरथी प्रयास से गांव की प्रमुख समस्या "पेयजल की समस्या" को आपसी सहयोग के जरिए बोर करवाकर पानी की सप्लाई हेतु पाईप लाईन बिछाकर सुलझाया । ऐसा ही एक उदाहरण गुढ़ा गांव के लोगों ने पेश किया है। उन्होंने भी सोच बदलो गांव बदलो टीम की विचारधारा से प्रभावित होकर गांव में पानी की समस्या को सुलझाया है आपसी योगदान से गांव में एक नया बोर करवाया है और पानी की सप्लाई हेतु पाईप लाइन भी बिछाई गई है ।

सोच बदलो गाँव बदलो टीम अपने लक्ष्यों के प्रति वचनवद्ध है और अनवरत ग्रामीण विकास हेतु लोगों में चेतना जाग्रत करने और युवा ऊर्जा को सकारात्मक व रचनात्मक कार्यों के प्रति अभिप्रेरित हेतु प्रयासरत है।

मानवता के प्रति सच्ची संवेदना ही खुशियां ला सकती है !

जय हिंद

लाखनसिंह धनौरा एवं

दामोदर भवनपुरा

SBGBT कार्यकर्ता

डॉ. मीणा के अभियान से शराब बंदी की लहर

कुरीतियों पर रोक के लिए मंथन

□□□□

बदलाव की कहानी — लोगों की जुबानी

विकास की नयी इबारत — स्मार्ट विलेज 'धनौरा'

देश का मॉडल विलेज बना 'स्मार्ट विलेज धनौरा'

विज्ञान भवन, नई दिल्ली में 16 जुलाई 2018 को आयोजित Y4D (यूथ फॉर डेवलपमेंट) फाउंडेशन के न्यू इंडिया कॉन्क्लेव कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि शामिल हुए माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने स्मार्ट विलेज धनौरा के ग्रामवासियों के ग्रामीण विकास के प्रयासों को "आदर्श ग्राम सम्मान" श्रेणी में, धनौरा गांव को देश के मॉडल विलेज का खिताब देकर प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया । आइए एक नजर डालते हैं राजस्थान के धौलपुर जिले के इस छोटे से गांव, धनौरा के स्मार्ट विलेज बनने और राष्ट्रीय स्तर पर पहचान कायम करने के अब तक के सफर पर :

धनौरा गांव, बाड़ी (धौलपुर, राजस्थान) कस्बे से 5 किमी की दूरी पर उत्तर पूर्व में एक छोटा सा गांव है । धनौरा गांव ने पिछले 4–5 वर्षों में विकास की नई गाथा गढ़ी है । जिससे यह गाँव देश का पहला 'स्मार्ट गाँव' बनकर उभरा है। स्मार्ट विलेज 'धनौरा' डॉ. सत्यपाल सिंह के विजन, ग्रामीणों की सक्रिय जन सहभागिता, सरकार व जिला प्रशासन के सहयोग और EcoNeeds फाउंडेशन प्रेसिडेंट प्रोफेसर प्रियानंद अगड़े के निस्वार्थ प्रयासों का परिणाम है।

अब तक के प्रयासों से हर घर में टॉयलेट्स (822–टॉयलेट्), सीवरेज लाइन, सीवरेज वाटर ट्रीटमेंट प्लांट, विद्यालय में बच्चों के लिए आधुनिक शौचालय और सार्वजनिक स्थान पर शौचालय निर्माण का काम पूरा हो चुका है । जिला प्रशासन द्वारा धनौरा को जिले की पहली ODF (Open Defecation Free) पंचायत घोषित किया गया है । गांव के मुख्य रास्ते के साथ–साथ इसे जोड़ने वाले विभिन्न आंतरिक रास्तों (गलियों) से अतिक्रमण हटा कर इन्हें 8–10फीट चौड़ाई की जगह अब 20–25फीट चौड़ा किया गया है और इनमें लगभग 2–3 किलोमीटर लंबी, उच्च कोटि की सीमेंटेड सड़कें बनाई गई हैं। लोगों के आपसी सहयोग व त्याग की बदौलत गांव का हर रास्ता अतिक्रमण मुक्त है। गाँव में गौरव पथ निर्माण करने के लिए 10 से 12 फीट चौड़े रास्ते को 20 से 25फीट चौड़ा किया गया है । राज्य सरकार

द्वारा इस आधुनिक गौरव पथ का निर्माण किया गया है। गौरव पथ के निर्माण के लिए गांव के लोगों द्वारा स्वेच्छा से अपनी जमीन देना, सामाजिक जन चेतना और विकास में जन सहभागिता का सबसे बड़ा उदाहरण है । जहां एक ओर एक–एक इंच जमीन के लिए लोगों में लड़ाई झगड़े हो रहे हैं, वहीं दूसरी ओर धनौरा गांव वासियों ने हंसते–हंसते कई फीट जमीन गांव के विकास के लिए दे दी । गांव की गलियों में, घरों की बाहरी दीवारों पर बने सुंदर और प्रेरणादायक भित्ति चित्र, स्लोगन और प्रेरक पंक्तियां गांव की सुंदरता बढ़ाने के साथ–साथ गांव के बच्चों और युवाओं के लिए प्रेरणा व सकारात्मक माहौल को जन्म देते हैं। पूरा गांव एक आर्ट गैलरी में तब्दील किया गया है।

गांव के सभी परिवारों से विशेषकर सरकारी कर्मचारियों के नियमित आर्थिक योगदान से गांव में सामुदायिक भवन और पुस्तकालय का निर्माण पूरा कर लिया गया है और प्रवेश द्वार का निर्माण कार्य प्रगति पर है। गाँव में 200 से 300लोगों के बैठने की क्षमता वाला सामुदायिक भवन, स्मार्ट विलेज धनौरा की खूबसूरती में चार चांद लगा रहा है । गांव के बच्चों को कंप्यूटर की शिक्षा देने की व्यवस्था भी की गई है। गांव व आसपास के होनहार बच्चों को गांव में ही स्तरीय प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के लिए "उत्थान कोचिंग संस्थान" की शुरुआत हो चुकी है। आओ पढ़ें–आगे बढ़ें, शिक्षा पाओ–ज्ञान बढ़ाओ इत्यादि कार्यक्रमों की शुरुआत स्मार्ट विलेज धनौरा से की गई है ।

ग्रामीणों द्वारा शादी–ब्याह जैसे अन्य खुशी के आयोजनों के अवसर पर, गांव के ही युवक युवतियों के सरकारी नौकरी पाने अथवा नया उद्यम शुरू करने की खुशी में, गांव के विकास के लिए एक निश्चित राशि 'ग्राम विकास समिति' को दी जाती है । गांव में किसी व्यक्ति की मृत्यु पर मृत्युभोज के बजाय कोई भी रचनात्मक कार्य करने की व्यवस्था भी शुरू की गई है। गांव की श्मशान भूमि पर स्वजन स्मृति में वृक्षारोपण किया जाता है।

जल संरक्षण और संवर्धन के लिए अतिक्रमण हटा कर एक ढाई किलो मीटर लंबी मानव निर्मित नहर का निर्माण और

8परकोलेशन तालाबों का काम पूरा हो चुका है। एक अनुमान के अनुसार इस व्यवस्था से गांव की भूमि में प्रतिवर्ष 97.49मिलियन लीटर पानी रिचार्ज होता है। प्रत्येक वर्ष वृक्षारोपण का कार्य नियमित रूप से किया जा रहा है। 'ग्रीन विलेज – क्लीन विलेज' का नारा स्मार्ट विलेज धनौरा की पहचान बन चुका है।

गांव में सार्वजनिक स्थानों पर सोलर लाइट लगाने का काम भी पूरा हो चुका है । जिससे रात के समय में पूरा गांव दूधिया रोशनी से जगमगा उठता है । इससे अंधेरे के कारण महिलाओं और बच्चों को होने वाली परेशानी से भी पूरी तरह निजात मिल चुकी है । वर्तमान में, गांव में कोई पुलिस केस दर्ज न होने के कारण, जिला प्रशासन द्वारा धनौरा गांव को "क्राइम फ्री विलेज" घोषित किया गया है। गांव में पूर्ण शराबबंदी व नशाखोरी के चलते गांव को 'अल्कोहल फ्री गांव' भी घोषित किया गया है।

अभी इस गांव में इन्फार्मेशन सेंटर और मेडिटेशन सेंटर का निर्माण कार्य जारी है। आने वाले समय में स्किल डेवलपमेंट सेंटर, ग्रामीण विकास के लिए ट्रेनिंग सेंटर, वाई–फाई फैसिलिटी, CCTV सर्विलांस, वर्चुअल क्लास रूम, e-learning, e-library और गांव में डेयरी प्लांट जैसी कई योजनाएं मूर्त रूप लेना बाकी हैं। बच्चों के शारीरिक, भावनात्मक और मानसिक विकास के लिए खेल मैदान का निर्माण भी होना है।

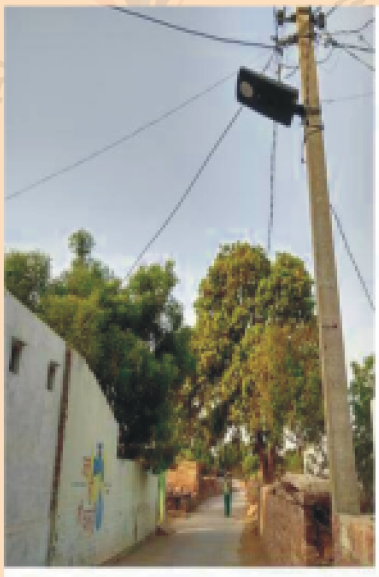

हाल ही में राज्य सरकार द्वारा धनौरा ग्राम पंचायत को राज्य स्तरीय पंचायत अवार्ड से भी नवाजा गया है और साथ ही राष्ट्रीय स्तर पर जबलपुर में हुए कार्यक्रम में भी धनौरा गांव को शामिल किया गया था। ग्रामीण विकास की मुहिम को दूसरे गांवों तक पहुंचाने के लिए और लोगों को प्रेरित करने के लिए ''सोच बदलो गांव बदलो अभियान'' की शुरुआत की गई। SBGBT (सोच बदलो गांव बदलो टीम) का मानना है कि वैचारिक जागरूकता ही किसी भी समाज के विकास का आधार होती है। हमारा देश गांवों

का देश है, गांवों के विकास से ही हमारा देश सही मायने में आगे बढ़ सकेगा। इस टीम द्वारा अतिक्रमण मुक्ति, शराब मुक्ति, बच्चों को अच्छे संस्कार देने और युवाओं का मार्गदर्शन करने, महिला सशक्तिकरण, किसानों को सरकारी योजनाओं का समुचित लाभ दिलाने तथा ग्रामीण समस्याओं का जन सहयोग द्वारा समाधान करने जैसे कई कार्य किए जा रहे हैं। इन्हीं प्रयासों के कारण सोच बदलो गांव बदलो टीम के कार्य आज एक अभियान का रुप ले चुके हैं। इस अभियान के माध्यम से लोगों से अपने गांव, समाज व राष्ट्र निर्माण में अपनी भागीदारी निभाने की अपील की जा रही है।

"रख हौंसला बुलंद वो मंजर भी आयेगा
प्यासे के पास चलकर समंदर भी आयेगा..!
थक हार कर ना बैठ, ऐ मंजिल के मुसाफिर
मंजिल भी मिलेगी और
जीने का मजा भी आयेगा...!!"

सादर
धनौरा ग्राम विकास समिति

अथक व भागीरथी प्रयास – धनेरा व खिन्नौट

गाँव में 2 किमी लम्बी पाइप लाइन बिछाकर पहुंचाया पानी – धनेरा

सूर्यवंशी राजा दिलीप के पुत्र भागीरथ के बारे में तो आप सभी जानते हैं, जो अपने पूर्वजों के उद्धार के लिए घोर तपस्या करके माँ गंगा नदी को धरती पर लेकर आये थे। लेकिन आज आप आधुनिक युग के ऐसे भागीरथों के बारे में जानेंगे, जिन्होंने निजी स्तर पर कठिन तपस्या और अथक प्रयासों से, वर्षों से जल की समस्या से पीड़ित अपने गाँवों में पानी पहुंचाया।

सरमथुरा तहसील के उत्तर में 3किमी दूरी पर गाँव खिन्नौट और करीब 10किमी दूरी पर गाँव धनेरा बसा हुआ है। परिस्थिति और वातावरण की दृष्टि से देखा जाए तो यहाँ का जनजीवन पूर्णतः पिछड़ा और अभाव ग्रस्त है। खेती और खनन कार्य ही यहाँ के लोगों की आजीविका के मुख्य साधन हैं। निरंतर अल्पवृष्टि और सूखे के चलते जलसंकट गहरा गया है, जिसके चलते यहाँ खेती करना असंभव और व्यर्थ प्रतीत होता है। तमाम असुविधा और उपेक्षाओं का शिकार इस क्षेत्र का किसान गरीबी, कर्जदारी और बेरोजगारी की मार से बुरी तरह पीडित और हताश है। अशिक्षा और भोलेपन के चलते यहाँ के खेतिहर ने किस तरह सूदखोरों की बेहिसाब ब्याज चुकाई है, ये उसके पिचके गाल, उभरते हाड़ और सिकुडते बदन से साफ झलकता है।

बढ़ती शहरीकरण की नीति भी इस क्षेत्र के विकास में बाधक बनी हुई है। ज्यादातर शिक्षित और सक्षम लोग गाँवों को छोड़कर शहरों में बस गए हैं, बाकी बचे अनपढ और लाचार व्यक्ति गाँव में ही निवास करते हैं। अतः ऐसी स्थिति में कोई भी परिवर्तन असंभव सा प्रतीत होता है। जागरूकता और जनसहभागिता के अभाव में आज भी कई गाँव और पुरा(ढाणी) ऐसे हैं, जो अब भी सडक और बिजली से अछूते हैं ।

तत्कालीन परिस्थितियों के बीच धनेरा गाँव भी ऐसी तमाम समस्याओं से जूझ रहा था। गाँव की महिलाओं को 2किमी नीचे पहाड़ी की तलहटी से पानी भरे बर्तन लेकर ऊपर चढना बेहद कष्टदायी और कठिन कार्य था द्य अपने गाँव की ऐसी दुर्दशा और परिस्थितियों से आहत होकर शहर में निजी और सरकारी नौकरी करने वाले गाँव के ही कर्मठ और जुझारू लाडले देवेन्द्र और मुकेश ने मिलकर गंभीरता से इस समस्या पर विचार किया और गाँव की महिलाओं के दर्द को समझा तथा उसी दिन से उन्होंने अपने गाँव की माली हालत को सुधारने का संकल्प लेकर प्रयास शुरु कर दिए। प्रथम प्रयास में गाँव के लोगों को एकत्र कर मीटिंग का आयोजन किया गया। मीटिंग के तहत गाँव की सभी समस्याओं को बारी–बारी से रखा गया।

इसी बीच एक बुजुर्ग माता ने गंभीर और भावुक स्वर में कहा "बेटा, हमाए मूंड के सग बार दौ किलोमीटर दूर घटीआ नीचे ते पानी लाएबे में उडि गए! हमनि तौ भौत परेशानी झेल लई, अगर हमाए जीअति, जे समस्या मिटि जाए

तौ जा गाँव को भलो है जागौ।"

ऐसा कहते हुए बूढ़ी माँ का गला रुंध गया, आँखों में आँसू उतर आए।

हृदय को द्रवित कर देने वाले इन शब्दों और पानी की विकट समस्या ने सबका ध्यान आकर्षित किया। मीटिंग के दौरान गाँव में शराब, जुआ, धूम्रपान, गुटखा और तंबाकू आदि विषयों पर भी चर्चा हुई और ये निर्णय लिया, कि आज से गाँव का कोई भी व्यक्ति न तो इन व्यसनों का सेवन करेगा और न ही कोई गाँव में तम्बाकू उत्पादों को बेचेगा।

मीटिंग के बिछुडते ही गाँव के कुछ निराशावादी लोग देहाती में कहने लगे : "कछू ना होत जे मीटिंगन ते! हमनि तौ खूब देखि लई, कोऊ ना मानतु !

ऐसा सुनकर गाँव के युवा कर्मवीर देवेन्द्र और मुकेश ने अच्छी तरह भाँप लिया, कि लोगों के मन में निराशा और नकारात्मकता किस कदर घर किए हुए है। मीटिंग के अंत में तय हुआ, कि पानी की समस्या के समाधान को प्राथमिकता दी जाए। सरकारी भरोसा टूटने के बाद गाँव के लोगों ने निजी स्तर पर पानी की समस्या के समाधान खोजने शुरू कर दिए। लोगों की आर्थिक स्थिति और क्षमता के अनुसार पूरे गाँव से करीब छह लाख रुपए की राशि एकत्रित की गयी। उसके बाद ग्रामीणों ने अपनी योजना पर कार्य प्रारंभ किया। सर्वप्रथम गाँव से 2 किमी दूर पहाड़ी की तलहटी में एक बोर खुदवाया गया और उम्मीद के मुताबिक बोर में पानी भी अच्छा हो गया । ग्रामीणों द्वारा पानी को गाँव तक पहुंचाने के लिए 2 किमी लम्बी भूमिगत पाइप लाइन बिछाई गई। पानी एकत्र करने के लिए सीमेंट और कंक्रीट की 25000 लीटर भराव क्षमता वाली टंकी बनाई गयी। टंकी से पानी को घर–घर तक पहुंचाने के लिए दूसरी पाइप लाइन बिछाकर नलों से जोड दिया गया। देखने और सुनने में यह कार्य जितना आसान और सहज लगता है, उतना ही यह सफर गाँव के लोगों के लिए बेहद मुश्किल और परेशानियों भरा रहा। लेकिन अंत में ग्रामीणों के हौसले को विजय मिली ।

इस अकल्पनीय और अपार सफलता के पश्चात गाँव में खुशी की लहर दौड पडी। इस संघर्ष के पश्चात लोगों में जबरदस्त उत्साह और उल्लास का संचार हुआ। 2किमी दूर से पानी लाने की बर्षों की समस्या का गाँव के भागीरथों ने अल्प समय में ही अपनी सूझबूझ, अथक व सार्थक प्रयासों और बिना किसी सरकारी मदद के इस विकट समस्या का निवारण कर दिया। अब लोगों को घर बैठे ही पानी की आपूर्ति होने लगी, उनके लिए इससे सुखद और सुकून भरा अहसास भला और क्या हो सकता था। इस क्षेत्र में एकमात्र धनेरा गाँव ही ऐसा था, जिसने सर्वप्रथम जन जागरुकता और जनसहभागिता की मिशाल कायम करते हुए ऐतिहासिक और भागीरथी प्रयासों द्वारा सोच बदलो गांव बदलो टीम के विचारों को साकार रूप दिया है।

धनेरा गाँव के लोगों द्वारा किए गए अन्य सकारात्मक कार्य जो प्रासंगिक और प्रेरणात्मक हैं, वह निम्नलिखित हैं:– धनेरा ग्राम विकास समिति का गठन।

गाँव में स्वच्छता और सफाई बनाए रखना।

गाँव में नशाखोरी और मद्यपान पर पूर्णतः प्रतिबंध।

गाँव में गुटखा, बीडी सिगरेट, तंबाकू आदि प्राणघातक सामग्री बेचने पर पूर्णतः प्रतिबंध।

गाँव के प्रतिभाशाली बच्चों को हर बर्ष सम्मान समारोह का आयोजन करके पुरस्कृत कर अभिप्रेरित करना।

गाँव में स्वरोजगार पैदा करने तथा महँगाई से बचने के लिए किराने की दुकानें स्थापित करना!

गाँव के लोगों की जागरुकता और सक्रियता के फलस्वरूप गाँव का उच्च प्राथमिक विद्यालय अब माध्यमिक विद्यालय में क्रमोन्नत।

धनेरा गाँव ने ये साबित करके दिखाया है, कि अगर इंसान के मन में सच्ची लगन और विश्वास हो, तो कोई भी कार्य मुश्किल या असंभव नहीं है। इस गाँव में एक विशेष और अनौखी बात भी देखने को मिलती है, कि "गाँव के हर व्यक्ति ने अपने घर की मुख्य दीवार पर बोर्ड टांग रखे हैं जिन पर गाँव के प्रति समर्पण और निष्ठा से पोषित उनके मौलिक विचार अंकित हैं। जो हर आगंतुक को बेहद प्रभावित और प्रेरित करते हैं।" वाकई यह गाँव और इस गाँव के लोग धन्य हैं, अद्वितीय हैं।

खिन्नौट गाँव के भागीरथी प्रयास

ऐसी ही एक मिसाल पेश करता है, गाँव खिन्नोट। यह गाँव देश की आजादी के बाद से अब तक पेयजल की समस्या से त्रस्त था। वर्षो से इसगाँव की महिलाएं 2 से3किमी पैदल चलकर आसपास के गाँवों से पानी भरकर लाती थीं। कई बार ऐसा भी देखने में आता कि जब इस गाँव की महिलाएं दूसरे गाँव में पानी लेने जातीं तो वहाँ की औरतें उन्हें बेवजह ताने मारतीं। ऐसे हालात में महिलाओं के लिए पानी भरना बड़ा ही असहनीय और दुष्कर हो गया था। कमबख्त पानी क्या हुआ, अभिशाप हो गया! ज्यादातर महिलाओं का सारा दिन इसी जद – ओ – जहद में गुजर जाता था। जिसके चलते घर के दूसरे काम न चाहते हुए भी छूट जाते थे। एक दिन इस गाँव में भी सोच बदलो–गाँव बदलो अभियान की आँधी ने दस्तक दी। तत्पश्चात गाँव में ऐसे अकल्पनीय परिवर्तन हुए जो असंभव से लगते थे।

धौलपुर

अच्छी खबर | ग्रामीणों ने एकजुट होकर नदी के किनारे 400 फीट गहराई में किया बोर

चंदे के 4 लाख रुपए से 3 किमी लाइन बिछाकर खिन्नौट तक पहुंचाया पानी

गांव के युवा ही बने इंजीनियर

सोच बदलो गांव बदलो टीम की विचारधारा से प्रेरित होकर खिन्नौट गाँव के युवाओं ने ग्रामीण युवा विकास संगठन के रूप में एक टीम का गठन किया, जिसने सर्वप्रथम अपने गाँव को जुआ और शराबमुक्त बनाने का सफल प्रयास किया। आज गाँव में किसी भी तरह का जुआ नहीं होता और न ही कोई शराब का सेवन करता है। SBGBT की प्रेरणा से युवाओं ने अपने गाँव में भी "ग्रीन विलेज – क्लीन विलेज" अभियान के तहत साफ–सफाई के साथ वृक्षारोपण भी किया। युवाओं द्वारा गाँव से अतिक्रमण हटाकर सँकरे रास्तों को चौडा किया गया। यही नहीं, गाँव के प्रतिभाशाली बच्चों को 15अगस्त के अवसर पर पुरस्कृत कर प्रोत्साहित

करना भी इन युवाओं की सराहनीय पहल थी।

अपने गाँव में सकारात्मक सोच और बेहतर बदलाव लाने के लिए युवाओं ने सोच बदलो गाँव बदलो टीम को गाँव में आने के लिए आमंत्रित किया। तयशुदा तारीख को खिन्नौट की धरती पर ैठळठज का आगमन हुआ। टीम ने अपने विचारों के माध्यम से गाँव के लोगों में जबरदस्त ऊर्जा और उत्साह का संचार किया, लेकिन महिलाओं के मायूस चेहरों पर निराशा साफ झलक रही थी। उनकी आँखों में भरा पानी, गाँव में पानी की शून्यता का संकेत कर रहा था। जब टीम के प्रणेता सत्यपाल जी लोगों को संबोधित कर रहे थे, तभी कुछ महिलाओं ने कातर भाव से निवेदन किया "आप कुछ भी करके हमारे गाँव की पानी की समस्या को खत्म करवा दो, आप सबकी बड़ी मेहरबानी होगी।" "मेहरबानी तो ईश्वर की चाहिए, हम सभी तो निमित्त मात्र हैं" टीम संयोजक डॉ. सत्यपाल जी ने ऐसे सकारात्मक विचारों के साथ उसी समय गाँव की महिलाओं को भरोसा दिलाया कि हम छह महीने के अंदर आपके गाँव की पेयजल समस्या का समाधान करने का हरसंभव प्रयास करेंगे।

इस मीटिंग ने गाँव के युवाओं में एक नयी चेतना को जन्म दिया। तत्पश्चात SBGBT और गाँव के युवाओं के उत्साही माहौल ने धनेरा गाँव की तर्ज पर गाँव खिन्नौट में पानी लाने की योजना पर गंभीरता से विचार करना शुरू किया । इस मुहिम में गाँव के हर व्यक्ति ने बढ–चढकर कर सहयोग किया। युवाओं ने गाँव के सभी लोगों से लगभग 5–7 लाख रुपए तक का चंदा एकत्र किया। आवश्यकतानुसार SBGBT के सदस्यों ने भी चंदा देकर आंशिक सहयोग प्रदान किया। अब कार्य ने रफ्तार पकड़ ली थी। बीच–बीच में इन युवाओं को प्रोत्साहित करने हेतु SBGBT के कुछ कार्यकर्ता जायजा लेने गाँव में निरंतर आते रहे। तत्पश्चात कार्य को आगे बढाते हुए युवाओं ने गाँव के पीछे करीब 3किमी दूर से गुजरने वाली नदी के मुहाने पर बोरिंग करवा कर वहाँ से भूमिगत पाइप लाइन को गाँव में दो विशाल टंकियों से जोड़कर पानी की समस्या का समाधान खोज लिया गया। इस अथक परिश्रम और प्रयत्नों के बाद गाँव में पानी देखकर लोगों की आँखों में खुशी से पानी छलक उठा ! खिन्नौट गाँव वासियों ने भागीरथी प्रयासों से नया इतिहास लिख दिया। यह कार्य महज 3 से 4 माह के अल्प समय में ही पूर्ण कर लिया गया, जिसे विशेष उपलब्धि के तौर पर देखा जा रहा है।

गाँव के ही एक सम्माननीय व्यक्ति श्री रामेश्वर दयाल जी ने पानी की समस्या हल होने के पश्चात SBGBT के कर्मठ सदस्य देवेन्द्र जी को इंगित करते हुए कहा था –

"काले बादलों से वर्षा करने वाला देव इंद्र है.....मुझे मालूम नहीं, लेकिन काले पाइपों से धनेरा में पानी पहुंचाने वाला देवेंद्र हैं, यह सबको मालूम है।

जब तक हम स्वयं की क्षमता और अधिकारों को नहीं पहचानेंगे, तब तक दूसरी कोई चीज हमें कभी संपन्न और मजबूत नहीं बना सकती।"

जैसे धनेरा और खिन्नौट गाँव के लोगों ने अपनी मौलिक समस्याओं पर अपनी इच्छाशक्ति, कुशलता और निजी प्रयासों से विजय प्राप्त की, ठीक इसी तरह हरेक गाँव आपसी एकता, सजगता, और सहयोग को तत्पर रहे, तो फिर किसी भी समस्या का हल ढूंढना मुश्किल नहीं है। जय हिंद, जय SBGBT

– समस्त धनेरा और खिन्नौट गाँव वासी।

□□□□

नशाखोरी पर पाई पूर्ण विजय – दुर्गसी

"सोच बदलो गाँव बदलो" नाम की बयार का एक छोटा सा झोंका 14 मई 2017 को धौलपुर जिले के धनौरा गाँव से माननीय डॉ. सत्यपाल जी के मार्गदर्शन में उठा था। हवा का ये गुबार समूचे क्षेत्र में, मानव समाज में व्याप्त बुराइयों (जैसे जुआ, शराब, रास्तों में अतिक्रमण, आपसी वैमनस्य, और नशाखोरी आदि) को अपने पेट में पचाता चला गया और विशाल रूप धारण कर तूफान की तरह तेज रफ्तार से चहुँओर फैलने लगा। जिसकी सीमाएं राजस्थान राज्य ही नही बल्कि समूचे देश में फैल चुकीं हैं। वैचारिक परिवर्तन की इस आँधी से सामाजिक कुरीतियों में तो मानो भगदड़ सी मच गई थी और सोच बदलो गाँव बदलो टीम के क्रांतिकारी साथियों के संघर्ष पूर्ण सहयोग व निःस्वार्थ मेहनत के निम्न सार्थक परिणाम दिखाई दिएः–

1. ग्रामीण परिवेश में लोगों के पिछड़ेपन का मुख्य कारण नशाखोरी था, जिसकी वजह से बहुत से युवाओं व असंख्य महिलाओं के सपने बर्बाद हुए हैं। इस मुहिम के प्रभाव से हजारों लोगों ने शराब का सेवन त्याग कर अपने आप को नारकीय जीवन से मुक्त किया।
2. ज्यादातर परिवारों की आर्थिक अवनति का मुख्य कारण जुआ खेलना था अतः टीम की समझाइश पर इस कुप्रथा से भी मुक्ति पाई गयी।
3. बहुत से ऐसे गाँव जहाँ तंग गलियों से दुपहिया वाहनों का पहुँच पाना भी असम्भव था वो आज चौड़े रास्तों में तब्दील हो चुके हैं।
4. टीम द्वारा संचालित इस मुहिम का सर्वाधिक असर सरकारी तंत्र के प्रति हताश व निराश जनता में देखने को मिला। लोग अब अपने अधिकारों के प्रति सजग हुए हैं तथा प्रशासन के साथ सहयोग स्थापित कर अपनी समस्याओं के निराकरण में सफल हो रहे हैं।
5. अपने घर परिवार के पालन पोषण तक सीमित रहने वाला कर्मचारी वर्ग अब किसी न किसी माध्यम से समाजहित में अपना योगदान देना चाहता है। लोग "pay back to society" सिद्धांत का अनुसरण कर रहे हैं जिससे ग्रामीण विकास में आर्थिक बाधाएं कम हुईं हैं।

सामाजिक परिवर्तन की इस मुहिम से मेरा गाँव दुर्गसी (तहसील सरमथुरा जिला धौलपुर) भी अछूता नही रह सका। जिसकी बदौलत अब तक गाँव में निम्न कार्य हुए हैंः–

1. 18 मई 2017 को सभी ग्राम वासियों ने सर्व सम्मति से शराब, नशाखोरी, जुआ, ताश आदि पर पूर्णतः प्रतिबंध लगाने का निर्णय लिया।
2. गाँव के राजकीय विद्यालय में छात्र छात्राओं के लिए पेयजल की समस्या के निराकरण हेतु जन सहयोग से submersible डलवाई गई।
3. शादियों या अन्य आयोजनो में खाने के बाद बीड़ी सिगरेट आदि न परोसने का संकल्प लिया।
4. ग्राम में पानी, बिजली, सड़क एवम् अन्य समस्याओं के समाधान सम्पर्क पोर्टल के आदि नवाचारों के माध्यम से किया जा रहा है।

– देवेन्द्र प्रताप सिंह मीना, दुर्गसी
SBGBT कार्यकर्ता

□□□□

बड़ापुरा ने दिखाई बड़ी सोच – बड़ापुरा

''सोच बदलो गॉव बदलो टीम'' और डॉ सत्यपाल सर की प्रेरणा और मार्गदर्शन में बड़ापुरा गाँव (मासलपुर, करौली) के युवा साथीगण और भाई उदय सिंह जी के पूर्ण सहयोग से विगत 1 साल के दौरान हमारे गाँव में निम्नलिखित कार्य संपन्न करवाए हैं :–

1. उच्च प्राथमिक विद्यालय बड़ापुरा में चारदीवारी का कार्य
2. विद्यालय में पानी की आपूर्ति हेतु 400 मीटर पाइप लाइन डलवाना
3. विद्यालय में विद्युत कनेक्शन करवाना
4. विद्यालय का रंगरोगन व पुताई का कार्य करवाना
5. विद्यालय के लिए पंचायत से खेल मैदान हेतु भूमि का आवंटन करवाना (टॉल फ्री नंबर 181 पर शिकायत दर्ज करवाकर)
6. मासलपुर तहसील मुख्यालय में स्टोन मार्ट की 54 करोड़ की स्वीकृति (टॉल फ्री नंबर 181 पर शिकायत और ऑनलाइन RTI के जरिये)
7. गांव में होनहार गरीब व जरूरतमंद बच्चों के लिए नवोदय की निशुल्क कोचिंग व्यवस्था
8. गांव में लोगो को मनरेगा के तहत रोजगार दिलाने हेतु अथक परिश्रम से नरेगा के कार्य स्वीकृत करवाना (टॉल फ्री नंबर 181 और CPGRAM पोर्टल पर शिकायत और निरंतर लिखित पत्र)
9. मासलपुर तहसील मुख्यालय में नए कॉलेज का प्रस्ताव भिजवाना (टॉल फ्री नंबर 181पर शिकायत)

10. गॉव में लगभग 1 करोड़ अनुमानित लागत की 2 सड़कों के लिए जयपुर प्रस्ताव भिजवाना (टॉल फ्री नंबर 181 पर शिकायत और ऑनलाइन RTI के जरिये)
11. गॉव में overheaded पानी की टंकी के लिए लगभग 4 करोड़ का प्रस्ताव स्वीकृति हेतु जयपुर भेजा गया (टॉल फ्री नंबर 181 पर शिकायत और ऑनलाइन RTI के जरिये)
12. स्वतंत्रता के बाद हमारे गांव बड़ापुरा, दिमनपुरा और छैड का पुरा को सरकारी रिकॉर्ड में सरकार द्वारा राजस्व ग्राम की अधिसूचना घोषित करवाई गयी है इससे पूर्व अपने गांव ढाणियों में शुमार किये जाते थे (टॉल फ्री नंबर 181पर शिकायत और ऑनलाइन RTI के जरिये)
13. गाँव में स्थित हनुमान मंदिर के परिसर की 450 मीटर चारदीवारी का निर्माण। इस हेतु प्रत्येक घर से लोगों द्वारा श्रमदान किया गया।
14. गांव के राजकीय कर्मचारी युवा वर्ग और इच्छुक सज्जनों ने चंदा देकर गांव के पिछडे और अभावग्रस्त मोहल्लों के लिए 300 फीट पाइपलाइन बिछाकर पानी की समस्या का समाधान करवाया और साथ में कोली मोहल्ला के लिए जलकुंड का निर्माण करवाया गया।
15. गांव में सार्वजनिक पाइपलाइन में से लोगो द्वारा व्यक्तिगत पॉइंट के द्वारा जल के दुरुपयोग के निराकरण हेतु गांव में शांतिपूर्ण मीटिंग कर सर्वसम्मति से इन पॉइंट्स को तत्काल बंद करवाया गया। इसका परिणाम यह हुआ कि आज संपूर्ण गॉव में उचित रूप पेयजल आपूर्ति हो रही है।
16. गांव के उन मोहल्लों में, जहाँ दुर्गम आम रास्ते और लोगों के अतिक्रमण की वजह से दुपहिया वाहन भी निकलना आसान नही था, वहाँ लोगों को शन्तिपूर्वक मीटिंग कर समझाया गया, जिसके चलते गाँव को अतिक्रमण मुक्त किया गया, फलस्वरूप आज पूर्व के सँकरे रास्तों से ट्रेक्टर आदि बडे वाहन भी आसानी आ–जा सकते हैं।

17. मासलपुर तहसील मुख्यालय पर मुख्य बाजार और सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में वाटरकुलर लगवाना (टॉल फ्री नंबर 181पर शिकायत और ऑनलाइन RTI के जरिये)

–मनीराम, बड़ापुरा
SBGBT कार्यकर्ता

□□□□

ढाणी में बही विकास की बयार

हलकारा की झोपड़ी (बिछौछ, सवाई माधोपुर)

गाँव हलकारा की झोपड़ी (बिछौछ), बामनवास, सवाई माधोपुर में टीम के प्रयास और उपलब्धि–

1. सोच बदलो–गाँव बदलो आंदोलन का आगाज हमारे गाँव में 15 अगस्त 2017 को स्वतंत्रता दिवस पर "आओ पढ़े–आगे बढ़े" प्रकल्प के अंतर्गत समस्त अध्ययनरत विधार्थियो को जीवन डायरी व संपूर्ण शिक्षण सामग्री निःशुल्क प्रदान करके किया गया। उसी दिन "ग्रीन विलेज–क्लीन विलेज" प्रकल्प के तहत लगभग 200 पौधे भी लगाए गए जिसे सभी ग्रामवासियों ने उत्सव की तरह लिया।
2. टीम ने गाँव के युवाओं को राजस्थान संपर्क पोर्टल / 181 / RTI के बारे में जागरूक किया और समय समय पर विस्तृत चर्चा की जिसके परिणाम आने शुरू हो गए हैं जोकि निम्न हैं...

(i) स्थानीय स्कूल के 2कमरों की छत की मरम्मत के लिए 1.5 लाख की स्वीकृति, कार्य प्रगति पर है।

(ii) RTI के माध्यम से राजस्व गाँव के लिए आवश्यक मापदंड मालूम करके हमारी ढाणी को राजस्व गाँव में परिवर्तित करवाने के लिए ऊपरी स्तर पर प्रस्ताव भिजवाना।

(iii) गाँव के सरकारी स्कूल (UPS) के परिसर के ऊपर से जा रही 11000 किलोवॉटकी बिजली की लाइन को बच्चों की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए दूसरी जगह शिफ्ट करवाया गया।

(iv) गाँव में लगभग 500–600 मीटर की सीसी रोड की स्वीकृति दिलवाना, इसका कार्य पूर्ण हो चुका है।

(v) गाँव से होकर गुजरने वाली 4 किमी की सड़क के लिए अभी प्रयास जारी हैं।

इस दौरान राजस्थान संपर्क पोर्टल / 181 पर कई सदस्यों द्वारा अनेक बार शिकायत दर्ज करवाई गई और रिजेक्ट हुई, कई बार स्थानीय प्रतिनिधियों से टीम द्वारा व्यक्तिगत स्तर पर संपर्क किया और अंततः कुछ कार्यों में सफलता मिली।

यह SBGBT के उच्च विचारों / आदर्शों और प्रेरणा से ही संभव हो पाया है। अतः समस्त टीम का विनम्र आभार।

– हरिमोहन मीना,
गाँव हलकारा की झोपड़ी (बिछौछ)
SBGBT कार्यकर्ता

□□□□

युवाओं ने ली व्यसनों से दूर रहने की शपथ – खरगापुर (गोविंदपुरा)

गांव खरगापुरा (गोविंद पुरा) सरमथुरा कस्बे से दक्षिण की ओर चंदेलीपुरा रोड पर स्थित है। यह डौमई ग्राम पंचायत के अंतर्गत आता है। इस छोटे से गांव की भौगोलिक स्थिति इतनी अच्छी नहीं है, लेकिन डौमई ग्राम पंचायत के सभी गांवों के बीच में स्थित होने से यह अपना विशेष महत्व रखता है।

सोच बदलो गांव बदलो अभियान जो कि विगत वर्ष 15 मई 2017 से 21 मई 2017 के बीच जिले भर के कई गांवों में एक जन चेतना यात्रा के रूप में चलाया गया। उसका असर हमारे छोटे से गांव पर भी पड़ा। गांव के युवा अन्य गांवों में हुई जनसभाओं में इस यात्रा को देखने पहुंचे और वहां के माहौल और विचारों से प्रेरित होकर अपने गांव में भी बदलाव के लिए उठ खड़े हुए । 9 जून 2017को हमने गांव के युवाओं से मिलकर, आपसी सहयोग से पंच–स्थल (अथाई) से लेकर पुराने बंगला (फूटा बंगला) तक जो गांव के सभी रास्तों के लिए एक लिंक गली का काम करती है, चौड़ा करने का संकल्प लिया और जो रास्ता पहले 4–5 फीट की संकरी गली के रूप में था वह सभी के प्रयासों से लगभग 9–10 फीट चौड़े रास्ते में बदल गया। गांव की रीढ़ समझे जाने वाले रास्ते का चौड़े होने का श्रेय समस्त गाँव वासियों और हमारे सभी SBGBT के साथियों को जाता है जिनकी उच्च विचार शक्ति व कर्मठता के बलबूते यह सब संभव हो पाया।

इसके पश्चात गांव की दूसरी मीटिंग 8 अगस्त 2017 को गांव के पंच स्थल (अथाई) पर आयोजित की गई। इसमें मुख्य रूप से गांव के युवाओं में बढ़ रहे व्यसनों खासतौर से बीड़ी, गुटखा, जर्दा, सिगरेट और शराब इन पर पूर्ण पाबंदी के लिए सभी युवाओं को शपथ दिलाई गई और आज मैं पूरे विश्वास के साथ कह सकता हूं कि उस दिन गांव के जिन–जिन युवाओं ने इन व्यसनों से दूर रहने की शपथ ली थी, उन्हें बाद में मैंने कभी इस तरह की नशाखोरी करते नहीं देखा। यह सब सोच बदलो गांव बदलो अभियान का ही प्रतिफल है! हमारे सभी गांववासी आज इस अभियान से बेहद प्रसन्न हैं और आज वह अपने बच्चों को अच्छे कार्य करने के लिए प्रोत्साहित भी करने लगे हैं।

– गोविंदपुरा विकास समिति

संतराम मीना

SBGBT कार्यकर्ता

□□□□

महिलाओं और ग्रामीणों ने लगाई शराब और जुआ पर रोक – चिलाचौंद

चिलाचौंद गांव के मूल निवासी श्रीमान महेंद्र सिंह जी, SBGBT कार्यकर्ता व सरपंच प्रतिनिधि हैं। महेंद्र जी एक तरफ इंडियन आर्मी का हिस्सा होकर राष्ट्र सेवा कर रहे हैं, वहीं दूसरी ओर समय मिलने पर अपने गांव के विकास के लिए भी जी जान से जुट जाते हैं। महेंद्र जी ने बताया कि उनके गांव में "सोच बदलो गांव बदलो यात्रा" की जनसभा 18 मई 2017 को हुई थी। इस जनसभा का उनके गांव वासियों पर जबरदस्त असर हुआ। वर्षों से अपने परिवार में नशाखोरी का दंश झेल रही महिलाओं का दर्द इस यात्रा के दौरान एक साथ छलक पडा! एक महिला जिसका पति शराब के नशे में हमेंशा धुत्त रहता है, ऐसे में वह घर चलाने के लिए मनरेगा में श्रम करने जाती है, जब मेहनताना मिलता है, तो पति उन पैसों को भी छीनकर शराब के पव्वों में उडा देता है! यहाँ ऐसे तमाम परिवार हैं जो रोज इस व्यसन की मार झेल रहे हैं! सभा के दौरान ही कई महिलाओं ने साहस दिखाते हुए शराबबंदी के खिलाफ मोर्चा खोल दिया था। इस जनसभा में गांव की महिलाओं ने खुलेआम शराब और जुआ जैसे व्यसनों के चलते, गांव के बच्चों और परिवारों की दुर्दशा सभी के समक्ष रखी। इन महिलाओं के दर्द को महसूस करते हुए SBGBT ने भी गांव के पंच पटेलों से आह्वान किया कि जिस गांव को अच्छी पहलवानी के लिए जाना जाता था वह गांव, क्यों आज व्यसनों में पडकर बर्बाद हो रहा है? इस पर विचार करने की जरूरत है। जनसभा ने लोगों के मन को झकझोर दिया था, गांव के लोगों ने भी निराश नहीं किया और टीम संयोजक डॉक्टर सत्यपाल जी से किया वादा पूरा किया। इस जनसभा के बाद अगले ही दिन गांव की मीटिंग बुलाई गई और सभी गांव वासियों ने शराब और जुआ पर रोक लगाने के लिए सहमति दी। यह हमारे गांव की अब तक की सबसे बड़ी उपलब्धि थी, क्योंकि क्षेत्र के बड़े गांवों में हमारे गांव का भी नाम आता है। ऐसे में किसी भी मीटिंग का सफल होना गांव के लिए एक बड़ी उपलब्धि होती है।

बदलाव की इस सोच ने गांव में कई और विकास कार्यों को अंजाम दिया। गांव वासियों के प्रयासों और ग्राम पंचायत के सहयोग से गांव में धौलपुर जिले में ग्रामीण क्षेत्र का सबसे बड़ा अस्पताल खुल गया, पशु अस्पताल को मंजूरी मिल गई, गांव वालों ने मिलकर गांव के रास्तों से अतिक्रमण हटाया और सरपंच के सहयोग से, इन्हें पक्के रास्तों में तब्दील किया गया। साथ में पानी की निकासी के लिए नालियों का भी निर्माण करवाया गया। पानी की उचित व्यवस्था हेतु 10बड़ी टंकियों का निर्माण किया गया। अस्पताल व विद्यालय के लिए अलग से पानी की पाइप लाइन बिछाई गई। विद्यालय के लिए खेल मैदान को मंजूरी मिल गई और मंजूरी मिलते ही सभी के सहयोग से इस पर से अतिक्रमण को हटाया गया। पर्यावरण व जल संरक्षण की दिशा में भी गाँव वासियों ने कार्य किया। ग्राम पंचायत के सहयोग से 3बड़े तालाब और 20छोटे तालाब जिन्हें क्षेत्रीय भाषा में पोखर का नाम दिया जाता है बनाए गए, ताकि बरसात के मौसम में पानी व्यर्थ में न बह जाए साथ ही तालाबों में एकत्र जल से जमीन में जल स्तर भी अच्छा हो सके। इस प्रकार हमारे गाँव में सोच बदलो गांव बदलो अभियान का व्यापक असर देखा गया। गाँव के युवा, सोच बदलो गांव बदलो टीम से अभिप्रेरित हैं।

– समस्त चिलाचौंद गाँव वासी

□□□□

युवाओं ने किया विकास समिति का गठन – बरौली

बरौली गांव से SBGBT कार्यकर्ता लक्ष्मण सिंह जी ने बताया कि सोच बदलो गांव बदलो अभियान से प्रेरणा लेकर उनके गांव में भी युवाओं ने "महाकालेश्वर विकास समिति बरौली" का गठन किया। इस विकास समिति के माध्यम से गांव के युवाओं और गांव वासियों ने पिछले कुछ महीनों में गांव में कई विकास कार्यों में भागीदारी निभाई ।

1 मार्च 2018 को विकास समिति के सदस्यों ने गांव में साफ सफाई कर लोगों को स्वच्छता के लिए प्रेरित किया। 3 मार्च 2018 को, होली के सुअवसर पर, बरौली गांव में होने वाले पारंपरिक विशाल नाल–दंगल महोत्सव के दौरान भी विकास समिति के सदस्यों ने बैनर और पंपलेट के माध्यम से स्वच्छता संदेश देकर, इस कार्यक्रम में पधारे लोगों को स्वच्छता के लिए प्रेरित किया। इसके अतिरिक्त विकास समिति के सदस्यों ने अपने स्वयं के खर्चे से गांव के बस स्टैंड और पंच की पटिया इन दोनों स्थानों पर राहगीरों के लिए प्याऊ की व्यवस्था की। विकास समिति ने गांव में बीड़ी, गुटखा, तंबाकू, शराब, जुआ आदि व्यसनों से दूर रहने के लिए भी लोगों को जागरूक किया। विकास समिति ने गांव के प्रतिभाशाली बच्चों, विशेषकर बोर्ड कक्षाओं के बच्चों को सम्मानित करने का फैसला लिया। बरसात के दिनों में अधिक से अधिक पेड़ लगाने और जल संरक्षण के लिए लोगों को समझाया। इसके अतिरिक्त समय–समय पर सरकारी योजनाओं की जानकारी देकर लोगों को उनका लाभ उठाने के लिए जागरुक किया। आगे भी विकास समिति के माध्यम से गांव में विकास कार्यों पर निरंतर विचार किया जा रहा है। SBGBT की प्रेरणा से पूरे गांव के युवाओं में कुछ कर गुजरने का एक नया उत्साह और जोश है।

"न थके कभी पैर, न कभी हिम्मत हारी है।
जज्बा है परिवर्तन का, इसलिए सफर जारी है।।"

– महाकालेश्वर विकास समिति, बरौली

□□□□

बदलाव के लिए उठ खड़े हुए दो गाँव – कोयला व कांकरई

सोच बदलो गांव बदलो अभियान के अंतर्गत गाँव कोयला एवं कांकरई में संयुक्त मीटिंग का आयोजन किया गया जिसमें सोच बदलो गांव बदलो टीम के सभी सदस्यगण जिन्होंने अपना बहुमूल्य समय दोनों गांवो के लिए दिया उसके लिए समस्त ग्रामवासी आभारी हैं।

SBGBT के विचारों से प्रभावित होकर दोनों गाँवों के लोगो ने निम्नलिखित कार्य सम्पन किए:–

1- SBGBT की विचारधारा व प्रबुद्ध लोगों के मार्गदर्शन से प्रभावित होकर सभी लोंगो ने बीड़ी, गुटखा, तम्बाकू आदि व्यसनों को त्यागने की शपथ ली, जो काफी हद तक सफल रही है।

2. ताश, जुआ, दारू को दोनों गांव के युवा व बुजुर्गों ने छोड़ने का निर्णय लिया।

3. गांव कांकरई में पेयजल की खराब व्यवस्था को सुदृढ़ करने का भी निर्णय लिया गया! जिसके समाधान हेतु गाँव के बाहर बोर खुदवाकर पाइप लाइन द्वारा गाँव में पानी पहुंचाने की योजना प्रगति पर है!

4. गांव के रास्ते अतिक्रमण हटा कर चौड़े किये गए हैं।

5- SBGBT के बैनर तले दोनों गांवों में ग्राम हित में निरंतर सकारात्मक कार्यक्रम किए जा रहे हैं जैसे : दोनों गांवो में प्रतिभा सम्मान समारोह का आयोजित करके गांव के प्रतिभाशाली बच्चों को हर सम्भव मदद करना !

6. दोनों गाँवों के SBGBT कार्यकर्ता गांव के लोगो तक सरकार की हर योजना को अनेक माध्यमों से पहुंचा रहे हैं, ताकि इन योजनाओं का लाभ समस्त ग्रामबासी अच्छे से प्राप्त कर सकें।

7- SBGBT के ''ग्रीन विलेज क्लीन विलेज'' अभियान के तहत वृक्षारोपण किया गया! आज रोपे गए पौधे ग्रामीणों के व्यक्तिगत सहयोग से हरे भरे बने हुए हैं!

आज SBGBT का प्रभाव धीरे धीरे व्यापक रूप से सभी गांवो वालों पर पड़ रहा है। उम्मीद है, कि आगे भी ग्रामबसियो के सहयोग से अनेक सत्कार्य सम्पन्न होंगे! वाकई आज लोगों की सोच बदल रही हैं...!

– किशन मीना (कांकरई) – श्रीनिवास (कोयला)
SBGBT कार्यकर्ता

□□□□

70 साल में पहली बार दिवाली पर गाँव में जुआ नहीं – सुरारी कलां

सोच बदलो–गांव बदलो अभियान के प्रकल्प "आओ पढ़े – आगे बढे" के दौरान सुरारी कलां ग्राम के 80 साल के बुजुर्ग श्री मलुआराम जी ने लडखडाती जुबां से SBGBT के कोर्डिनेटरों को बताया कि, "बरौली परिक्षेत्र में अक्सर जुआ का खेल आज भी देखा जा सकता है और किसी समय में मेरा गांव सुरारी कलां तो घर – परिवारों को बर्बाद करने वाले इस खेल की राजधानी रहा है, लेकिन मुझे आज यह कहते हुए बेहद हर्ष और गर्व महसूस हो रहा है, कि SBGBT के अभियान से प्रेरित होकर सुरारी कलां के युवाओं ने मिलकर दीपावली के पर्व पर निरन्तर हो रही इस द्यूतक्रीड़ा को खत्म करने का निर्णय लिया और 70 साल में यह पहला अवसर था जब गांव में दीपावली के पावन पर्व पर जुआ नहीं खेला गया।

SBGBT की सकारात्मक ऊर्जा से प्रेरित यह युवा व्यसनों को ख़त्म करने एवं सरकारी योजनाओं का लाभ दिलाने हेतु निरन्तर गांव वासियों को जाग्रत कर रहे हैं, मेरा आशीर्वाद इनके साथ है।"

– रूपसिंह सुरारी कलां
SBGBT कार्यकर्ता

वैचारिक जागरुकता और जनचेतना ही विकास की जननी है...

□□□□

ग्रामीणों ने कहा बुराइयों को अलविदा – झाला

सोच बदलो गांव बदलो अभियान के 17वें पड़ाव पर दिनांक 27 अगस्त 2017को गांव झाला में मीटिंग का आयोजन किया गया। जिसमें SBGBT के सभी सदस्यों ने अपनी गौरवमयी उपस्थिति और बहुमूल्य समय देकर समस्त गांव के लोगों को प्रेरित और प्रोत्साहित किया! उसके लिए झालवासी आभारी हैं।

SBGBT के सभी प्रबुद्धजन और बुद्धिजीवी लोगों की चरणधूल से झाला परिष्कृत और पावन महसूस करने लगा है। SBGBT के विचारों से प्रभावित होकर झाला गांव के लोगों ने निम्नलिखित कार्य सम्पन किये :–

1. SBGBT की विचारधारा व प्रबुद्ध लोगों के आशीर्वाद से प्रेरित होकर व्यसनों में संलिप्त लोंगो ने अपनी अपनी जेबों से बीड़ी, गुटखा, तंबाकू निकाल कर उन्हें आग के हवाले कर भविष्य में इनसे दूर रहने की शपथ ली।
2. ताश, जुआ, दारू आदि व्यसनों को गांव के युवा व बुजर्गों ने छोड़ने का निर्णय लिया और अब तक चार बार समीक्षा करने पर यह पाया गया है कि अब हरेक व्यक्ति ताश के पत्तों को हाथ में लेने से भी परहेज करता है।
3. गांव के ही भामाशाहों द्वारा एक किमी दूरी से पाइप लाइन डालकर गांव के लिए पेयजल का प्रबंध किया गया है। जिनमें भामाशाह के रूप में श्री लाखन सिंह गुरु जी का नाम अग्रणी है।
4. गांव के रास्तों से अतिक्रमण हटा कर सुविधानुसार चौड़ा किया गया है।
5. SBGBT के बैनर तले झाला गांव में कई सुधारात्मक कार्य किए गए हैं! साथ ही पारंपरिक और सांस्कृतिक महोत्सवों के अवसर पर SBGBT की विचारधारा को भी गाँव वासियों के मध्य प्रखरता से प्रसारित किया जाता है!
6. गांव के सभी युवाओं ने एक साथ यह संकल्प लिया है, कि हम आजीवन SBGBT का अनुसरण करेंगे व इसके सिद्धांतों पर खरा उतरने का प्रयास करेंगे! बुजर्गों, महिलाओं एवं बहन–बेटियों का सम्मान करेंगे।
7. गाँव में सरकारी योजनाओं का लाभ उठाते हुए सोलर प्याऊ का निर्माण करवाया गया है, जो कि गाँव की प्रमुख उपलब्धियों में से एक है।

–लक्ष्मण सिंह झाला
SBGBT कार्यकर्ता

□□□□

ग्रामीणों ने नशे व बुराइयों को छोड़ किया शिक्षा की ओर रुख – सुनीपुर

धौलपुर के युवाओं द्वारा छेड़ी एक सकारात्मक मुहिम "सोच बदलो – गांव बदलो" अभियान जिसका असर पूरे एरिया में देखने को मिला । तो भला ऐसे में हमारा गांव सुनीपुर कैसे पीछे रह सकता था। हमारा गाँव भी इस मुहिम में सभी के साथ कदम से कदम मिलाकर चलने के लिए आगे आया। दिनांक 18 जून 2017 को गांव के सकल पंचों ने मिलकर देवस्थान सूजी बाबा पर एक निर्णायक पंचायत की । यह पंचायत इन 4 बिंदुओं पर केंद्रित रही दारू (शराब), जुआ, ताश और चोरी के बढ़ते मामले । गांव के पंचों ने दारू, जुआ और ताश बंदी के साथ–साथ चोरी के बढ़ते मामलों, जिनकी वजह से गांव की छवि दिन प्रतिदिन धूमिल होती जा रही थी, इन सब पर ठोस व अहम निर्णय लिए। पंचों ने शराब, जुआ और ताश के बारे में जो सूचना देने वाले को 2100रुपए का इनाम घोषित किया। शराब पीने वाले पर 5100 रुपये का दंड और जो भी दुकानदार शराब की बिक्री करता हुआ पाया जाएगा, उस पर 11000 का दंड किया जाएगा। इसी प्रकार चोरी के मामलों में भी चाहे वह दोपहिया हो या चार पहिया वाहन या अन्य कोई मामला, बताने वाले को 11000 इनाम स्वरूप और दोषी व्यक्ति पर 21000 रुपए का दंड किया जाएगा। इस तरह की व्यवस्थाओं को जन्म दिया।

साथ ही साथ यह भी तय हुआ कि बहुत जल्द सभी ग्रामवासी अपने सरपंच, पंच पटेलों, सरकारी कर्मचारियों, महिलाओं व बच्चों की एक सामूहिक मीटिंग रखेंगे और सभी को साथ लेकर ग्राम विकास की प्रभावी रूपरेखा बनाने की कोशिश करेंगे ताकि हमारे गाँव की भी तस्वीर बदले, हमारा गाँव विकास की नयी ऊंचाईयों पर पहुंचे, हमारा गाँव शिक्षा के क्षेत्र में आगे बढ़े।

सभी ग्रामीणों का इस बात पर जोर था कि गांव में विशेष तौर पर शिक्षा के क्षेत्र में काम हो, शिक्षा में हमारा गांव आगे बढ़े इसी की शुरुआत करते हुए, इस वर्ष 15 अगस्त पर प्रतिभा सम्मान समारोह रखा जिसमें 10वीं व 12वीं में जो छात्र–छात्राएं 80 प्रतिशत से अधिक लाए हैं उनको 3100 रुपए, 75 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त करने वाले बच्चों को 2100 रुपए और जो 70 प्रतिशत से अधिक लाए हैं उनको 1100 रुपए का इनाम देकर उनका हौसला बढाया।

ग्रामीणों और युवाओं ने SBGBT के "ग्रीन विलेज क्लीन विलेज" प्रकल्प के तहत वृक्षारोपण किया और यह निर्णय लिया कि हम प्रतिभा सम्मान समारोह, वृक्षारोपण और स्वच्छता जैसे कार्यक्रम हर वर्ष रखने की कोशिश करेंगे और सोच बदलो गांव बदलो अभियान की हर गतिविधि में बढ़ चढ़ कर भागीदारी निभाएंगे।

– समस्त ग्रामवासी सुनीपुर

□□□□

आदर्श गाँव में दिखा बदलाव का असर — खानपुर मीणा

खानपुर मीणा गांव, बाड़ी से पूर्व की ओर 2–3 किलोमीटर की दूरी पर करौली–धौलपुर राष्ट्रीय राजमार्ग 11बी पर अवस्थित है। हमारा गांव शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी और आदर्श गांव की श्रेणी में शामिल है, लेकिन इतना कुछ होने के वाबजूद हमारा गाँव भी सोच बदलो गांव बदलो अभियान की कार्यप्रणाली, उद्देश्यों और सकारात्मकता से बहुत प्रभावित है। सोच बदलो गांव बदलो यात्रा के बाद, हमारे गाँव में भी युवाओं और गाँव वासियों की सोच में सकारात्मक परिवर्तन देखा गया है। लोगों ने मिलकर बदलाव के लिए शुरुआत की है। हालांकि, गांव बड़ा है फिर भी अलग–अलग मोहल्लों के युवाओं ने मिलकर कुछ अच्छे और रचनात्मक कार्यों को अंजाम तक पहुंचाया है। गांव के युवाओं ने, ग्राम पंचायत के सहयोग से, घड़ी मोहल्ले में मुख्य रास्ते से अतिक्रमण को हटाकर, उसे पक्के सीसी रोड में बदलवाया है। आज यह रास्ता 16 से 20 फीट की चौड़ाई में बदल गया है, इस रास्ते के दोनों ओर पानी की निकासी के लिए नालियों का निर्माण भी किया गया है। अभी हाल ही में, गांव वासियों ने अप्रैल 2018 में पानी की भीषण किल्लत के समय में भी, सरपंच के सहयोग से पशुधन के लिए पेयजल हेतु हौद का निर्माण करवाकर कर्तव्यनिष्ठा और मानवता का परिचय दिया। गांव के युवाओं ने अपनी अच्छी सोच का परिचय देते हुए, गांव के कुछ हिस्सों में अपने निजी खर्चे से रास्तों में बल्ब और सीएफएल लगाकर रोशनी की व्यवस्था की है। गांव में SBGBT के "ग्रीन विलेज क्लीन विलेज" कार्यक्रम के तहत युवाओं ने सार्वजनिक स्थलों पर वृक्षारोपण किया और अपने अपने घरों के सामने और रास्तों में साफ–सफाई कर गांव के लोगों को स्वच्छता के साथ रहने का संदेश दिया। इसी कार्यक्रम से प्रेरणा लेकर गांव के अटल सेवा केंद्र की रंगाई पुताई करके उसका सौन्दर्यीकरण करवाया गया है। गांव के लोगों को सरकारी योजनाओं की जानकारी देने और पारदर्शिता के लिए, अटल सेवा केंद्र में प्रमुख सरकारी योजनाओं की जानकारी वाले चार्ट और बोर्ड लगवाए गए हैं ताकि गांव के लोग इनका अधिक से अधिक लाभ ले पाएं। मेरा मानना है, कि जो व्यक्ति अपनी सोच नहीं बदल सकता, वह अपने जीवन में कुछ भी हासिल नहीं कर सकता। मैंने स्वयं SBGBT की प्रेरणा से, इस भीषण अकाल के दौर में अपने आसपास के घरों/परिवारों की सहूलियत के लिए अपने निजी समरसिबल पंप से अपने घर के बाहर आम लोगों

को पीने का पानी भरने की व्यवस्था कर ग्राम हित में एक छोटा सा योगदान देने की कोशिश की है। अपने एक मित्र रविंद्र कुमार के साथ मिलकर पक्षियों के लिए पानी की व्यवस्था हेतु कई जगहों पर परिंडे लटकाए हैं और साथ ही उनमें नियमित रूप से पानी भरने की व्यवस्था भी की है। यही नहीं हमने अपने कुछ साथियों को साथ लेकर ग्रीन विलेज क्लीन विलेज अभियान के दौरान लगाए गए पौधों को जीवित बनाए रखने के लिए टैंकर द्वारा नियमित रूप से पानी देने का कार्य भी किया है। आज इस अभियान का असर धीरे–धीरे लोगों पर पड रहा है। SBGBT की गतिविधियां, लोगों में आपसी सहयोग और सकारात्मकता का भाव बढ़ा रही हैं। मेरे गांव के लोग भी आज अपनी समस्याओं को प्रशासन के साथ–साथ, निजी तौर पर हल करने के लिए एकजुटता दिखा रहे हैं।

कोई गाली दे, तो आप स्माइल दीजिए
कोई गंदगी करे, तो आप सफाई कीजिए,
आपके व्यवहार से, उसे शर्म महसूस होगी
आपकी अहिंसा, उसे सत्य पथ पर ले आएगी।

–राम लखन मीना, खानपुर मीणा
SBGBT कार्यकर्ता

□□□□

वर्षों से टूटी सड़क का प्रशासन व ग्रामीणों ने मिलकर किया जीर्णोद्धार – उमरेह

उमरेह गाँव, धौलपुर की बाडी तहसील के दक्षिण में 5 किमी दूरी पर अवस्थित है! जनसंख्या और संपन्नता की दृष्टि से यह गाँव विशेष वर्चस्व रखता है। यहाँ सभी जाति और धर्म के लोग बडे ही सद्भाव और प्रेम से रहते हैं। गाँव से महज 1 किमी दूर दक्षिण में विशनिगिरि बाबा का प्रसिद्ध धार्मिक स्थल है। जिसकी ख्याति राजस्थान के अलावा पडौसी राज्यों तक फैली हुई है। यहाँ प्रतिवर्ष भादों के महीने में विशाल लक्खी मेला लगता है। लोगों का अटूट विश्वास है, कि बाबा की मात्र भभूति लगाने से कैंसर जैसी असाध्य बीमारी का निवारण भी संभव है। ऐसे कई चमत्कार यहाँ अक्सर देखने को भी मिले हैं। यह स्थान गाँव की संस्कृति और धार्मिक प्रतिष्ठा के हिसाब से भी विशेष महत्व रखता है।

इतना महत्वपूर्ण गाँव होने के वाबजूद, बेहद सँकरे रास्ते, कीचड़ भरी गलियाँ, मद्यपान, धूम्रपान आदि उमरेह गाँव की आम समस्या बन चुकी थे। इन बुराइयों से निजात पाना लोहे के चने चबाना जैसा था। इसी बीच क्षेत्र में चल रही सोच बदलो गाँव बदलो अभियान की बयार उमरेह गाँव से भी होकर गुजरी। दिनांक 17 मई 2017 को गाँव में SBGBT की मीटिंग का आयोजन हुआ। फलस्वरूप लोगों में जागरूकता और चेतना का प्रसार हुआ। लोगों ने टीम के सकारात्मक विचारों से अभिभूत होकर सर्वप्रथम अपने गांव में पूर्णतः शराबबंदी की घोषणा की। परिणाम स्वरूप आज गाँव में पीने वाले 90 प्रतिशत लोग इस व्यसन को पूर्णतः त्यागने में सफल हुए हैं। जनसहभागिता के माध्यम से सँकरे रास्तों को चौडा किया गया ! गाँव में अचानक आई जगरुकता के चलते बर्षों से क्षतिग्रस्त मुख्य सड़क के नवनिर्माण हेतु सरकार द्वारा वित्तीय स्वीकृति मिल गई। सरकारी रिकॉर्ड के अनुसार सड़क का 40फीट चौड़ी होना आवश्यक था, लेकिन गाँव में अतिक्रमण के चलते सड़क को चौडा करना चुनौती भरा कार्य था। फिर भी गाँव की युवाशक्ति ने प्रशासन और ग्रामीणों के सहयोग से इस कार्य को अंजाम तक पहुंचाने का बीडा उठाया। तत्काल एक आम सभा का आयोजन करके गाँव में बेहतर क्रियान्वयन के लिए युवा मण्डली / ग्राम विकास समिति का गठन किया गया। युवा टीम के सार्थक प्रयासों से वर्तमान में यह मार्ग गाँव से लेकर विशिनिगिरि देवालय तक 40 फीट चौडा कर दिया गया है। इसके साथ ही गाँव के बीच में होकर गुजरने वाले अति सँकरे मार्ग को चौडा करके 16फीट का किया गया है। इस ऐतिहासिक और अभूतपूर्व परिवर्तन में समस्त ग्रामीणों का अतुलनीय योगदान रहा। जिसके चलते आज गाँव के लोगों में अटूट समर्पण और सद्भाव दृश्यमान होता है। इस मुख्य मार्ग के बनने से आज गाँव की रौनक देखते ही बनती है।

युग परिवर्तन की इस धारा से उमरेह गाँव के पड़ोसी गाँवों में भी अप्रत्याशित बदलाव देखने को मिले हैं। जिनमें सागोर, कोयला, अमरूपुरा, महाराजपुरा, चपटापुरा आदि गाँव प्रमुख हैं। गांव के लोगों का मानना है कि SBGBT की प्रेरणा और सहयोग से ही यह सब संभव हो पाया है। SBGBT की संघर्ष से सफलता की ओर चलने वाली इस अभूतपूर्व मुहिम से एक दिन क्षेत्र का हरेक गाँव ऊर्जावान और लाभान्वित होगा। इसी आशा और विश्वास के साथ SBGBT को अशेष मंगलकामनाएं !

□□□□

– समस्त उमरेह गाँव वासी

सीमांत गाँव ने की विकास की रफ्तार तेज – बिलोनी

ग्राम पंचायत बिलोनी में 18 मई 2017 को सोच बदलो गांव बदलो टीम की मीटिंग का आयोजन किया गया जिससे गांव की दशा और दिशा में महत्वपूर्ण बदलाव हुए जो अविस्मरणीय हैं।

अधोलिखित महत्वपूर्ण कार्य हमारे गांव में टीम एवं ग्राम वासियों के सहयोग से किए गए:–

1. पार्वती नदी पर पुल निर्माण–

हमारे बिलोनी गाँव की परिधि में अवस्थित 20 गाँवों की प्रमुख समस्या नदी पर पुल का निर्माण नहीं होना था। जिसके चलते बरसात के समय नदी के तेज बहाव के दौरान हर वर्ष कई लोग एवं पशुधन काल का ग्रास बन जाते थे। बरसात के दिनों में लगभग 4 महीनों तक आवागमन में अत्यधिक परेशानी का सामना करना पड़ता था। कई बार इस समस्या के चलते इन गांवों की प्रसूताएं एवं बीमार व्यक्ति समय पर इलाज न मिल पाने से अकाल मृत्यु का शिकार बन जाते थे, इस तरह आमजन बेहद पीडित और दुःखी था।

इस विकट समस्या के समाधान हेतु हमने ग्राम वासियों को साथ लेकर जिला स्तर पर जिला कलेक्ट्रेट, विधायक, सांसद, जिला प्रमुख आदि के लेटर पैड पर शिकायत दर्ज करवा कर 8बार सचिवालय में संपर्क किया। परिणाम स्वरूप यह कार्य स्वीकृत हुए और आज पुल बनकर तैयार है। अब आवागमन हेतु रास्ता बेहद सुगम और आसान है।

1. विद्यालय उच्च प्राथमिक से माध्यमिक में क्रमोन्नत

गाँव में टीम की मीटिंग के दौरान भी एक महिला ने इस बात को रखा था, कि हमारे गाँव के बच्चों के लिए माध्यमिक स्तर का स्कूल होना चाहिए। हमारा विद्यालय 1976 से आठवीं तक था अब कहीं जाकर दसवीं तक हो पाया है इसके लिए हमने सर्वाधिक प्रयास किए और ग्राम वासियों का भी भरपूर सहयोग रहा। इसी कोशिश में एक बार ऐसा समय भी आया था जब हमारे गाँव के लोग अपने बच्चों को साथ लेकर जिला मुख्यालय धरना प्रदर्शन करने जा पहुंचे। विधायक, सांसद, जिला प्रमुख तक अपनी बात पहुंचाई। राजधानी जयपुर में शिक्षा मंत्री के निवास पर मंत्री से हॉट टॉक भी हुई एक बार जिला स्तर पर पुलिस प्रशासन से झड़प भी हुई। मुख्यमंत्री महोदया से भी दो बार मुलाकात की गई।

इसके लिए जिला स्तर पर अनगिनत प्रयास और संघर्ष लगातार जारी रहे। जयपुर सचिवालय स्तर पर 10 बार ग्रामवासियों को लेकर आवागमन किया गया और अंत में कामयाबी हासिल हुई।

3. उप स्वास्थ्य केंद्र डिस्पेंसरी स्वीकृत एवं निर्माण कार्य पूरा

चिकित्सा के क्षेत्र में गाँव में पहले कोई सुविधा नहीं थी इसके लिए प्रयास किया गया। इस कार्य की शुरुआत भी

पुल निर्माण एवं विद्यालय क्रमोन्नति के साथ ही आवेदन करके की गई। जिसके बदौलत यह कार्य भी सफल हुआ।

4. **पशु चिकित्सा केंद्र स्वीकृत**

इसके लिए जिला स्तर एवं मंत्री जी से भी कई बार संपर्क किया, लेकिन इसमें विशेष सहयोग धौलपुर विधायक शोभारानी कुशवाह जी का रहा। जिन्होंने मंत्री जी से व्यक्तिगत निवेदन किया। जिसके लिए हम सभी विधायक महोदया के विशेष आभारी हैं।

5. **गौरव पथ रोड स्वीकृत –**

तृतीय चरण में टेंडर जारी, वर्क आर्डर जारी और कुछ ही दिनों में निर्माण कार्य शुरू होने वाला है।

6. सिद्ध पुरा को राजस्व ग्राम का दर्जा दिलवाया गया, वहां के ग्राम वासियों के विशेष सहयोग से गांव में बिजली पहुंचाने का कार्य भी पूर्ण किया गया है।

7. डामर रोड से विद्यालय को जाने वाला रास्ता जोकि पहले 8–9 फीट चौड़ा था उसके लिए कई बार मीटिंग करके विशेष प्रयास किया गया। जिसके चलते अब यह रास्ता 15 से 16 फीट चौड़ा हो गया है एवं आधे रास्ते पर निर्माण कार्य भी हो चुका है।

8. बिलोनी से खरौली को जाने वाला रास्ता जोकि अतिक्रमण के चलते इतना सँकरा हो गया था कि दो भैंसों का एक साथ गुजरना भी संभव नहीं था। इस रास्ते को ग्राम वासियों के सहयोग से तथा कई बार मीटिंग करके लोगों को मौके पर ले जाकर, आज 15 से 20 फुट चौड़ा किया गया है। आज पुल निर्माण के पश्चात इस रास्ते से खरौली तक सीधे आवागमन संभव है।

9. धोबी, कोली, मुस्लिम एवं जाटव मोहल्ला को आपस में पगडंडी मार्ग से जोड़ने वाले रास्ते को 8 से 10फीट चौड़ा करवाया एवं सीसी निर्माण कार्य करवाया गया ।

10. संपूर्ण ग्राम पंचायत में पानी की टंकियों एवं पशुधन हेतु प्याऊ का निर्माण कार्य करवाया गया है।

11. इसके अतिरिक्त पोखर निर्माण, मुख्य रास्तों पर सीसी रोड निर्माण (60 प्रतिशत भाग पर), खाद्य सुरक्षा भंडार, अटल सेवा केंद्र, रपट निर्माण एवं अन्य निर्माण कार्य भी यथासंभव करवाए गए है।

इसके अलावा और भी बेहतर करने के प्रयास जारी हैं ।

उपर्युक्त सभी कार्यों को हम सोच बदलो गांव बदलो टीम की प्रेरणा एवं ग्रामवासियों के अपार सहयोग और समर्पण से पूर्ण कर पाए हैं।

– हेमराज / हेमू सर

SBGBT कार्यकर्ता

□□□□

गाँव में जगाई शिक्षा की अलख – अंगारी

अंगारी गांव, अलवर जिले की थानागाजी तहसील में आने वाला खूबसूरत गाँव है। अरावली की पहाड़ियों के मध्य में स्थित यह गाँव भौगोलिक दृष्टि से अद्वितीय है। विविधताओं में एकता इस गाँव की विशेष पहचान है। पूर्व से ही अपने वैभव और संपन्नता के कारण आसपास के क्षेत्र में यह गाँव यशस्वी रहा है। आज से लगभग 20–25 वर्ष पूर्व गाँव में आजीविका का मुख्य साधन परिवहन हुआ करता था। जिसके चलते इस गाँव के प्रत्येक व्यक्ति के पास 5–10 ट्रक हुआ करते थे। इस बात में भी कोई दो राय नहीं कि गाँव में कुछेक लोगों के पास तो 40–50 ट्रक हुआ करते थे। ट्रकबाजी अस्थाई रोजगार का साधन है, यह बनाता कम बिगाडता ज्यादा है। समय के बहाव में गाँव के लोगों का रोजगार का यह मुख्य साधन घाटे का सौदा साबित हुआ और लोगों को मजबूरन यह धन्धा बंद करना पड़ा। गाँव के वैभव की चमक भी अब फीकी पड़ने लगी थी। ट्रक खरीदने की प्रतिस्पर्धा और धन कमाने की लालसा ने गाँव के लोगों को शिक्षा से दूर कर दिया था। अतः गाँव के शैक्षिक स्तर में निरंतर गिरावट चिंता का विषय थी। अगर पैसा हमारे जीवन की भौतिक आवश्यकता है, तो शिक्षा जीवन के सर्वांगीण विकास के लिए जरूरी है। अंगारी गाँव के नौनिहालों का शिक्षा से निरंतर वंचित रहना किसी अभिशाप से कम नहीं था। इस समस्या के दूरगामी दुष्परिणामों को भांपते हुए, गाँव के युवा कर्मचारियों ने चिंता जाहिर की और गाँव में शिक्षा के बेहतर आयाम स्थापित करने के लिए कटिबद्ध हुए।

भारी नुकसान के चलते गाँव के लोग भी धीरे–धीरे परिवहन व्यापार से विमुख होने लगे थे। अब उनका मुख्य उद्देश्य अपने बच्चों को बेहतर शिक्षा प्रदान करना था।

रा. उ. मा. वि. अंगारी का स्वर्णिम काल :

शिक्षा के गिरते स्तर को लेकर अंगारी गाँव पूर्व से ही चिंतित था, लेकिन इसी बीच गाँव के रा. उ. मा. विद्यालय में प्रधानाचार्य श्री फूलचंद मीणा जी का पदस्थापन हुआ। अंगारी गाँव में शिक्षा के स्तर को सुधारने का श्रेय इन्हीं महापुरुष को जाता है। इन्होंने अपने प्रभावशाली व्यक्तित्व और कर्तव्यनिष्ठा के दम पर गाँव के विद्यालय को अलवर जिले में एक नई पहचान दिलाई। उनके ही कार्यकाल में सत्र 2010–11 में 12वीं कला वर्ग में मनोज कुमार मीणा ने राज्य स्तरीय मेरिट में दसवां स्थान प्राप्त किया। उसके बाद से ही अंगारी गांव ने शिक्षा के क्षेत्र में अद्भुत प्रगति की।

इसी क्रम को आगे बढाते हुए, गाँव के कर्मठ व्यक्ति श्री मनोज कुमार मीना ने जयराम गुरुजी के निर्देशानुसार

कर्मचारियों का एक व्हाट्सएप ग्रुप बनाकर गाँव को एजुकेशन हब बनाने का निर्णय लिया गया। इसी उद्देश्य को पूरा करते हुए कुछ सार्थक कार्य इस ग्रुप के माध्यम से किए गए! जिनका विवरण निम्नलिखित है –

1. "अंगारी सर्विसमैन" WhatsApp ग्रुप द्वारा विद्यालय के वार्षिकोत्सव में प्रतिभावान छात्रों को शील्ड देकर पुरस्कृत करना।
2. अंगारी सर्विसमैन ग्रुप की सबसे बड़ी उपलब्धि गाँव में अंबेडकर पुस्तकालय की स्थापना करना रही, जिसका उद्घाटन श्री किसन सहाय जी (IPS) के करकमलों से किया गया। इस पुस्तकालय का प्रमुख उद्देश्य गरीब और असहाय परिवार के बच्चों के भविष्य को बेहतर बनाने के लिए शिक्षा के समस्त आवश्यक साधन उपलब्ध कराना है। इस मुहिम में ग्रामीणों के अलावा वर्तमान सरपंच श्री रमेश मीना जी का भी विशेष योगदान रहा है। समस्त भौतिक सुविधाओं से संपन्न इस पुस्कालय की प्रमुख विशेषताएं निम्न प्रकार हैं–

   कम्पीटिशन की तैयारी करने वाले छात्रों के लिए आवश्यक पुस्तकें उपलब्ध कराना।

   अध्ययन हेतु शान्त, सकारात्मक और सुविधाजनक वातावरण

   पुस्तकालय में नियमित पढ़ने वाले बच्चों को प्रतिमाह मोटिवेशन क्लास द्वारा अभिप्रेरित करना।

"सोच बदलो गाँव बदलो" अभियान के "शिक्षा पाओ – ज्ञान बढाओ" प्रकल्प के तहत गाँव में कम्पटीशन की तैयारी कर रहे प्रतिभागियों के लिए गणित व सामान्य ज्ञान की कक्षाएं भी प्रारंभ की गई हैं। जिनमें अध्यापन का कार्य क्रमशः सुन्दरलाल गुरूजी और सुशील गुरूजी कुशलतापूर्वक कर रहे हैं। इसके अलावा यहाँ प्रतिमाह टेस्ट पेपर का भी आयोजन किया जा रहा है।

इस उत्कृष्ट कार्य को अंजाम तक पहुंचाने में निम्नलिखित लोगों का अभूतपूर्व योगदान रहा है – जयराम जी, मनोज जी, रमेश जी, रामप्रताप जी, महेश जी, राजेश जी, हरदेव जी, रामजीलाल जी, श्रवणलाल जी, दयाचंद जी एवं शंकर जी आदि।

इस अप्रतिम अवदान का मुख्य प्रेरणा स्रोत सोच बदलो गांव बदलो अभियान रहा है।

गाँव के जागरुक युवाओं ने SBGBT की विचारधारा और सकारात्मक कार्यों का अनुसरण करते हुए अंगारी गाँव में जनजाग्रति और जनहितैषी कार्यों को साकार किया है। जिसके लिए अंगारी गाँव SBGBT का विशेष आभारी है।

– समस्त अंगारी गाँव वासी

मनोज कुमार

SBGBT कार्यकर्ता

□□□□

अनोखी व अद्भुत होली – कांसोटी खेड़ा

कहानी: एक बदलाव ,

एक दिन अनायास ही हमारे गाँव में सोच बदलो – गाँव बदलो यात्रा को होस्ट करने का मौका मिला। मंच पर गाँव का नेतृत्व करते हुए, गाँव में बदलाव की जरुरत पर प्रकाश डाला। उस दिन सोच बदलो – गाँव बदलो यात्रा के सूत्रधार – श्री सत्यपाल सिंह जी मीना (IRS) की समाज सेवी भावना ने मुझे काफी प्रभावित किया। तभी ठान लिया था कि हमारे गाँव में भी बदलाव लाना है।

जो भी खेरे गाँव का रुख करता अक्सर उसके मुख से यही बोल फूट पड़ते – कि इस गाँव का कुछ नहीं हो सकता ! ''खेरे गाम कौ खच्चा कभऊँ ना मिटि सकतु'' ''इस गाँव के लोगों की तो सोच ही खराब है'' ''कीचड में रहने की आदत ही पड गई है ''....इत्यादि।

लेकिन मेरा मानना था कि– ''अगर मन में ठान लिया जाये तो, कुछ भी असंभव नहीं''

यात्रा के करीब एक बर्ष बाद,जब मुझे अपने गाँव में (B-Ed द्वितीय वर्ष) के 4 महीने की इंन्टर्नशिप हेतु गाँव के राजकीय विद्यालय में छात्राध्यापक के तौर पर पढाने का मौका मिला। गाँव के बच्चों को गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा देने के साथ–साथ, सकारात्मक सोच विकसित करने का मौका मिला। इस दौरान मैंने, विभिन्न प्रतियोगिताओं, सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से बच्चों की रचनात्मकता को बाहर निकालने का प्रयास किया। तभी ख्याल आया, क्यूँ न गाँव में बदलाव लाने हेतु कोई कदम उठाया जाये।

इस संदर्भ में गंभीरता से सोचना शुरू किया। कुछ सकारात्मक सोच वाले प्रबुद्ध ग्राम वासियों एवं युवा साथियों से इस विषय पर चर्चा की, सबने खूब सराहा, सुझाव दिये, तन–मन–धन से सहयोग का वादा किया।

फिर क्या था, निकल पडा गाँव के बदलाव हेतु। कुछ महत्वपूर्ण सुझावों को लिखकर पम्पलेट का रूप दिया।

23/02/2018 को शाम 8 बजे गाँव की मुख्य चौपाल श्री भुमिया बाबा, बाबू महाराज की अथाँई पर कुछ युवा साथियों और ग्राम वासियों के साथ प्रस्तावित अभियान से संबंधित योजनाओं पर विचार विमर्श कर, पोस्टर विमोचन के द्वारा सांकेतिक अभियान की शुरुआत की।

अगले दिन कुछ साथियों के साथ, गाँव में स्थित दोनों विद्यालयों (सरकारी व प्राइवेट) में जाकर, गाँव के बच्चों को स्वच्छता हेतु जागरूक कर, पम्पलेट वितरित किए। घर–घर जाकर लोगों स्वच्छता के प्रति जागरूक कर, शौचालय के समुचित उपयोग एवं घर के बाहर घर की सीमा में मुख्य रास्ते की साफ सफाई के साथ–साथ अस्थाई अतिक्रमण उठाने के लिए आग्रह किया।

27/02/2018 को गाँव के दोनों विद्यालयों के 5–9वीं कक्षा तक के छात्रों को साथ लेकर प्रिंटेड स्लोगन, तख्ती, बैनर, वायरलैस माइक की सहायता से गाँव के मुख्य मार्गों पर स्वच्छता रैली का भव्य आयोजन किया गया।

रास्ते में छात्रों के लिए अल्पाहार की व्यवस्था रखी गई। गाँव के करीब 50युवाओं की टीम ने रैली को सफल बनाने हेतु अनुपम योगदान दिया।

28/02/2018 को योजनानुसार गाँव के युवाओं ने ''शर्म छोडो– श्रम करो'' की उक्ति को सार्थक करते हुए स्वयं श्रमदान करके, गाँव के मुख्य मार्ग को, ट्रैक्टर–ट्राली, तसला ,फावडा, झाडू की मदद से अतिक्रमण एवं कचरा मुक्त किया। धीरे–धीरे युवाओं के साथ, ग्राम वासी भी हाथ बंटाने लगे। बाहर रहकर प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर रहे गांव के नौजवानों व सरकारी सेवाएं दे रहे युवा साथियों ने अभियान की सफलता हेतु गाँव आकर तन–मन–धन से सहयोग किया। सफाई अभियान में जुटे युवाओं के प्रोत्साहन हेतु ग्राम वासियों ने समय–समय पर चाय, लस्सी, कोल्डड्रिंक, पानी, समौसे, बडई, कचौडी, पकौडी, नमकीन, बिस्कुट इत्यादि वितरित कर युवाओं के मनोबल को कमजोर नहीं पड़ने दिया। किसी ने अपना ट्रैक्टर, ट्राली, किसी ने चाँटी, किसी ने डीजल, किसी ने पैसे ग्राम हित में देकर इस अभियान में विशेष सहयोग किया।

साथ ही एक अनोखी होली देखने को मिली, राह चलते बुजुर्ग, महिलाएं गुलाल एवं रंगों की बौछार कर अभियान की सराहना कर रहे थे। सभी युवा एक ही रंग में रंगे थे, गलियों की धूल गुलाल एवं गंदा पानी सुगंधित रंग बन गया था। सभी का सिर्फ एक ही लक्ष्य– स्वच्छ व साफ सुथरा गाँव। होली को अलविदा कहने के साथ– साथ गलियों से अतिक्रमण और कचरा भी विदा हो चुका था। गाँव के चौडे और कीचड मुक्त रास्ते आनंदित कर रहे थे।

बीच – बीच में होली का जमकर लुत्फ उठाया, सभी ने DJ Music के साथ खूब मस्ती – हुडदंग भी किया। पूरी युवा टीम ने साथ–साथ नाल – दंगल एवं शिव प्रसाद (भांग) का लुत्फ उठाया। सही मायने में एक अद्भुत होली थी, इस वर्ष। गाँव के युवाओं ने होली की छुट्टियों में एकजुट होकर, अपने 4 दिन के कड़े श्रमदान से, गाँव को अतिक्रमण मुक्त एवं कीचड मुक्त बनाकर देशभर के लिए एक अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया।

इसी के साथ गाँव की सफाई व्यवस्था को सुचारू रुप से सुदृढ करने हेतु सर्व सम्मति से रूपये 50/–प्रति घर मासिक सफाई शुल्क निर्धारित किया है। जिससे गाँव के सफाई व्यवस्था देख रहे हरिजन परिवार को पारितोषिक के तौर पर मासिक मजदूरी दी जा सके और गाँव की गलियों में प्रतिदिन झाडू लगने के साथ– साथ, कचरे को प्रत्येक मुहल्ले में निर्धारित जगह पर एकत्रित किया जा सके। जिसे हर रविवार ट्रैक्टर–ट्रॉली की सहायता से गाँव से बाहर निर्धारित स्थान पर निस्तारित किया जा सके। शेष धनराशि का उपयोग ग्राम हित एवं गाँव के विकास में, ग्राम विकास समिति के माध्यम से व्यय किया जा सकेगा।

''हमारा गाँव– हमारी सरकार''

मुझे गर्व है – अपने गाँव के युवाओं पर मुझे गर्व है अपने गाँव पर

''जय युवा– जय युवा शक्ति'' जय –कॉसौटीखेडा

ग्राम सुधार एवं विकास सेवा समिति, कॉसौटीखेडा

एम.के. गौर

SBGBT कार्यकर्ता

□□□□

बदली सोच ने की वर्षों की आस पूरी

आजादी के 70 साल बाद बनी सड़क – रघुवीरपुरा

70 सालों से मुख्य सड़क मार्ग से वंचित गाँव रघुवीरपुरा को SBGBT की विचारधारा और सहयोग से मिली ऐतिहासिक सफलता!

रघुवीरपुरा गाँव भौगोलिक और आर्थिक दृष्टि से सामान्य है, जो सरमथुरा तहसील से उत्तर दिशा में करीब 10 किमी की दूरी पर पहाडी की तलहटी में अवस्थित है। गाँव की आबादी लगभग 500 तथा साक्षरता प्रतिशत 78 प्रतिशतसे ज्यादा है। गाँव में आजीविका के प्रमुख साधन खेती और खनन कार्य है। इसके अलावा यहाँ दूसरा ऐसा कोई माध्यम नहीं है, जिससे ग्रामीण अपने परिवार का उचित रूप से भरण–पोषण कर सकें।

सदियों से दीये की रोशनी में जीवन व्यतीत करने वाला ये गाँव बिजली की जगमगाहट से कुछ बर्ष पूर्व ही रोशन हुआ है। पानी की मात्रा फिलहाल पर्याप्त है, लेकिन निकट भविष्य में अल्पवृष्टि और सूखे के चलते हालात विकट होने की कगार पर हैं।

सरकारी कर्मचारियों की बात की जाए, तो गाँव में 36परिवार हैं। जिनमें कर्मचारियों की संख्या 14है, जो महज 5परिवारों तक ही सीमित है। बाकी 31परिवारों में कोई कर्मचारी नहीं है।

गाँव से 2 किमी की दूरी पर पश्चिम की ओर डाँग की तलहटी में एक पवित्र तीर्थ स्थल है, जिसे हरजपुरी के नाम से जाना जाता है। यहाँ यथासमय धार्मिक आयोजन होते रहते हैं। ग्रामीणों की इस धर्म स्थल के प्रति अटूट आस्था है। यह स्थान बेहद खूबसूरत और दर्शनीय है। भ्रमण की दृष्टि से भी ये जगह विशेष महत्व रखती है। रघुवीरपुरा गाँव में विभिन्न गोत्रों के परिवार हैं, जो हमेंशा बडे ही प्रेम और सद्भाव से जीवन व्यतीत करते रहे हैं। सहिष्णुता और संगठन के प्रतीक इस गाँव की मौलिक समस्या 70सालों से पक्का और सुगम मार्ग न होने की रही है। गाँव से महज 2किमी की दूरी पर खुर्दिया से नादनपुर की ओर एक पक्की सड़क गुजरती है, फिर भी दुर्भाग्यवश गाँव में आवागमन के लिए करीब 4–5 किमी का चक्कर लगाना पडता है, जो भीषण डाँग से होकर गुजरने वाला बेहद दुर्गम मार्ग है। जिसे पाटने में ये

गाँव अब तक असफल रहा है।

उचित रास्ता न होने के कारण ये गाँव हमेंशा अनदेखी का शिकार रहा है। जिसके चलते यहाँ के लोग तमाम सरकारी योजनाओं का लाभ लेने से भी वंचित रह जाते हैं। लोगों का रोज कच्चे और दुर्गम मार्ग से गुजरना बेहद कष्टदायी और दुःखद होता है। सुलभ रास्ता न होने से गाँव के कई बीमार और दुर्घटना ग्रस्त लोग तो, इसलिए मौत का ग्रास बन गए, क्योंकि उनका उचित समय पर इलाज नहीं हो सका।

अगर, गाँव के लोग अपनी थोडी–थोडी जमीन रास्ते के लिए छोड़ देते, तो यह समस्या कब की खत्म हो जाती, लेकिन किसान का अपनी जमीन से इतना आत्मिक प्रेम होता है, जिसे जीते जी त्यागना उसके लिए प्राण त्यागने जैसा है।

ग्रामीणों की संकीर्ण मानसिकता के चलते अब तक यह गाँव पक्के सड़क मार्ग से वंचित रहा। जब भी इस विषय पर गाँव में चर्चा हुई, तो लोग कभी भी एकराय होते नहीं दिखे। वही ढाक के तीन पात। ज्यादा जोर दिया तो परिणामस्वरूप गाँव की एकता में फूट पड गई। उसके बाद यह गाँव फिर कभी रास्ते को लेकर एकमुश्त होता नहीं दिखा।

स्थिति इतनी बदहाल हो गई, कि अब तो नाते–रिश्तेदार भी गाँव आने से कतराने लगे थे। शादी–ब्याह हो या गमी का माहौल जो भी मेहमान यहाँ आता, वह रास्ते में हुई असुविधा का रोना रोता और गाँव के लोगों को सैंकड़ों गालियां देकर चला जाता। गाँव के लोग लज्जावश गर्दन झुकाए चुपचाप उनके प्रवचन सुनते, लेकिन सड़क निर्माण के लिए कभी कटिबद्ध होते नहीं दिखे।

गाँव के लोगों की ऐसी तटस्थता, चिंताजनक और व्यर्थ थी। सड़क मार्ग के अभाव से नित्य होने वाली तमाम परेशानी और तकलीफों को झेलता यह गाँव पता नहीं किस उम्मीद के सहारे चल रहा था।

वक्त अपनी रफ्तार से निकलता रहा, लेकिन हालात जस के तस। इसी बीच गाँव के कुछ जागरुक और कर्मठ युवा व्याख्याता महेन्द्र, रामफल व अध्या. कप्तान आदि ने क्षेत्र में चल रहे सोच बदलो–गाँव बदलो अभियान से प्रेरणा प्राप्त की। जिसकी शुरूआत सर्वप्रथम स्मार्ट विलेज धनौरा से दिनांक 14/5/2017 को डॉ सत्यपाल जी और SBGBT के लोगों द्वारा की गई। उस दिन भी गाँव के इन युवाओं ने इस मुहिम में शामिल होने का सौभाग्य प्राप्त किया। यही वह दिन था जिसने इन युवाओं में अपार उत्साह और मनोबल का संचार किया।

जिसके चलते गाँव के समस्त बुजुर्ग और युवाओं ने बर्षों से अवरुद्ध पडे आम रास्ते को सुचारू करने के हेतु ग्रामवासियों को एकत्र तो किया गया, लेकिन कुछ लोगों की संकीर्ण मानसिकता और निजी स्वार्थों के चलते इस बार भी कोई खास सफलता हाथ नहीं लगी ।

फिर भी SBGBT के विचारों ने युवाओं को निरंतर ऊर्जावान बनाए रखा। अब गाँव के युवा पीछे हटने वाले नहीं थे। उन्होंने गाँव के हर आदमी से व्यक्तिगत वार्ता की। लोगों को कच्चे रास्ते से होने वाली असुविधा और समस्याओं के

प्रति जागरुक किया। इसी तरह उनका संघर्ष चलता रहा।

रास्ते के निर्माण में अब तक आई कठिनाइयों के पीछे कुछ मौलिक कारण भी रहे, जैसे–

1. लोगों में आपसी वैमनस्य, निजी स्वार्थ और संकीर्ण मानसिकता।
2. गाँव के युवाओं में जागरुकता और चेतना का नितान्त अभाव।
3. लोगों का अशिक्षित, असहिष्णु और अजागरुक होना।
4. गाँव के कुछ प्रतिष्ठित और दबंग पटेलों का इस मुहिम से खिलाफत का भाव रखना।

ऐसे हालातों में मार्ग निर्माण की प्रक्रिया बहुत ही जटिल और पेचीदगी भरी हो गई थी। तत्पश्चात गाँव के जागरुक और कर्मठ व्यक्तियों ने विचार किया, कि क्यों ना SBGBT को अपने गाँव में आमंत्रित किया जाए, क्योंकि उन्हें आशा ही नहीं पूरा यकीन था, कि SBGBT के विचार और संकल्पों से गाँव के लोग अवश्य प्रभावित होंगे। फिर एक दिन लोगों के सहज आग्रह पर सोच बदलो–गाँव बदलो टीम का 15 अक्टूबर 2017 को गाँव की उपेक्षित धरा पर आगमन हुआ। टीम के प्रत्येक सदस्य के सहयोग और विचारों ने गाँव के जख्मों पर मरहम का काम किया। असर इतना जबरदस्त हुआ कि टीम के पुरोधा माननीय डॉ सत्यपाल जी के पावन हाथों से उसी दिन गाँव के लोगों ने पूरे उत्साह और जोश के साथ रास्ते का उद्घाटन करवा दिया। वाकई ! यह क्षण गाँव के लिए 'अभूतपूर्व और ऐतिहासिक' थे।

गाँव के जहन में वो पल भी हमेशा दृश्यमान होते रहते हैं, जब मीटिंग के दौरान सत्यपाल जी लोगों को संबोधित करने के लिए खडे होते हैं, उधर गाँव के सभी बुजुर्ग, माता–बहनें, युवा और बच्चे भी उनके सम्मान में एक साथ हाथ जोड़कर खडे हो जाते हैं। वह दृश्य बडा ही भावुक और मनोहर था। उस समय ऐसा प्रतीत हुआ, मानो स्वर्ग लोक से गाँव में फरिश्ते उतर कर आए हों। लोग इतने भावुक और सरल हो गए थे, कि करीब

10मिनट तक उसी अवस्था में ज्यों की त्यों खडे रहकर सत्यपाल जी को सुनते रहे। स्वयं सत्यपाल सर भी इस अपार और अभूतपूर्व अभिनंदन को देखकर इतने भावविभोर और विस्मृत हो गए, कि उन्हें 10 मिनट बाद याद आया, कि लोग अब भी खड़े हुए हैं। बडा ही अविस्मरणीय और अद्‌भुत दृश्य था। जिसे यह गाँव और SBGBT के लोग कभी नहीं भूल सकते।

मीटिंग के पश्चात गाँव में जबरदस्त परिवर्तन हुए। गाँव में एकदम से समरसता, सद्‌भाव और सहिष्णुता के भाव जाग उठे। लोगों में गाँव के उत्थान के प्रति उत्साह और जुनून देखते ही बनता था। SBGBT के सार्थक विचार और प्रयासों से इस गाँव के लोग बेहद प्रभावित और प्रेरित हुए।

युवा कार्यकर्ताओं को पूरा यकीन होने लगा था कि अब मंजिल दूर नहीं है, लेकिन इसी बीच कुछ विरोधियों द्वारा सड़क निर्माण कार्य को बीच में ही रोक दिया गया। मगर उसी रात गाँव के लोगों को पुनः एकजुट कर यह निर्णय लिया, कि जितना रास्ता बिना किसी अवरोध के निकल रहा है, सर्वप्रथम उसको पूरा किया जाए।

तत्पश्चात, अगली सुबह ही जेसीबी मशीन मँगवाकर सड़क निर्माण कार्य प्रारंभ किया गया। गाँव के लोगों ने इस मुहिम में बढ–चढकर आर्थिक और शारीरिक सहयोग किया, जो अप्रत्याशित था।

मार्ग के अंतर्गत वन विभाग के अधीन भूमि को लेकर प्रतिद्वंदी के द्वारा अनुचित शिकायत करने से वनाधिकारियों द्वारा सड़क निर्माण कार्य एक बार फिर से बीच में ही रोक दिया गया। तब गाँव के लोगों ने SBGBT के सहयोग से वन अधिकारी से अनुमति ली और कार्य को आगे बढाया।

इसके बाद रुके हुए मार्ग को पूरा करने के लिए गाँव में पुनः मीटिंग रखी गई। जिसके तहत असहयोग करने वाले लोगों को समझा–बुझाकर कार्य को पूरा करने के लिए मनाया गया। गाँव वासियों ने तमाम परिस्थिति और कठिनाइयों से जूझते हुए आखिर कामयाबी हासिल की। गाँव वासियों ने अपने ही स्तर पर चंदा एकत्र कर 2 किमी दूरी वाले रास्ते का निर्माण कर, उसे मुख्य मार्ग से जोड दिया। जिस पर ग्रेवल और मिट्टी डालने का कार्य भी पूरा हो चुका है।

वर्तमान में SBGBT के अपार सहयोग और समर्पण से अभी हाल ही में सरकार द्वारा गाँव में पक्की सड़क निर्माण हेतु विधायक कोटे से बजट आवंटित हो चुका है। उम्मीद है, कि शीघ्र ही डामर रोड का कार्य शुरु हो जाएगा। इस अपार सफलता के बाद गाँव में खुशी की लहर है।

इसी के साथ ग्रामीणों के सहयोग से सड़क के बीच में आने वाली पोखर पर भी जल स्वावलंबन योजना के तहत कार्य आरंभ करवाया गया है, जो निकट भविष्य में गाँव के मवेशियों के लिए पानी पीने और गाँव में जलस्तर में वृद्धि हेतु बेहद कारगर साबित होगी।

गाँव के लोग इस ऐतिहासिक और अप्रतिम सफलता के लिए SBGBT के आजीवन आभारी हैं। SBGBT एक विचारधारा के रूप में निःस्वार्थ भाव से काम करने वाली अद्वितीय टीम है। इसमें शामिल सभी सदस्य मानवीय मूल्यों के आदी हैं। परोपकार और जनहितैषी भावना से ओतप्रोत इस टीम ने क्षेत्र में अनूठी मिसाल कायम की है। धन्य है इस टीम के निर्माता, धन्य है इस टीम के सदस्य।

यह टीम इसी तरह अपने संकल्पों को पूरा करती रहे, हमारी अशेष शुभकामनाएं और सहयोग हमेशा इस टीम के साथ है।

– समस्त रघुवीरपुरा वासी

महेन्द्र, कप्तान, रामफल

SBGBT कार्यकर्ता

□□□□

ग्रामीणों ने किया गांव के रास्तों को अतिक्रमण मुक्त – हांसई

हांसई गाँव धौलपुर की बाडी तहसील के उत्तर में 7–8किमी की दूरी पर अवस्थित है। आधुनिक सुविधाओं के लिहाज से गाँव संपन्न है! यहाँ के लोग बहुत ही सज्जन और मिलनसार प्रवृत्ति के हैं। लेकिन सँकरे रास्ते और कीचड़ भरी गलियों ने इस गांव की प्रतिष्ठा पर प्रश्न चिह्न लगाते हैं। नजदीकी गाँव धनौरा, जो वर्तमान में लोगों के निजी प्रयासों और सहयोग से स्मार्ट विलेज धनौरा में परिवर्तित हो चुका है। धनौरा गाँव ही उस दिन का पहला मुख्य साक्षी और प्रणेता है, जहाँ से सोच बदलो गाँव बदलो अभियान का आगाज हुआ था। इस अभियान का असर इतना व्यापक और प्रबल था जिसके संक्रमण से हाँसई गाँव भी नही बच सका। फलस्वरूप यहाँ के लोग भी SBGBT की विचारधारा और अवधारणा से प्रेरित हुए। गाँव के लोगों ने SBGBT की तमाम सकारात्मक गतिविधियों की सार्थकता को समझकर आत्मसात किया। अब हाँसई गाँव के लोग भी परिवर्तन की इस दौड़ में नये जोश और विश्वास के साथ कूद पडे।

इसी के चलते एक दिन गाँव के लोग एकजुट हुए और सर्वप्रथम अपने गाँव को स्वच्छ बनाने का संकल्प लिया। इस संकल्प को मूर्त रूप देने की शुरुआत गाँव के इष्ट देव भूमिया बाबा के पवित्र स्थान से हुई। जिसके तहत सबसे पहले पंच पटेलो के बैठने का स्थान (अथाई) साफ किया गया। तत्पश्चात गाँव की सभी गलियों को साफ करते हुए आवश्यक स्थानों पर अस्थाई कचरा पात्र स्थापित किए गए! इस पहल में गाँव के हर तबके ने पूरे मनोयोग और उत्साह के साथ अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। चाहे वह बच्चा हो, जवान हो, बूढा हो। महिलाओं ने भी इस मुहिम में बढ़–चढ़कर हिस्सा लिया! गाँव की उन्नति और खुशहाली के लिए लोगों में ऐसी जाग्रति और सजगता शायद ही पहले किसी ने देखी हो। गाँव के प्रत्येक व्यक्ति ने शपथ ली कि हम अपने गाँव की प्रगति और विकास के लिए हरसंभव योगदान देने को हमेशा तत्पर रहेंगे। गाँव के लोगों में ऐसी एकता और सहिष्णुता अभूतपूर्व थी। इसकी जितनी प्रशंसा की जाए कम है।

इसी क्रम में एक दिन पुनः गाँव की चौपाल पर एक मीटिंग का आयोजन हुआ, जिसमें सर्वसम्मति से भूमिया बाबा विकास समिति का गठन किया गया। इसके तहत गाँव के 20–25 कर्मठ समाजसेवी युवा भाइयों को गाँव के उत्थान की जिम्मेदारी सौंपी गई। युवा संगठन ने वो कार्य करके दिखाया जिसकी केवल कल्पना की जा सकती है। गाँव के इन युवाओं ने बुजुर्गों के सहयोग से गाँव के हर सँकरे रास्ते से अतिक्रमण हटाकर चौडा कर दिया! मार्ग में आने वाले घरों के लोगों ने अपनी पक्की दीवारों को तोडकर रास्ता चौडा करने में अतुलनीय सहयोग प्रदान किया। हाँसई गाँव ने विकास की नई इबारत लिखकर ऐतिहासिक और अभूतपूर्व कार्य किया है। वह दिन दूर नहीं जब यह गाँव भी स्मार्ट विलेज हाँसई के नाम से पहचाना जाएगा। यहाँ के लोगों का अपने गाँव के प्रति त्याग और समर्पण का भाव उन गाँव के लोगों के लिए सार्थक उदाहरण है, जो अब भी निजी स्वार्थ और संकीर्ण मानसिकता के चलते गाँव के विकास और उन्नति में बाधक बने हुए हैं! अगर सभी लोग इसी तरह अपने–अपने गाँवों में अवदान करते रहे, तो वो दिन दूर नहीं जब अपना देश भी विकसित देश कहलाएगा।

– कमल
SBGBT कार्यकर्ता

□□□□

वर्तमान में जारी महत्वपूर्ण सरकारी योजनाओं की संक्षिप्त जानकारी

राजश्री योजना–बेटियों का सशक्तिकरण

बेटियां घर की लक्ष्मी हैं, लेकिन कई कारणों से बालिकाओं की जन्म दर कम रही है। बेटियों के जन्म को प्रोत्साहित करने, उन्हें शिक्षित व सशक्त बनाने के लिए सरकार ने 1 जून 2016 से मुख्यमंत्री राजश्री योजना राज्य में शुरू की है। इस योजना का उद्देश्य है कि बेटियों की जन्म दर बढ़े, बेटियों को अच्छी परवरिश मिले व बेटियां पढ़ लिखकर आगे बढ़ें।

विभिन्न चरणों में बालिका के अभिवावकों को आर्थिक सहायता

बालिका के जन्म से लेकर कक्षा 12वीं तक बेटी की पढ़ाई, स्वास्थ्य व देखभाल के लिए अभिभावक को 50,000 तक की आर्थिक सहायता प्रदान की जाती है। ये राशि निम्न चरणों में दी जाती है।

बेटी के जन्म के समय – 2500.00 रुपये

एक वर्ष का टीकाकरण होने पर – 2500.00 रुपये

पहली कक्षा में प्रवेश लेने पर – 4000.00 रुपये

कक्षा 6में प्रवेश लेने पर – 5000.00 रुपये

कक्षा 10में प्रवेश लेने पर – 11000.00 रुपये

कक्षा 12उत्तीर्ण करने पर – 25000.00 रुपये

योजना के लाभ की पात्रता

राजश्री योजना की पहली दो किश्त उन सभी बालिकाओं को मिलेगी जिनका जन्म किसी सरकारी अस्पताल एवं जननी सुरक्षा योजना (जे.एस.वाई.) से रजिस्टर्ड निजी चिकित्सा संस्थानों में हुआ हो। ये दोनों किश्त उनके अभिभावकों को तब भी मिलेगी जिनके तीसरी संतान बालिका हो, किंतु योजना में आगे की किश्तों का लाभ उन्हें नहीं मिल पायेगा।

अब राजश्री योजना का लाभ लाभार्थी को सीधा अपने बैंक खाते में मिले, इसके लिए भामाशाह कार्ड से योजना को जोड़ा गया है।

अब राजश्री योजना का लाभ सुविधापूर्वक अपने खाते में प्राप्त करने के लिए भामाशाह कार्ड जरूर बनवायें। योजना के बारे में ज्यादा जानकारी के लिए अपने जिले में कार्यक्रम अधिकारी, महिला अधिकारिता या मुख्य चिकित्सा

एवं स्वास्थ्य अधिकारी से सम्पर्क करें।

भामाशाह कार्ड की अनिवार्यता

योजना का लाभ प्राप्त करने के लिए लाभार्थी का भामाशाह कार्ड अनिवार्य है।

15 मई 2017के बाद लाभार्थी का भामाशाह कार्ड होने पर भुगतान सीधे उसके बैंक खाते किया जायेगा।

लाभ प्राप्त करने के लिए गर्भवती महिला प्रसव पूर्व जांच/एएनसी जांच के दौरान भामाशाह कार्ड एवं भामाशाह कार्ड से जुड़ा हुआ बैंक खाते का विवरण निकटतम आंगनबाड़ी केन्द्र पर ए.एन.एम/आशा/आंगनबाड़ी कार्यकर्ता अथवा राजकीय चिकित्सा संस्थान में उपलब्ध करवायें।

जिन लाभार्थी महिलाओं का भामाशाह नामांकन नहीं हुआ है, ऐसी महिलाएं अपने निकटतम ई–मित्र केन्द्र से भामाशाह कार्ड बनवाकर निकटतम आंगनबाड़ी केन्द्र अथवा राजकीय चिकित्सा संस्थान में विवरण उपलब्ध करवाये।

भामाशाह योजनाः योजना एक, फायदे अनेक–सुराज राजस्थान

महिलाएं बनीं परिवार की मुखिया

राजस्थान सरकार ने महिला सशक्तिकरण और सरकारी योजनाओं का लाभ सीधे और पारदर्शी तरीके से पहुंचाने के लिए 15 अगस्त 2014 से भामाशाह योजना की शुरूआत की। योजना में महिला को परिवार की मुखिया बनाकर परिवार के बैंक खाते उनके नाम पर खोले गये हैं। परिवार को मिलने वाले सभी सरकारी नकद लाभ सरकार सीधा इसी खाते में दे रही है। राजस्थान देश का पहला राज्य है जहां यह हुआ है।

राशि सीधा बैंक खाते में पहुंचाने की व्यवस्था

भामाशाह में नामांकन के समय परिवार व उसके सभी सदस्यों की पूरी जानकारी भामाशाह से जोड़ी जाती है। वे सभी सरकारी योजनाएं जिनका परिवार का कोई भी सदस्य हकदार है, उनकी जानकारी (जैसे– पेंशन नम्बर, नरेगा जॉब कार्ड नम्बर आदि) भी भामाशाह से जोड़ दी जाती है। लाभार्थियों का बैंक खाता भी भामाशाह से जोड़ा जाता है, जिससे सरकारी योजनाओं का लाभ (पेंशन, नरेगा, छात्रवृत्ति, जननी सुरक्षा आदि) तय तिथि पर सीधे उनके बैंक खातों में पहुंचा दिया जाता है।

घर के पास पैसे निकालने की व्यवस्था

इन पैसों को निकलवाने के लिए लाभार्थियों को रुपे कार्ड की सुविधा भी दी जाती है। लाभार्थी इस रुपे कार्ड का नजदीकी बी.सी. केन्द्र में प्रयोग कर आसानी से ये पैसे निकाल सकते हैं। बैंक व एटीएम की सीमित संख्या होने की वजह से राज्य सरकार द्वारा पूरे प्रदेश में 35,000बी.सी. स्थापित किए जा चुके हैं।

लाभार्थी को लेन–देन की सूचना की व्यवस्था

लाभार्थी के खाते में पैसे आने व पैसे निकलवाने संबंधी हर लेन–देन की सूचना उसे अपने मोबाइल पर SMS से मिल जाती है। इसके अतिरिक्त वर्ष में 2बार भामाशाह द्वारा वितरित लाभों का सामाजिक ऑडिट किया जाता है। लाभार्थी स्वयं द्वारा लिए गए लाभों का विवरण भी सूचना का अधिकार एवं भामाशाह मोबाइल ऐप के माध्यम से प्राप्त कर सकते हैं।

भ्रष्टाचार और परेशानी से मिला छुटकारा

लाभार्थी का समय पर उपलब्ध न मिलना, कैश लाभ लाभार्थी तक नहीं पहुंचाना, किसी दूसरे व्यक्ति द्वारा साइन करके लाभ लेना आदि कारणों से सरकारी योजनाओं के लाभ जैसे–पेंशन, छात्रवृत्ति, नरेगा राशि इत्यादि पात्र व्यक्तियों को नहीं मिल पाते थे, जिससे उन्हें काफी परेशानियों का सामना करना पड़ता था।

भामाशाह योजना से सरकारी योजनाओं का पूरा नकद लाभ बिना देरी और बिना परेशानी के सीधे लाभार्थियों के बैंक खातों में पहुंचाया जा रहा है। इसके साथ ही गैर नकद लाभ जैसे–राशन वितरण भी अब बायोमैट्रिक पहचान द्वारा सीधे पात्र व्यक्तियों को दिए जा रहे हैं।

सरकार की वर्तमान योजनाओं के साथ–साथ भविष्य में आने वाली योजनाओं को भी भामाशाह योजना से जोड़ा जायेगा। ताकि आमजन को उन योजनाओं का लाभ सीधे व बिना किसी देरी के मिल सके।

इनके अतिरिक्त नामांकित सभी बीपीएल, स्टेट बीपीएल, अन्त्योदय व अन्नपूर्णा में चयनित परिवारों की महिला मुखिया के बैंक खाते में सहायता राशि के रुप में एक बार 2000रुपये एकमुश्त जमा करवाए जाते हैं।

भामाशाह स्वास्थ्य बीमा योजना

भामाशाह स्वास्थ्य बीमा योजना का आरम्भ 13 दिसम्बर 2015 से किया गया। योजना के अंतर्गत पात्र परिवारों को कैशलेस स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध करवाई जाती हैं। सरकारी अस्पतालों के साथ–साथ चुनिंदा निजी (प्राइवेट) अस्पतालों में भी ये सेवाएं उपलब्ध करवाई जा रही हैं। राज्य के लोगों के स्वास्थ्य पर होने वाले खर्च को कम करना इस योजना का उद्देश्य है।

योजना के लिए पात्रता

राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा योजना एवं राष्ट्रीय स्वास्थ्य बीमा योजना में शामिल परिवार इस योजना में पात्र हैं।

योजना का फायदा

भामाशाह स्वास्थ्य बीमा योजना में प्रत्येक पात्र परिवार को प्रतिवर्ष सामान्य बीमारियों के लिए 30हजार तथा गम्भीर बीमारियों के लिए 3लाख रुपये का स्वास्थ्य बीमा कवर उपलब्ध करवाया जा रहा है। अस्पताल में भर्ती के दौरान हुए खर्च के अलावा भर्ती से 7दिन पहले से 15दिन बाद तक का खर्च शामिल किया जाता है।

इस योजना में 1401बीमारियों को शामिल किया गया है। इनके अतिरिक्त नेफ्रोलॉजी, गेस्ट्रोलॉजी, न्यूरोलॉजी तथा साइकियाट्री सहित 300से अधिक स्पेशियलिटी उपचार के नए पैकेज भी जोड़े जाएंगे।

इससे पहले चल रही योजनाओं में केवल दवाइयां और जांच ही कैशलेस मिलती थीं, लेकिन अब भामाशाह स्वास्थ्य बीमा योजना में जांच, इलाज, डॉक्टर की फीस, ऑपरेशन आदि सब शामिल किये गए हैं। इसके अलावा सरकार द्वारा ओ.पी.डी. व कैशलेस दवाओं के वितरण की व्यवस्था भी पहले से ज्यादा बड़े स्तर पर की गई है।

राजस्थान की यह स्वास्थ्य बीमा योजना देश के अन्य राज्यों की इस तरह की योजनाओं से कहीं बेहतर है। इसमें बीमारियों और जांचों की संख्या भी और राज्यों से ज्यादा है और निश्चित राशि भी। आज यह योजना पूरे प्रदेश के लाखों परिवारों के लिए जीवनदायी साबित हो रही है।

योजना का लाभ लेना है आसान

अस्पताल में भर्ती के समय वहां उपस्थित 'स्वास्थ्य मार्गदर्शक' मरीज और परिजनों की मदद करते हैं। योजना का लाभ लेने के लिए लाभार्थी को अपना भामाशाह कार्ड अस्पताल प्रशासन को देना होता है। उसके बाद की सारी प्रक्रिया की जिम्मेदारी अस्पताल प्रशासन की होती है।

योजना का क्रियान्वयन

योजना के सफल क्रियान्वयन के लिए कॉल सेंटर बनाया जा रहा है 18001806127

– हेमराम एवं रामखन

SBGBT कार्यकर्ता

□□□□

डिजिटल तकनीक की उपयोगिता और युवाओं की भागीदारी

गॉवो में बदलाव की शुरुआत

आओ ! हम सब मिलकर अपने अपने गांव में एक नयी शुरुआत करें, बस एक बार सोच बदलने की जरूरत है, एक शुरुआत करने की जरूरत है। छोटी–छोटी कोशिशें ही सही, यदि आपके रास्ते सही हैं, नीयत सही है, तो देर सवेर सही परिणाम सामने आते हैं और आपके गांव के लोग भी आपसे जुड़ते चले जाते हैं। वैसे भी कहा जाता है "जब इरादे नेक होते हैं तो, कुदरत भी सहायक होती है।" अपने बच्चों की भोजन व्यवस्था व देखरेख तो पशु व पक्षी भी करते हैं, मुंह में निवाला लेकर अपने बच्चों तक पहुंचाते हैं। यदि हम इंसान होकर भी केवल अपने व अपने परिवार तक ही सीमित रहे तो, हममें और जानवरों के जीवन में विशेष अंतर नहीं रह जाता। हमें अपने साथ–साथ अपने समाज, गांव व देश के बारे में भी सोचना चाहिए।

गांव का विकास की मुख्यधारा से पिछड़ने का एक बड़ा कारण यह भी है कि जहां एक ओर गांव से जो अच्छा पढ़ लिख जाता है वह अपनी नौकरी अथवा व्यवसाय की खोज में शहर चला जाता है और वहां उन्नति करते हुए भी धीरे–धीरे अपने गांव व गांव के लोगों की मशक्कत भरी दिनचर्या को भूल जाता है या उस तरफ ध्यान नहीं दिया करता है। वहीं दूसरी ओर गांव के अनपढ़, नासमझ व भोले–भाले लोग अपनी परेशानियों को अपना भाग्य या ईश्वर की मर्जी मान लिया करते हैं और दूरगामी सोच न होने से अपनी परेशानियों, समस्याओं के समाधान की दिशा में ठीक से नहीं सोच पाते हैं । वे आज भी सरकारी योजनाओं के सही मायने में लाभ से वंचित हैं, ये गाँव के भोले और नासमझ लोग सरकारी महकमों में भी ठोकरें खाते–खाते हार मान चुके होते हैं और बड़ी मायूसी के साथ सोचने लगते हैं कि उनकी

कहीं कोई सुनवाई नहीं हो सकती।

यही हाल उनका, उनके जनप्रतिनिधियों के समक्ष अपनी बात रखने पर होता है और ऐसे में, गांव के लोग मान ही लेते हैं कि उनके गांव का भला कभी नहीं हो सकता। उनके गांव की जर्जर व टूटी हुई सड़क पर किसी की नजर नहीं जाती, प्राथमिक चिकित्सालयों का भी कागजों में ही गुणगान है, वहां क्या सुविधाएं उपलब्ध कराई गई हैं, किसी को जानने की उत्सुकता नहीं है। गांव के सरकारी विद्यालयों की दशा भी किसी से छिपी नहीं है। कई गाँवों में पानी की व्यवस्था भी चरमराई हुई हैद्य लोगों को पीने के पानी के लिए भी दिनभर इधर–उधर भटकना पड़ता है। इस तरह की और कई परेशानियों का आज देशभर के कई गांवों के लोगों को सामना करना पड़ रहा है। गांव के लोगों की सोच भी सीमित रहती है और इसी मानसिकता के चलते हुए गांव के लोग समय समय पर गांव में प्रशासन के द्वारा कैंप या विशेष अभियान के दौरान बड़े आला अधिकारियों से मुखातिब होने के समय भी अपनी व्यक्तिगत समस्याओं को ही गिना पाते हैं, अपने गांव की समस्यायों को नहीं रख पाते हैं, सार्वजनिक महत्व की जरूरतों को ध्यान में नहीं ला पाते हैं। दूरगामी सोच के अभाव के चलते, चुनाव के समय भी तात्कालिक लुभावने प्रस्तावों व अपने व्यक्तिगत लाभ की सोच में ही उलझ कर रह जाते हैं और एक सही जनप्रतिनिधि को चुनने से भी चूक जाते हैं।

ऐसे हालातों में पढ़ा लिखा युवा वर्ग एक महत्ती भूमिका निभा सकता है। गांव के लोगों की टूटती उम्मीदों को नए पंख देने की कोशिश कर सकता है। डिजिटल तकनीक व सूचना प्रौद्योगिकी के इस दौर में एक बड़ा सहारा बन सकता है। आपकी छोटी–छोटी कोशिशें भी गांव के लोगों के जीवन स्तर में बदलाव के लिए बड़ी सहायक हो सकती हैं। इसलिए हमारी आपसे विनम्र अपील है कि आप अपने गांव में बेहतर भविष्य निर्माण के लिए आगे आएं, सामूहिक प्रयास करें, सकारात्मक व सद्भावना के माहौल को बढ़ावा देने का प्रयास करें, गांव में मौजूदा सरकारी उपक्रमों की समुचित निगरानी की व्यवस्था कर उनके सही संचालन हेतु प्रयास करें, लोगों को सरकारी योजनाओं के बारे में विस्तृत जानकारी शेयर करें और योजनाओं के लाभ उन्हें दिलवाने में मदद करें।

इस हेतु गांव में एक रजिस्टर्ड ग्राम विकास समिति बनाकर ठंडे पड़े तंत्र में सुधार की दिशा में एक कोशिश करें, गांव के विकास कार्यों को पटरी पर लाने की कोशिश करें। ध्यान रखें, सामूहिक, सकारात्मक व गंभीर प्रयास ही जमीनी बदलाव ला सकते हैं। ऐसा करने पर धीरे–धीरे गांव के लोगों की सोच बदलेगी, गांव की तस्वीर बदलने लगेगी, गांव में विकास की कहानी आगे बढ़ने लगेगी। तो आओ, हम सब मिलकर अपने–अपने गांव में मिलजुल कर आपसी सहयोग से विकास को एक नयी राह पर लेकर चलें। बस शुरुआत हमें अपने आप से करनी है ।

इस भाग में हम आपके साथ विज्ञान व सूचना क्रांति के इस युग में ऑनलाइन/ऑफलाइन टूल्स और तरीकों के बारे में कुछ संक्षिप्त जानकारी साझा कर रहे हैं ताकि इनकी मदद से आप अपनी समझ को बढ़ा सकें और ग्राम विकास के अपने प्रयासों को गति दे सकें यहाँ हम ज्यादातर उदहारण राजस्थान के परिप्रेक्ष्य में रख रहे हैं आप इनको पढ़कर इसी तरह के प्रयास किसी भी राज्य में कर सकते हैं :–

मुख्यमंत्री हेल्पलाइन नंबर 181– आपकी समस्याओं का समाधान

आम लोगों की समस्याओं के निराकरण के लिए 15 अगस्त 2017 से मुख्यमंत्री टोल–फ्री हेल्पलाइन नंबर 181 शुरू हो गई हैं.

इसके माध्यम से एक ओर जहां समस्याओं को शुरुआती स्तर पर ही सुलझाने के प्रयास होते हैं, वहीं उच्च स्तर पर उसकी मॉनिटरिंग भी की जाती है. छोटी–छोटी समस्याओं के निस्तारण के लिए अब आम लोगों को विभागों और अधिकारियों के चक्कर नहीं लगाने होते हैं

इस हेल्पलाइन के जरिए आम लोगों की समस्याओं का निस्तारण महज एक कॉल के जरिए किया जाता है.

शिकायतकर्ता को मुख्यमंत्री हेल्पलाइन नंबर 181पर कॉल कर अपनी शिकायत को दर्ज करना होता है. शिकायत दर्ज होते ही शिकायतकर्ता / परिवादी के मोबाइल पर शिकायत का नंबर और संबंधित विभाग को भेजे जाने का मैसेज आता है. इसके बाद संबंधित विभाग अथवा अधिकारी शिकायतकर्ता से संपर्क करते हैं और उसकी समस्या दूर करते हैं .

यदि सम्बंधित विभागों द्वारा गुमराहपूर्ण जबाब दिया जाता है और आपके पास मोबाइल पर मेसेज आता है कि आपकी शिकायत का आंशिक निस्तारण कर दिया गया है तो गूगल पर Rajasthan Sampark Grievance Status डालकर जबाब चैक कर सकते हैं अथवा 181से शिकायत का फीडबैक लेने के लिए आपके पास कॉल आएगा तो आपको जबाब के आधार पर संतुष्ट या असन्तुष्ट बोलना हैं.

यदि 181से कॉल या मैसेज नहीं भी आता है और की गयी कार्यवाही से आप असंतुष्ट हो तो आप स्वयं भी 181पर कॉल करके और उस शिकायत का नंबर बताकर असंतुष्टि जाहिर करते हुए उच्च स्तर पर कार्यवाही के लिए पुनः (Reopen करवा सकते हैं) भिजवा सकते हैं, यह प्रोसेस आपको तब तक अपनानी है जब तक कि आपकी शिकायत का पूर्ण समाधान नहीं हो जाए।

181पर गांव के विकास से संबंधित शिकायत दर्ज कराने वाले व्यक्ति कृपया ध्यान दें : जिन साथियों ने पानी के संकट से सम्बंधित जो शिकायत दर्ज कराई हैं वो अगर गलत विभाग में चली गई तो उन पर कोई कार्यवाही नही होगी

SBGBT आपको सूचित कर रही हैं कि गॉवो में पानी से संबंधित शिकायतें ग्रामीण विकास विभाग (ग्राम पंचायत) में ही दर्ज करवाये न कि PHED विभाग में जोकि सिर्फ कस्बों और शहरों में पेयजलापूर्ति करता है हम एक बार और आप लोगो को सूचित कर देते है कि गॉवो में पेयजलापूर्ति जनता जल योजना के तहत ग्राम पंचायत ही करती है।

आपको टॉल फ्री नंबर वालो से घबराने की जरूरत नही है कोई भी 12वी पास या स्नातक धारी जो कंप्यूटर और टाइपिंग की जानकारी रखता है उनको सरकार ने ठेके पर रखा हुआ है इसलिए उनको विभागों की ज्यादा जानकारी नही है उनका काम सिर्फ शिकायत दर्ज करना होता है इसलिए आपको जोर देकर उनको स्पष्ट रूप से बताना पड़ेगा कि हमारे गॉवो में पेयजलापूर्ति जनता जल योजना के तहत ग्राम पंचायत करवाती है जो ग्रामीण विकास विभाग के अंतर्गत आता है हमारी शिकायत PHED विभाग में बिल्कुल नही भेजनी है।

ऐसे ही गॉवो में आंतरिक सड़क या इंटरलॉकिंग का कार्य, सामुदायिक भवन, छोटे छोटे तालाब, स्ट्रीट लाइट, खेल मैदान, सफाई कार्य ये सारे कार्य ग्राम पंचायत (ग्रामीण विकास) के अधिकार क्षेत्र में आते है इसलिए आपको शिकायत करते समय टॉल फ्री नम्बर वालो को जोर देकर स्पष्ट रूप से विभाग का सही चयन करवाना हैं ताकि शिकायत का उचित समाधान (निस्तारण) हो सकें.

सार्वजनिक महत्त्व की समस्याओं को 181अथवा राजस्थान संपर्क पोर्टल पर दर्ज करवाना

दोस्तों ! हमारे गॉवो में जल स्तर बहुत नीचे चला गया है, आगामी वर्षों में हमें पानी की और गंभीर समस्या का सामना करना पड़ सकता है द्य इसलिए हमें प्रशासन के सहयोग से उचित जगहों पर बर्षा जल संग्रहण के लिए छोटे छोटे एनीकट (तालाब) बनाये जाने अतिआवश्यक है ताकि कुओं और ट्यूबबेल में जल स्तर बना रहे इसलिए सभी कर्मठ युवाओं से निवेदन है कि (1) ''छोटे–छोटे एनीकट (तालाब) की टोल फ्री नंबर 181पर मांग करें और ग्राम पंचायत के जरिये मनरेगा के तहत कार्य स्वीकृत करवाने की डिमांड रखें और टॉल फ्री नंबर 181पर विभाग का नाम ग्रामीण विकास विभाग (मनरेगा) बताना है । इसके अलावा ग्राम सभा की मीटिंग में छोटे छोटे एनीकट या तालाब जहाँ जल संग्रहण हो सके उन सभी जगहों पर निर्माण के लिए ग्राम पंचायत के वार्षिक प्लान में उक्त कार्य सम्मिलित करवायें। ग्राम पंचायत स्तर पर किसी कारणवश उचित कार्यवाही नही होने पर गॉव से कमिटी पदाधिकारी या गॉव वाले ठक्क पंचायत समिति और सीईओ जिला परिषद को लिखित पत्र दे सकते हैं, यहाँ भी संतोषजनक / उचित कार्यवाही नही

होने पर CM व DM तक भी अपनी शिकायत दर्ज करा सकते हैं ।

सरकारी कामकाज में कई बार थोड़ा समय लग सकता है, 4–6माह भी लग सकते हैं, जब तक अपनी मांग का उचित निस्तारण नहीं हो पाए तब तक लगातार सारे चौनलों पर फॉलोअप करते रहो सफलता जरूर मिलेगी।

http%//mjsa-water-rajasthan-gov-in/mjsa/form&18&a&report&village&wise-html इस लिंक पर जाकर आप अपने ग्राम पंचायतों में मुख्यमंत्री जल स्वावलंबन अभियान के तहत होने वाले कार्यो की सूची देख सकते है।

सार्वजनिक वितरण प्रणाली में पारदर्शिता

गांवों में अक्सर राशन डीलरों द्वारा APL, BPL और अंत्योदय अन्न योजना के राशन वितरण में मनमानी और धांधली की जाती है। सरकार द्वारा सभी श्रेणी के राशन कार्ड धारकों को नियमित रूप से नियमानुसार गेंहू, चीनी और केरोसीन उपलब्ध कराया जाता है। लेकिन, गॉवो में ज्यादातर गरीबों को राशन से वंचित कर दिया जाता है, ग्रामीण भी आपसी फूट के कारण इस अन्याय के विरुद्ध आवाज नही उठा पाते हैं। राशन डीलरों द्वारा गॉव वालो की अज्ञानता और फूट का लाभ उठाया जाता है।

इसलिए हम आपको इस लेख में यही बताने वाले है कि आप कैसे ऑनलाइन अपने राशन कार्ड की पात्रता चेक कर सकते हैं। आप ऑनलाइन Rajasthan Ration Card List देख सकते हैं और खुद के राशन कार्ड में प्रत्येक माह कितना वितरण और कब–कब हुआ ये सब देख सकते है, साथ में राशन डीलर को प्रत्येक माह के दौरान आवंटन होने वाले राशन और स्टॉक को भी चौक कर सकते है।

इसके लिए पहले आपको राजस्थान सरकार का खाद एवं रसद विभाग की ऑफिसियल वेबसाइट http%//food-raj-nic-in को ओपन करना होगा। इसके बाद आपको Report of NFSA and non NFSA Beneficiary के लिंक पर क्लिक करना होगा ।

लिंक पर क्लिक करने के बाद एक नया विंडो खुलेगा जिसमे आपको NFSA की सूची दिखाई देगी ।

इसके बाद आपको अपने डिस्ट्रिक्ट को सेलेक्ट करना होगा और आपको अपना एरिया सिलेक्ट करना है

इसके बाद आपको अपने FPS शॉप होल्डर के नाम या उसके कोड से अपने इलाके का राशन कार्ड का लिस्ट खोजना हैं ।

शिकायत कैसे दर्ज करें

अगर कहीं भी आपको धांधली नजर आती है तो आप टॉल फ्री नंबर 181पर शिकायत दर्ज कर सकते है अगर समुचित सुनवाई नही हो तो केंद्र में CPGRAM ऑनलाइन पोर्टल पर भी PDS विभाग में ऑनलाइन शिकायत दर्ज कर सकते है।

मनरेगा ग्रामीण विकास और रोजगार की कुंजी

सोच बदलो गांव बदलो अभियान का एक उद्देश्य सरकारी योजनाओं और सरकार के प्रयासों के विषय में आमजन को जागरुक करना है तथा योजनाओं का लाभ आम जन तक पहुंचाना है। टीम का मानना है कि सरकार के द्वारा अथक प्रयास किए जा रहे हैं परंतु सरकारी योजनाओं में जनसहभागिता और उनके प्रति जागरूकता के अभाव के कारण विकास का लाभ लोगों तक नहीं पहुँच पाया है।

महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम (मनरेगा/MNREGA) भारत में लागू एक रोजगार गारंटी योजना है, जिसे 25 अगस्त 2005को विधान द्वारा अधिनियमित किया गया। यह योजना प्रत्येक वित्तीय वर्ष में

किसी भी ग्रामीण परिवार के वयस्क सदस्यों को 100दिन का रोजगार उपलब्ध कराती है।

जॉब कार्ड धारक व्यक्ति प्रपत्र फॉर्म नंबर 6भरकर ग्राम पंचायत सरपंच या सचिव से पावती लेकर मनरेगा में रोजगार के लिए आवेदन कर सकता है। मनरेगा से गांवों में एक तरफ लोगो को रोजगार मिलता है, जिसमे लगभग 150 से 200 रुपये प्रतिदिन मजदूरी मिलती है और दूसरी तरफ गॉव में विकास के कार्य जैसे ग्रेवल सड़क, इंटरलॉकिंग ,सामुदायिक भवन, छोटे–छोटे तालाबों और एनीकटों का निर्माण,खेल मैदान की चारदीवारी,शमशान घाट जैसे कार्य कराये जाते है। मनरेगा को यदि सही अर्थों में लागू किया जाए तो गांव में रोजगार और विकास की तस्वीर बदल सकती है।

18001806127 इस टोल फ्री नंबर पर कोई भी व्यक्ति कॉल करके मनरेगा में कार्य की मांग कर सकता हैद्य इस टॉल फ्री नंबर पर आपको जॉब कार्ड नंबर के लास्ट की डिजिट बतानी होती है तत्पश्चात मनरेगा में कार्य की मांग कर सकते है। जरूरतमंद लोग इस टोल फ्री पर अपने अपने मोबाइल से कॉल कर सकते हैं, मनरेगा कॉल सेंटर के कर्मचारियों द्वारा कार्य मांगने का समय व मस्टरोल स्टार्ट होने का समय पूछा जायेगा। मस्टरोल शुरू होने की दिनांक सबको एक ही चयन करनी है ताकि सरकार ज्यादा लोगों द्वारा काम की डिमांड होने पर जल्द उस तरफ ध्यान दे सके। कम से कम 100लोगो की डिमांड होनी चाहिए। बस आपको उपर्युक्त प्रक्रिया का पालन करना होगा।

मनरेगा में जागरूकता का आगाज आप सबको करना पड़ेगा तभी लोगों में जागरूकता बढेगी और फिर ये लोग घर बैठे टोल फ्री नंबर पर कॉल करके मनरेगा में रोजगार के लिए आवेदन कर सकते है।

अगर किसी भी व्यक्ति को 15 दिन के अन्तर्गत रोजगार नहीं मिले तो बेरोजगारी भत्ता के लिए ग्राम सचिव या सरपंच के यहाँ लिखित आवेदन कर सकता है।

इसके अलावा टोल फ्री नंबर 181पर कॉल करके मनरेगा में रोजगार नहीं मिलने कीशिकायत दर्ज करवा सकता है। http%//mnregaweb2-nic-in/netnrega/homestciti-aspÛ\state_code¾27&state_name¾RAJASTHAN

उपरोक्त लिंक पर क्लिक कर गॉवों में ग्राम पंचायत द्वारा मनरेगा के तहत किये गए विकास कार्यो से सम्बंधित पूर्ण जानकारी और मनरेगा से संबंधित कोई भी जानकारी निम्नलिखित रूप से हासिल की जा सकती है। गूगल पर Narega home page सर्च कर सकते है फिर चरणबद्ध तरीका से क्लिक करते जाइए टॉप पर - State पर क्लिक करें Rajasthan district panchayat samiti gram panchayat इसके बाद एक न्यू विंडो ओपन होगी, जिसमें आप अपने ग्राम पंचायत के जॉब कार्ड धारक के बारे में जानकारी ले सकते हैं, ग्राम पंचायत में लोगों को मिलने वाले रोजगार और भुगतान से सम्बंधित जानकारी, किसी भी वित्तीय वर्ष में होने वाले कार्यो की वर्तमान स्थिति और आवंटित बजट और खर्चो की डिटेल, किसी कार्य मे उपयोग में लिया गया मैटेरियल, कैश बुक, मस्टरोल और मनरेगा मजदूरो की उपस्थिति और मेजरमेंट बुक इत्यादि।

इस प्रकार से मनरेगा से संबंधित विस्तृत जानकारी उपयुर्क्त वेबसाइट पर जाकर जुटा सकते है।

सोच बदलो गांव बदलो टीम को यह पूरा विश्वास है कि हमारे स्वयं के प्रयासों से ही हमारी स्थिति में बदलाव आ सकता है। सरकार के प्रयासों को हमें ताकत देने की आवश्यकता है। प्रशासन के साथ कंधे से कन्धा मिलाकर चलने की जरुरत है। लोगों में जागरूकता पैदा करने की आवश्यकता है। आओ, मिलकर सोच बदलें और ग्रामीण भारत का इतिहास हम स्वयं लिखें।

नीचे दिए गए लिंक से आप ग्राम पंचायत द्वारा आपके गॉव में कराये गए कार्यों को देख सकते है, बजट आवंटन से लेकर कई तरह की जानकारी यहाँ से प्राप्त कर सकते हैं:– इसके लिये आप पंचायतीराज मंत्रालय की आधिकारिक

वेबसाइट http%//www-planningonline-gov-in पर जाकर पंचायत एक्टिविटी प्लान रिपोर्ट, पंचायत डवलपमेंट प्लान, स्वीकृत प्लान, प्लान status रिपोर्ट इत्यादि के बारे में विस्तार से जानकारी हासिल कर सकते हैं।

http%//www-planningonline-gov-in/HomeAction-do\method¾getLoginForm

इस लिंक साइट का नाम (plan plus2.0) पर क्लिक करने पर एक नई विंडो पर नीचे नीचे सिटीजन सैंक्शन में approved action plan by Gram panchayat पर क्लिक करना है

प्लान ईयर पर क्लिक के बाद स्टेट पर क्लिक करने के बाद डिस्ट्रिक्ट select करें

ग्राम पंचायत कॉलम पर क्लिक करें ब्लॉक और ग्राम पंचायत सलेक्ट कर आप अपने अपने ग्राम पंचायते के approved वार्षिक प्लान चैक कर सकते है, ग्राम पंचायत को मिलने वाली वार्षिक खर्चे व होने वाले कार्यो की जानकारी हासिल कर सकते है।

यह देखकर हैरान होने वाली बात है कि एक छोटे से भी काम के लिए सरकार कितना पैसा देती है । अब हमको जागरूक होने की जरूरत है। सभी जानकारी सरकार ने ऑनलाइन वेबसाइट पर उपलब्ध करा दी है बस हमे उन्हें जानने की जरूरत है, यदि हर गॉव के सिर्फ 4–5 युवा भी इस जानकारी को अपने गॉव के लोगो को बताने लगे तो समझ लो 50 प्रतिशत भ्रष्टाचार तो ऐसे ही कम हो जाएगा।

यदि आप ग्रामसभा की बैठक में अपने गांव की किसी समस्या को नहीं रख सके तो परेशान होने की आवश्यकता नहीं है। अब (plan plus 2.0) वेबसाइट पर आपको Citizen section के नीचे Add Suggestions पर क्लिक करने परएक ऐसा विंडो खुलेगाजिस पर आप अपनी मनमाफिक योजना के क्रियान्वयन का सुझाव सरकार को दे सकते हैं। उस योजना को जिला योजना समिति के पास रखा जाएगा और संभव है सरकार से राशि आवंटित होते ही आपकी समस्या का निदान कर दिया जाए।

इसलिए आप सभी अपने अपने गांव में विभिन्न वित्तीय वर्षों में हुये कार्यो को जरूर देखें और इस लिंक (प्लान प्लस) को देश के हर गॉव तक भेजने की कोशिश करें ताकि गॉव वाले अपना अधिकार पा सके।

उपर्युक्त लिंक के अलावा आप http%//rdprwms-raj-nic-in/Pdmn/districtwisesummary-aspx लिंक के माध्यम से अपने जिले में सांसद स्थानीय क्षेत्र विकास कार्यक्रम, विधायक स्थानीय क्षेत्र विकास कार्यक्रम, डांग क्षेत्रीय विकास कार्यक्रम और गुरु गोवलकर जन भागीदारी योजना इत्यादि योजनाओं के अंतर्गत किए गए विभिन्न कार्यों के विषय में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। जैसा कि सबको विदित है कि किसी भी संसदीय क्षेत्र के सांसद महोदय एक वर्ष के दौरान 5 करोड़ की राशि के विकास कार्य अपने क्षेत्र में करा सकते हैं। इसी प्रकार विधायक महोदय (राजस्थान विधानमंडल) 1 वर्ष के दौरान अपने विधानसभा क्षेत्र में 2 करोड़ के विकास कार्य करा सकते हैं। इसी प्रकार ग्राम पंचायत को एक वर्ष के दौरान विभिन्न स्रोतों से अपनी ग्राम पंचायत में 60लाख रुपये विकास कार्यों के लिए मिलते हैं । सांसद निधि तथा विधायक निधि के विकास कार्य सामान्यतः पंचायत समिति या ग्राम पंचायत द्वारा संपन्न किए जाते हैं । उदाहरण के लिए पेयजल संकट के लिए करौली जिले में सांसद महोदय द्वारा वित्त वर्ष 2017–18में प्रत्येक ग्राम पंचायत में टैंक पेयजल वितरण, कषि कार्य एवं मवेशियो को जल उपलब्धं कराने हेतु वाटर टैंकर, माउन्टेगड ऑन एग्रीकल्चर ट्रेक्टर टेलर (क्षमता 5000 लीटर) द्वारा पेयजलापूर्ति की गई। इसके अंतर्गत 1 लाख 66 हजार रुपये ग्राम पंचायतों को दिए गए थे।

यह हमारा संवैधानिक कर्तव्य है कि हमें यह जानकारी हो कि हमारी ग्राम पंचायत में सांसद निधि, विधायक निधि और अन्य योजनाओं में कौन–कौन से कार्य अनुमोदित हुए हैं। अनुमोदित कार्यों के लिए कितना बजट सरकार द्वारा आवंटित किया गया है। अनुमोदित कार्यों में से कितने कार्य पूर्ण हुए हैं। ग्राम सभा में इन सभी विषयों पर विस्तृत चर्चा

होनी चाहिए तथा ग्राम पंचायत द्वारा किए गए कार्यों का विस्तृत ब्यौरा ग्राम सभा के समक्ष प्रस्तुत किया जाना चाहिए। हमारी उदासीनता और निष्क्रियता ही हमारे पिछड़ेपन के लिए जिम्मेदार है। जन–जागरूकता और आमजन की सक्रिय भागीदारी द्वारा ही हम, विकास के लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं। सोच बदलो गांव बदलो टीम द्वारा जन–जागरूकता का अभियान निरंतरता के साथ चलाया जा रहा है। इस लेख के माध्यम से हम सभी साथियों से अपील करते हैं कि इस जन–जागरूकता की मुहिम में आप सभी शामिल हों ताकि हम सब मिलकर देश को उन्नति के रास्ते पर ले कर जाएं।

प्रधानमंत्री कार्यालय को सीधे ऑनलाइन शिकायत दर्ज कराने का तरीका

https%//pmopg-gov-in/pmocitizen/Grievancepmo-aspx इस लिंक पर क्लिक करने पर या फिर गूगल पर interact with PM टाइप कीजिए तो एक विंडो ओपन होगी जिसमेटॉप पर राइट साइड में Write to Prime Minister लिखा हुआ होगा, आपको उस पर क्लिक करना है, इसके बाद आपको अपनी पूरी details भरनी होती है, शिकायत का विवरण लिखें। इसमे शिकायत के साथ डॉक्यूमेंट अपलोड भी कर सकते है सारे कॉलम भरने के बाद अंत मे आप सबमिट कर दीजिए इसके बाद एक शिकायत नंबर आएगा।

राष्ट्रपति सचिवालय में ऑनलाइन शिकायत दर्ज कराने का तरीका

http%//helpline-rb-nic-in/GrievanceNew-aspx आप इस लिंक पर क्लिक कीजिए या फिर गूगल पर President helpline type कीजिए इसके बाद Lodge Grievance पर क्लिक कीजिए, जरुरी details भरने के बाद में शिकायत विवरण के साथ डॉक्यूमेंट भी अपलोड कर सबमिट कर दीजिए, फिर एक शिकायत नंबर आएगा । इस प्रकार आप सीधे राष्ट्रपति महोदय के पास ऑनलाइन शिकायत कर सकते है।

CPGRAM पोर्टल पर ऑनलाइन शिकायत दर्ज कराने का तरीका

सबसे महत्वपूर्ण CPGRAM पोर्टल पर आप केंद्र के सभी विभागों में अपनी समस्याओं के लिए ऑनलाइन शिकायत दर्ज कर सकते हैं। https%//pgportal-gov-in/ इस लिंक पर जाकर या गूगल पर CPGRAMS HOME टाइप करें।

इस साइट के होम पेज पर यूजर आईडी व पासवर्ड लिखा हुआ होगा इनके नीचे नीचे Register पर क्लिक कर अपने आप को रजिस्टर करें। जरुरी डिटेल्स भरने के बाद सबमिट करें, आपने जो मेल आईडी register करते समय दी है उसी मेल आई डी पर एक लिंक आएगा, उस लिंक पर क्लिक करने के बाद आपके मोबाइल नंबर (जो आपने रजिस्टर करते समय दिया था) पर एक OTP आएगा, उस OTP को दर्ज करने के बाद एक नई विंडो ओपन होगी, जहाँ आपको यूजर आईडी और पासवर्ड बनाने हैं ।

उस नई विंडो पर User ID और पासवर्ड भरने के बाद आप इसको सबमिट कर दीजिए इसके बाद आपके पास Successful Registration का मैसेज आएगा। फिर आप अपने यूजरआईडी और पासवर्ड से CPGRAMS होम पेज पर साइट ओपन करें वहाँ आपको Lodge Grievance पर क्लिक करना होगा

यदि केंद्र सरकार से संबंधित है तो सेंट्रल गवर्मेंट पर क्लिक करने पर केंद्र सरकार के सभी विभाग आएंगे।

यदि राज्यों से संबंधित है तो state government पर क्लिक कीजिए। इस प्रकार वहाँ पर शिकायत के विवरण के साथ डॉक्यूमेंट भी अपलोड कर शिकायत दर्ज करा सकते हैं।

– दिनेश सुनीपुर
मनीराम
SBGBT कार्यकर्ता

□□□□

'उत्थान'

नींव की ईंट कब कहती हैं उसकी कहानी बने
उस पर खड़ी इमारत ही उसकी जीवन गाथा है
इस दौर में सब, इमारत और कँगूरा बनने की होड़ में हैं
'नींव की ईंट' बिरले ही बनना चाहते हैं
लेकिन आज हमारे समाज की जरूरत हैं 'नींव की ईंट'
जो सकारात्मकता से प्रेरित हो
रचनात्मकता से ओतप्रोत हो
मानवीय मूल्यों का समावेश हो
नहीं रखता मन में द्वेष हो
वैचारिक जागरूकता से भरपूर हो
व्यक्ति पूजा से दूर हो
नहीं पालता स्वार्थ हो
जीता जो यथार्थ हो
जरूरत हैं नींव की ईंट बन सकने वाले युवाओं की,
जो
नहीं पालते कंगूरा बनने की इच्छा
और धरातल पर करते है कार्य ताकि
जिन अभावों में वो खुद जिए हैं
न जीना पड़े किसी और को
और पहले से बेहतर करने के
बुलंद इरादों के साथ लौटा सके समाज को
वह अंश, जो पाया हैं समाज से
आज 'सोच बदलो गाँव बदलो टीम' बन रही है नींव की ईंट
SBGBT कहने में नहीं, करने में यकीन रखती है
ताकि
वंचित बच्चों का 'उत्थान' हो
सद विचार आत्मसात हो
शिक्षा का प्रसार हो
हर गाँव–शहर स्मार्ट हो
कर्तव्य के प्रति, जन जागरूक हो
आमजन, विकास में भागीदार हो
और राष्ट्र–निर्माण का सपना साकार हो

आइए, नए समाज के निर्माण में नींव की ईंट बने
आइए, 'सोच बदलो गाँव बदलो टीम' का हिस्सा बने

– हरि मर्मट

स्वच्छ लोकतंत्र की आवश्यकता – सुरेश प्रभु, सुरारी कलां

विकास के लिए 'स्वच्छ लोकतन्त्र' की आवश्यकता

मानव के विकास की एक लंबी प्रक्रिया रही है। ऐसा माना जाता है कि धरती पर सबसे पहले जलीय जीव आये, उसके बाद में प्रक्रियात्मक रूप से अन्य जीवों के साथ में वानरों की उत्पत्ति हुयी और वानरों से मानव की उत्पत्ति हुयी। फिर धीरे धीरे कई सभ्यताओं का जन्म हुआ और एक सभ्य समाज बना। समय के साथ विभिन्न सामाजिक संगठनों का विकास हुआ और कई प्रशासनिक प्रणालियों का जन्म हुआ, फिर इसी क्रम में आधुनिक लोकतन्त्र की उत्पत्ति हुयी।

लेकिन इस पूरी प्रक्रिया में लोकतन्त्र अभी भी अधूरा है। जिसे मैं "स्वच्छ लोकतन्त्र" नाम देता हूँ। आज इसकी महती आवश्यकता है। इसको विकसित करने में हमारी "सोच बदलो गाँव बदलो (SBGBT) टीम मुख्य भूमिका निभा रही है।

स्वच्छ लोकतन्त्र में समरसता की भावना, पारिवारिक माहौल, स्वच्छ और उच्च कोटि की राजनीति, व्यसनों का अंत और व्यावसायिक के साथ–साथ संस्कारयुक्त शिक्षा इत्यादि आते हैं। इसमें व्यक्ति 'वास्तविकता' में अपने निर्णय बिना किसी स्वार्थ, बिना किसी दबाव के, अपने परिवार, समाज, गाँव व देश की भलाई को देखते हुये लेता है।

वर्तमान समय में ग्रामीण सामाजिक व्यवस्था में कुछ चिंताजनक तत्व मौजूद हैं–

निर्धनता हमारे गावों की बहुत बड़ी समस्या है । आज भी एक सामान्य व्यक्ति साहूकारों से कर्ज लेकर उसके दबाव में कार्य करता है, इसके बावजूद कि उसको पता है कि वह पैसा ब्याज सहित लौटा रहा है फिर भी वह कर्जदार उस दबाव में जीता है जैसे वह साहूकार का चाकर हो।

सरकारी सुविधाओं का 80 प्रतिशत लाभ प्रभावशाली और पैसे वाले व्यक्ति बड़ी आसानी से उठाते हैं, वहीं एक आम आदमी भ्रष्टाचार और नियमों की जटिलता में बंधकर इनके लाभ से वंचित रह जाता है।

जागरूकता के अभाव में ग्रामीण, गांव से जुड़ी विभिन्न योजनाओं में सरकार ने कितना पैसा स्वीकृत किया और कितना खर्च किया यह तक नहीं जान पाते। सरकारी तंत्र में पारदर्शिता की कमी एक बड़ी समस्या है।

आज भी गावों में जाति व्यवस्था इतनी कठोर है कि पिछड़ी और दलित जातियों को हीन भावना से देखा जाता है।

गावों के वर्तमान परिवेश में गंदी राजनीति का खेल चलता है जैसे– परिवार में फूट डालना, भाई से भाई को लडाना, एक दूसरे के प्रति अंदरूनी वैमनस्यता रखना इत्यादि।

गावों में ज्यादातर कर्मचारी वर्ग की निष्क्रियता भी एक चिंताजनक विषय है, जो केवल अपने परिवार तक सीमित हैं, जब पढ़ा लिखा हुआ समझदार व्यक्ति ही गांव के विकास में रुचि नहीं दिखाएगा तो भला हम भोले भाले ग्रामीणों से क्या उम्मीद कर सकते हैं।

यदि देश की बात की जाए तो ज्यादातर राजनीतिक दल जनता को गुमराह करके, झूठे वादे कर वोट प्राप्त करते हैं और चुनाव के बाद वही जनप्रतिनिधि जनता के प्रति अपनी कोई जबावदारी नहीं समझते हैं। यही कारण है कि

संवैधानिक संस्थाएं जैसे– न्यायपालिका, चुनाव आयोग इत्यादि भी अपना कार्य स्वतंत्रता पूर्वक नहीं कर पाती हैं। वर्तमान मीडिया में भी पक्षपात की बू आती है। बेरोजगार युवाओं के साथ धोखाधड़ी और सरकारी भर्तियों में निष्पक्षता की कमी, आज एक आम बात है। वर्तमान में, देश में जो कुछ भी घटित हो रहा है, वह स्वच्छ लोकतंत्र का हिस्सा माना जा सकता।

भारत में पुरातन काल से आर्थिक और नैतिक व्यवस्था ग्रामीण परिवेश के मानवीय मूल्यों पर निर्भर रहती आई है। अतः लोकतंत्र की स्वच्छता बनाये रखने के लिए हमें गावों से ही शुरुआत करनी होगी। अपने गाँव व समाज के हित के लिए गाँव के कर्मचारी वर्ग एवं प्रबुद्ध व्यक्तियों को आगे आना होगा और सरकारी तंत्र को भी पारदर्शिता के लिए और अधिक प्रयास करने होंगे, तभी ग्रामीण विकास और समरसता की कुछ झलक नजर आएगी। उन राजनीतिज्ञों से भी दूरी बनाने की जरूरत है जो जोड़ने की नहीं, बल्कि ताड़ने की राजनीति करते हैं। ग्रामीणों और गरीब लोगों में सरकारी योजनाओं के प्रति जाग्रति लाना जरूरी है तथा सरकारी सुविधाओं को बिना किसी भेदभाव के समानता के साथ पूरे गाँव में प्रसारित करना जरुरी है। उन व्यक्तियों में जाग्रति लानी होगी जो कर्जदार हैं क्योंकि वे लोग मूलधन के साथ ब्याज भी देते हैं फिर भी उन पर साहूकार द्वारा अहसान जताया जाता है। जनता और जनप्रतिनिधियों के बीच एक विश्वास होना जरूरी है तथा जनता की जनप्रतिनिधियों तक पहुँच होना भी परम आवश्यक है। वर्तमान परिदृश्य में सभी बेरोजगारों को सरकारी नौकरी मिलना मुश्किल नजर आता है। इसलिये हमारे युवा बेरोजगार साथियों को प्राइवेट सैक्टर की महत्ता को समझना चाहिए, जिससे बेरोजगारी की समस्या से कुछ हद तक निजात मिल सकती है। उपरोक्त वाक्यांश का एक ही सार है – "लोगों को अपने अधिकारों के प्रति आत्मविश्वास से भरी जागरूकता होना आवश्यक है"

हमारे युवाओं की जागरूकता में ही हमारे गावों की उन्नति छिपी हुई है, युवा पीढ़ी की सक्रियता कारण समाज में बहुत बड़ा बदलाव ला सकती है। सोशल मीडिया भी सिर्फ फोटो शेयर या लाइक करने का प्लेटफॉर्म नहीं है, इससे वैचारिक क्रांति और धरातल पर बदलाव भी लाया जा सकता है। इसका जीता जागता उदाहरण है –SBGBT टीम।

'अगर आगे बढ़ना है, तो जागना ही पड़ेगा'

"अपने गाँव, समाज, और देश के सामाजिक, आर्थिक और नैतिक विकास के लिये 'स्वच्छ लोकतंत्र' सर्वोच्च व्यवस्था है।"

– सुरेश चंद मीना 'प्रभु'

SBGBT कार्यकर्ता

□□□□

वन अधिकार

वन अधिकार अधिनियम 2006 FOREST RIGHT ACT 2006 (FRA)

भारत की संसद ने एक ऐतिहासिक कानून पारित करते हुए देश के आदिवासियों के साथ हुए ऐतिहासिक अन्याय की भरपाई करने का ऐलान किया था, जिसके अंतर्गत उन्हें वन भूमि का अधिकार प्रदान किए जाने की घोषणा की गई थी। सन् 2008 में गजट नोटिफिकेशन के जरिये इस कानून को पूरे देश में लागू किया गया। "अनुसूचित जनजाति एवं अन्य परंपरागत वन निवासियों के वन अधिकारों की मान्यता अधिनियम 2006 नामक इस कानून से यह उम्मीद की गई थी कि सदियों से जंगल जमीन पर काबिज आदिवासी समुदाय को उनके पारंपरिक हक से वंचित नहीं किया जाएगा, बल्कि उन्हें वनों में अपने आजीविका के साधनों का सतत विकास करते हुए सामुदायिक जीवन जीने की आजादी होगी। इसके अंतर्गत 13 दिसम्बर 2005 से पहले वन भूमि पर काबिज सभी आदिवासी परिवारों को वन भूमि पर अधिकार दिया जाएगा और उन्हें वन भूमि से बेदखल नहीं किया जाएगा।

वन संबंधी नियमों का एक महत्वपूर्ण दस्तावेज है जो 18 दिसम्बर 2006 को पास हुआ। यह कानून जंगलों में रह रहे लोगों के भूमि तथा प्राकृतिक संसाधनों पर अधिकार से जुड़ा हुआ है, जिनसे औपनिवेशिक काल से ही उन्हें वंचित किया हुआ था। इसका उद्देश्य जहां एक ओर वन संरक्षण है,वहीं दूसरी ओर यह जंगलों में रहने वाले लोगों को उनके साथ सदियों तक हुए अन्याय की भरपाई का भी प्रयास है। इस कानून के मुख्य प्रावधान निम्न है:

यह जंगलों में निवास करने वाले या वनों पर अपनी आजीविका के लिए निर्भर अनुसूचित जनजातियों के अधिकारों की रक्षा करता है।

यह उन्हें चार प्रकार के अधिकार प्रदान करता है:–

1. जंगलों में रहने वाले लोगों तथा जनजातियों को उनके द्वारा उपयोग की जा रही भूमि पर उनको अधिकार प्रदान करता है।
2. उन्हे पशु चराने तथा जल संसाधनों के प्रयोग का अधिकार देता है।
3. विस्थापन की स्थिति में उनके पुनर्स्थानापन का प्रावधान करता है।
4. जंगल प्रबंधन में स्थानीय भागीदारी सुनिश्चित करता है।

जंगल में रह रहे लोगों का विस्थापन केवल वन्यजीवन संरक्षण के उद्देश्य के लिए ही किया जा सकता है, यह भी स्थानीय समुदाय की सहमति पर आधारित होना चाहिए। सूक्ष्म वन उपज पर ग्राम सभा का अधिकार रहता है।

वन अधिकार अधिनियम 2006 स्थानीय लोगों का भूमि पर अधिकार प्रदान कर वन संरक्षण को बढ़ावा देता है। यह वन संरक्षण के लिए स्थानीय लोगों के विस्थापन को अंतिम विकल्प मानता है। विस्थापन की स्थिति में यह लोगों का पुनर्स्थापन का अधिकार भी प्रदान करता है। वन भूमि को अगर अन्य उद्देश्यों के लिए बदला जाना है, तो प्रत्येक मामले में ग्राम सभा द्वारा इसकी सिफारिश की जाती है, तभी ऐसी विकास परियोजनाओं की मंजूरी होगी।

ग्राम सभा को प्रक्रिया शुरू करने का अधिकार होगा जिसमे व्यक्ति के दावे की प्रकृति और सीमा निर्धारित करने के लिए सामुदायिक वन अधिकार या दोनों के लिए दिया जा सकता है। ग्राम सभा वन निवास अनुसूचित जनजाति और अन्य पारंपरिक जंगल इसके तहत अपने क्षेत्राधिकार की स्थानीय सीमाओं के भीतर निवासी दावा प्राप्त करके, उन्हें समेकित और सत्यापित करके और क्षेत्र को चित्रित करने वाला नक्शा तैयार करके जैसा कि निर्धारित किया जा सकता है और ग्राम सभा, तब, उस प्रभाव के लिए एक प्रस्ताव पारित करें और उसके बाद एक प्रतिलिपि बनाएँ और उप–मंडल स्तर समिति के लिए भेजे।

दावे के लिए त्रि–स्तरीय समिति

ग्राम सभा

उप–मंडल स्तर समिति

जिला स्तर समिति

मुख्य विशेषताएं

जंगल निवासी अनुसूचित जनजाति और अन्य परंपरागत वनवासियों को अधिकार दिए गए है।

इस कानून को एक "कैम्पेन (अभियान) मोड" (ढंग/रीति) में लागू किया गया और राज्यों को समयबद्ध तरीके से लाभार्थियों को वन अधिकार सौंपने और मान्यता देने की प्रक्रिया को पूरा करने हेतु विस्तृत मंत्रणा प्रदान की गयीः–

ग्राम सभा द्वारा गठित वन अधिकर समिति

परस्पर विरोधी दावों पर ग्राम सभा

उप संभागीय स्तरीय समिति और जिला स्तरीय समिति द्वारा निर्णय।

वन अधिकार :–

जंगलवासी अनुसूचित जनजाति और अन्य परंपरागत वनवासियों द्वारा निवास या जीविका के लिए स्वयं खेती करने के लिए व्यक्तिगत या सामूहिक अधिभोग के अधीन वन–भूमि को धारित करने और उसमें रहने का अधिकार।

वन संसाधनों पर नियंत्रण का अधिकार जिसमें स्वामित्व अधिकार के साथ गौण वनोपज के संग्रह, उपयोग और निपटान का अधिकार शामिल है।

निस्तार जैसे सामुदायिक अधिकार।

आदिम जनजातीय समूहों और ऐसे समुदायों जिन्हें अभी तक कृषि कार्य का ज्ञान नहीं है, को आवास अधिकार।

ऐसे सामुदायिक वन संसाधन को संरक्षित, पुनजीर्वित या प्रबंधित करने का अधिकार, जिसकी वे सतत उपयोग के लिए परंपरागत रूप से रक्षा और संरक्षण कर रहे हैं।

देश के अन्य भागों में वनाधिकारों में विवाद होने व उनकी ठीक से व्याख्या न होने के कारण विशेषकर वनवासी व आदिवासी समुदाय जीवनयापन के परम्परागत अधिकारों तक से वंचित हो गए। पर कई समूहों के व्यापक प्रयासों से देश में इन वंचित वर्गों के मौलिक हितों की रक्षा के लिये भारत सरकार ने 'अनुसूचित जनजाति व अन्य परम्परागत वनप्रवासी (अधिकारों की मान्यता) अधिनियम 2006जिसे संक्षेप में वन अधिकार कानून 2006 कहा जाता है।

एकमात्र वन अधिकार कानून 2006 एक ऐसा कानून बना है, जो पहली बार औपनिवेशिक काल से सरकार द्वारा वन–आश्रित समुदायों के अधिकारों को छीनने की चली आ रही परम्परा को उलट कर उनके पारम्परिक अधिकारों को उनके मूल रूप मे प्रतिस्थापित करने का प्रावधान करता है।

देश में आदिवासी आबादी में कईलाख परिवारों को उनकी जमीन के अधिकार पत्र प्रदान किए गए हैं, फिर भी कई लाख परिवारों को ही वन भूमि के अधिकार पत्र सरकार द्वारा नही दिए गए है और आज भी आदिवासी परिवार वन भूमि के बुनियादी हक से वंचित है और तमाम लोगो को इस अधिकार का आज भी पता नही है–

स्पष्ट रूप से यह अधिनियम वन विभाग व नौकरशाही के पास निहित वनों के सम्बध में प्रबन्ध व उपयोग के अधिकारों को कम कर स्थानीय निवासियों को हस्तान्तरित करता है।

यह बिन्दु भी महत्त्वपूर्ण है, कि आज के वैश्वीकरण के दौर में वन भूमि पर उद्योगों व कॉर्पोरेटों की नजर भी गढी है। स्थानीय निवासियों के परम्परागत अधिकारों को कानूनी मान्यता मिलने से इन्हें वन भूमि हस्तान्तरण में कठिनाइयाँ आना स्वाभाविक है। इसलिये कई प्रभावशाली वर्गों द्वारा वन अधिकार कानून 2006 को निष्क्रिय या प्रभावहीन करने के योजनाबद्ध प्रयास हो रहे हैं।

वन अधिकार के अनुसार वन पर अधिकार स्थानीय ग्राम सभा तय करेगी और वनों का प्रबंधन, संरक्षण और संवर्धन भी ग्राम स्तर पर गठित वन समितियों को ही निर्धारित करने होंगे। सरकार ने कानून बनाकर लोगों के अधिकार सुनिश्चित कर रखें है मगर अधिकारी इसे धरातल पर लागू नहीं होने दे रहे हैं।

नियमित होंगे तीन पीढियों के कब्जे

जिला परिषद व डीएलसी के कानून के अनुसार वन भूमि पर आश्रित 13 दिसंबर 2005 से पहले अगर किसी का तीन पीढियों से वन भूमि पर कब्जा हो तो वह नियमित होंगे, चाहे वह किसी भी प्रकार का जंगल क्यों न हो। इसके लिए कब्जाधारक का निर्धारित प्रपत्र पर अपना दावा संबंधित ग्राम सभा के समक्ष पेश करना होगा। इसी तरह सामुदायिक दावों को भी ग्राम सभा की मंजूरी के बाद उपमंडल स्तर समिति और जिला स्तर समिति को भेजा जाएगा। उन्होंने कहा कि वन अधिकार समिति की इजाजत के बिना किसी भी प्रकार का सामुदायिक दावे पारित नहीं किए जा सकते मगर प्रशासनिक अधिकारी संबंधित वन अधिकार समिति को विश्वास में लिए बगैर ही काम कर रहे हैं तो कानून प्रभावी तरीके से लागू नहीं हो सकता है।

नुक्कड नाटक कर बताए जाएँ वनाधिकार कानून

कलाकारों ने पंचायतों में आयोजित शिविरों में नुक्कड नाटक कर लोंगों को उनके वनाधिकारों और वन संरक्षण व संवर्धन के बारे में लोगों को गांव–गांव जाकर जागरूक किया जाना चाहिए। अभियान के सदस्य कलाकार गाँव, तहसील व जिले में जागरूकता शिविरों का आयोजन कर सकते हैं।

जन भागीदारी का अभाव

लोगों के वनाधिकारों को कानूनी मान्यता मिल चुकी है, इसलिये लोगों को अपनी बातें, विचार व आपत्तियाँ रखने के लिये एक बेहतरीन मंच मिल जाता है। जागरूकता अभियान की अलख के तहत तमाम संगठनों ने अभियान चला रखे हैं, जिसके तहत लोगों को वन अधिकार अधिनियम के बारे में जागरूक करने के लिए कई जगह जागरूकता शिविरों का आयोजन किया है। शिविर में स्थानीय लोगों को वनाधिकार कानून के बारे में जानकारी दी जाती है। शिविरों को संबोधित करते हुए कार्यकर्ताओं बताया जाता है कि वन अधिकार कानून इस देश का सबसे अच्छा कानून है। इस कानून में लोगों के अधिकार सुनिश्चित किए गए हैं, लेकिन यह कानून कागजों में सिमट कर नही रहना चाहिए। उप–मंडल स्तर समिति का मुख्य काम है, कि वनवासियों के बीच उद्देश्यों और प्रक्रियाओं के बारे में जागरूकता बढाएं, लेकिन ऐसा नही किया जा रहा है। यह अत्यावश्यक है, यदि किसी व्यक्ति के दावे के अंतिम निर्णय होने तक उस व्यक्ति को उस वन भूमि से बेदखल नही किया जा सकता है।

धौलपुर और करोली मे करीबन कई हजार बीघा वन भूमि पर कई दशकों से हजारों किसानों का कब्जा है, ये किसान दोनों जिलों में वन भूमि पर पट्टे लेने के हकदार हैं, जिसके लिए अभी तक कोई पहल सरकार या सामाजिक संगठन द्वारा नही हुई है.

ग्राम सभा के कार्य :

(अ) ग्रामीण द्वारा ही ग्राम सभा का गठन करना, वन अधिकारों की प्रकृति और सीमा निर्धारित करने की प्रक्रिया शुरू करना, उससे संबंधित दावों को प्राप्त करना और सुनना है।

(ब) वन अधिकारों के दावेदारों की एक सूची तैयार करना और इस तरह के विवरण वाले रजिस्टर को बनाए रखना।

(स) उचित अवसर देने के बाद रुचि रखने के वन अधिकारों पर दावों पर एक प्रस्ताव पारित करना!

संबंधित व्यक्तियों और अधिकारियों को उप–मंडल स्तर समिति के लिए अग्रेषित करना, ग्राम सभा को राज्य के अधिकारियों द्वारा आवश्यक सहायता प्रदान करना।

याद रहे, पिछले कुछ महीनों मे महाराष्ट्र मे ऐसे हकों के लिए जन आन्दोलन हुआ और सरकार ने वनाधिकारों की मांग को स्वीकार करते हुए 6 महीने मे ऐसे हकों को निबटाने का आश्वासन भी दिया। गौरतलब है कि धौलपुर और करोली मे अभी किसी भी किसान को जानकारी नही है और एक भी किसान को कोई पट्टा या कब्जा नही दिया गया है।

–रामेश्वर दयाल
खिन्नोट, धोलपुर
SBGBT कार्यकर्ता

सूचना का अधिकार कानून 2005

सूचना का अधिकार कानून, RTI Act, भारत की जनता को सरकार से सूचना पाने का अधिकार प्रदान करना है। सूचना का अधिकार के तहत देशवासियों को कानून के माध्यम से किसी भी विभाग, केन्द्र अथवा परियोजना से किसी भी प्रकार की सूचना प्राप्त करने का अधिकार प्राप्त हो गया है। सूचना का अधिकार अर्थात राईट टू इन्फारमेशन, (RTI)। सूचना का अधिकार से तात्पर्य है, सूचना पाने का अधिकार, जो सूचना अधिकार कानून लागू करने वाला राष्ट्र अपने नागरिकों को प्रदान करता है। सूचना अधिकार के द्वारा राष्ट्र अपने नागरिकों को अपनी कार्य और शासन प्रणाली को सार्वजनिक करता है।

'सूचना प्राप्त करने का अधिकार' से सम्बन्धित विधेयक संसद द्वारा पारित किया गया तथा इस विधेयक को 15 जून 2005 में राष्ट्रपति की स्वीकृति प्राप्त हुई थी। यह कानून 12 अक्टूबर 2005 को जम्मू और कश्मीर को छोड़कर पूरे देश में लागू हो गया।

सूचना का अधिकार कानून की आवश्यकता :

सरकार और अधिकारियों के कामकाज में सुधार लाने या पारदर्शिता लाने के लिए यह प्रयास बेहद आवश्यक था। देश में फैली भ्रष्टाचार और उच्च पद पर आसीन अधिकारियों में व्याप्त लाल फीताशाही पर नियंत्रण करने के लिए यह कदम उठाना अनिवार्य था। भ्रष्टाचार रूपी दीमक जो आज पूरे देश को खाए जा रहा था उससे देशवासियों को बचाने के लिए लोगों को कानून द्वारा सूचना प्राप्त करने का अधिकार एक ऐतिहासिक कदम साबित होगा।

इसके अंन्तर्गत की गई व्यवस्थाएं:

हर विभाग में एक लोक सूचना अधिकारी मनोनीत है जहाँ आपकी एप्लिकेशन जाती है। जबाब एक महीने में न मिलने या गलत जबाव मिलने पर प्रथम अपील अधिकारी नियुक्त किये हुए हैं, तो वहाँ पुनः अपील कर सकते है। किसी कारण प्रथम अपील अधिकारी के जबाव न मिलने या गलत जबाव मिलने पर आप केन्द्रीय सूचना आयोग नई दिल्ली में अपील कर सकते है।

अधिनियम में यह व्यवस्था की गई है, कि केन्द्र द्वारा एक केन्द्रीय सूचना आयोग का गठन किया जायेगा, जिसमें एक मुख्य सूचना आयुक्त तथा अधिक से अधिक केन्द्रीय सूचना आयुक्त होंगे। मुख्य सूचना आयुक्त तथा अन्य सूचना आयुक्तों की नियुक्ति के लिये एक समिति गठित की गई है ।

सूचना का तात्पर्य–

रिकार्ड, दस्तावेज, ज्ञापन, ई–मेल, विचार, सलाह, प्रेस विज्ञप्तियाँ, परिपत्र, आदेश, लांग पुस्तिका, ठेके सहित कोई भी उपलब्ध सामग्री, निजी निकायों से सम्बन्धित तथा किसी लोक प्राधिकरण द्वारा उस समय के प्रचलित कानून के अन्तर्गत प्राप्त किया जा सकता है।

सूचना अधिकार का अर्थः–

इसके अन्तर्गत निम्नलिखित बिन्दु आते है–

1. कार्यो, दस्तावेजों, रिकार्डो का निरीक्षण। 2.दस्तावेज या रिकार्डो की प्रस्तावना। सारांश, नोट्स व प्रमाणित प्रतियाँ प्राप्त करना। 3.सामग्री के प्रमाणित नमूने लेना। 4.प्रिंट आउट, डिस्क, फ्लापी, टेप, वीडियो कैसेटो के रूप में या कोई अन्य इलेक्ट्रानिक रूप में जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

सूचना का अधिकार अधिनियम 2005के प्रमुख प्रावधानः

5. समस्त सरकारी विभाग, पब्लिक सेक्टर यूनिट, किसी भी प्रकार की सरकारी सहायता से चल रहीं गैर–सरकारी संस्थाएं व शिक्षण संस्थान आदि विभाग इसमें शामिल हैं। पूर्णतः निजी संस्थाएं इस कानून के

दायरे में नहीं हैं, लेकिन यदि किसी कानून के तहत कोई सरकारी विभाग किसी निजी संस्था से कोई जानकारी मांग सकता है और उस विभाग के माध्यम से वह सूचना मांगी जा सकती है।

6. प्रत्येक सरकारी विभाग में एक या एक से अधिक जनसूचना अधिकारी बनाए गए हैं, जो सूचना के अधिकार के तहत आवेदन स्वीकार करते हैं। मांगी गई सूचनाएं एकत्र कर उसे आवेदनकर्ता को उपलब्ध कराते हैं।
7. जनसूचना अधिकारी का दायित्व है कि वह 30दिन अथवा जीवन व स्वतंत्रता के मामले में 48घण्टे के अन्दर (कुछ मामलों में 45दिन तक) मांगी गई सूचना उपलब्ध कराए।
8. यदि जनसूचना अधिकारी आवेदन लेने से मना करता है, तय समय सीमा में सूचना नहीं उपलब्ध् कराता है अथवा गलत या भ्रामक जानकारी देता है, तो देरी के लिए 250रुपए प्रतिदिन के हिसाब से 25000तक का जुर्माना उसके वेतन में से काटा जा सकता है। साथ ही उसे सूचना भी देनी होगी।
9. लोक सूचना अधिकारी को अधिकार नहीं है कि वह आपसे सूचना मांगने का कारण नहीं पूछ सकता।
10. सूचना मांगने के लिए आवेदन फीस देनी होगी। केन्द्र सरकार ने आवेदन के साथ 10 रुपए की फीस तय की है, लेकिन कुछ राज्यों में यह अधिक है, बीपीएल कार्डधारकों को आवेदन शुल्क में छूट प्राप्त है।
11. दस्तावेजों की प्रति लेने के लिए भी फीस देनी होगी। केन्द्र सरकार ने यह फीस 2 रुपए प्रति पृष्ठ रखी है।
12. लोक सूचना अधिकारी यदि आवेदन लेने से इंकार करता है, अथवा परेशान करता है, तो उसकी शिकायत सीधे सूचना आयोग से की जा सकती है। सूचना के अधिकार के तहत मांगी गई सूचनाओं को अस्वीकार करने, अपूर्ण, भ्रम में डालने वाली या गलत सूचना देने अथवा सूचना के लिए अधिक फीस मांगने के खिलाफ केन्द्रीय या राज्य सूचना आयोग के पास शिकायत कर सकते है।
13. जनसूचना अधिकारी कुछ मामलों में सूचना देने से मना कर सकता है। जिन मामलों से सम्बंधित सूचना नहीं दी जा सकती उनका विवरण सूचना के अधिकार कानून की धारा 8 में दिया गया है, लेकिन यदि मांगी गई सूचना जनहित में है तो धारा 8 में मना की गई सूचना भी दी जा सकती है। जो सूचना संसद या विधानसभा को देने से मना नहीं किया जा सकता उसे किसी आम आदमी को भी देने से मना नहीं किया जा सकता।
14. यदि लोक सूचना अधिकारी निर्धारित समय–सीमा के भीतर सूचना नहीं देते है या धारा 8 का गलत इस्तेमाल करते हुए सूचना देने से मना करता है या दी गई सूचना से सन्तुष्ट नहीं होने की स्थिति में 30 दिनों के भीतर संबंधित जनसूचना अधिकारी के वरिष्ठ अधिकारी यानि प्रथम अपील अधिकारी के समक्ष प्रथम अपील की जा सकती है।
15. यदि आप प्रथम अपील से भी सन्तुष्ट नहीं हैं तो दूसरी अपील 60 दिनों के भीतर केन्द्रीय या राज्य सूचना आयोग (जिससे संबंधित हो) के पास करनी होती है।

अधिनियम के प्रावधानों के अन्तर्गत सरकारी रिकार्ड के निरीक्षण की सुविधा भी उपलब्ध है। इसके लिए एक घंटे के लिए कोई शुल्क देय नहीं होगा परन्तु इसके बाद प्रत्येक 15 मिनट के लिए आकांक्षी को 5 रुपया शुल्क देना होगा ।

RTI लिखने का तरीका –

RTI मलतब है सूचना का अधिकार – ये कानून हमारे देश में 2005 में लागू हुआ। जिसका उपयोग करके आप सरकार और किसी भी विभाग से सूचना मांग सकते है। आमतौर पर लोगो को इतना ही पता होता है। परंतु आज मैं आप को इस के बारे में कुछ और रोचक जानकारी देता हूँ –

RTI से आप सरकार से कोई भी सवाल पूछकर सूचना ले सकते है।

RTI से आप सरकार के किसी भी दस्तावेज की जांच कर सकते है।

RTI से आप दस्तावेज की प्रमाणित कापी ले सकते है।

RTI से आप सरकारी कामकाज में इस्तेमाल सामग्री का नमूना ले सकते है।

RTI से आप किसी भी कामकाज का निरीक्षण कर सकते हैं।

RTI में कौन– कौन सी धारा हमारे काम की है।

धारा 6 (1) –RTI का आवेदन लिखने का धारा है।

धारा 6 (3) – अगर आपका आवेदन गलत विभाग में चला गया है। तो वह विभाग इस को 6 (3) धारा के अंतर्गत सही विभाग मे 5 दिन के अंदर भेज देगा।

धारा 7 (5) – इस धारा के अनुसार BPL कार्ड वालों को कोई आरटीआई शुल्क नही देना होता।

धारा 7 (6) – इस धारा के अनुसार अगर आरटीआई का जवाब 30 दिन में नहीं आता है तो सूचना निशुल्क में दी जाएगी।

धारा 18– अगर कोई अधिकारी जवाब नही देता तो उसकी शिकायत सूचना अधिकारी को दी जाए।

धारा 8– इस के अनुसार वो सूचना RTI में नहीं दी जाएगी जो देश की अखंडता और सुरक्षा के लिए खतरा हो या विभाग की आंतरिक जांच को प्रभावित करती हो।

धारा 19 (1) – अगर आपकी RTI का जवाब 30 दिन में नहीं आता है, तो इस धारा के अनुसार आप प्रथम अपील अधिकारी को प्रथम अपील कर सकते हो।

धारा 19 (3) – अगर आपकी प्रथम अपील का भी जवाब नही आता है तो आप इस धारा की मदद से 90 दिन के अंदर दूसरी अपील अधिकारी को अपील कर सकते हो।

RTI कैसे लिखें ?

इसके लिए आप एक सादा पेपर लें और उसमे1इंच की कोने से जगह छोड़े और नीचे दिए गए प्रारूप में अपने RTI लिख लें

सूचना का अधिकार 2005 की धारा 6 (1) और 6 (3) के अंतर्गत आवेदन।

सेवा में,

अधिकारी का पद / जनसूचना अधिकारी

विभाग का नाम.....

विषय –RTI Act 2005 के अंतर्गत ..... से संबधित सूचनाऐं।

अपने सवाल यहाँ लिखें।

1. .....
2. .....
3. .....
4. .....

मैं आवेदन फीस के रूप में 10 / –का पोस्टल ऑर्डर ..... संख्या अलग से जमा कर रहा / रही हूं।

या

मैं बी.पी.एल. कार्डधारी हूं। इसलिए सभी देय शुल्कों से मुक्त हूं। मेरा बी.पी.एल.कार्ड नं.....है।

यदि मांगी गई सूचना आपके विभाग / कार्यालय से सम्बंधित

नहीं हो तो सूचना का अधिकार अधिनियम, 2005की धारा 6(3) का संज्ञान लेते हुए मेरा आवेदन संबंधित लोकसूचना अधिकारी को पांच दिनों के समयावधि के अन्तर्गत हस्तान्तरित करें। साथ ही अधिनियम के प्रावधानों के

तहत सूचना उपलब्ध कराते समय प्रथम अपील अधिकारी का नाम व पता अवश्य बतायें।

भवदीय

नाम : .....

पता : .....

फोन नं : .....

हस्ताक्षर .....

ये सब लिखने के बाद अपने हस्ताक्षर कर दें।

अब मित्रो केंद्र से सूचना मांगने के लिए आप 10 रु. देते है और एक पेपर की कॉपी मांगने के 2 रु. देते हैं।

हर राज्य का RTI शुल्क अलग– अलग है जिस का पता आप कर सकते हैं।

जनजागृति के लिए जनहित में शेयर करे।

RTI का सदउपयोग करें और भ्रष्टाचारियों की सच्चाई / पोल दुनिया के सामने लाईये

RTI को ज्यादा से ज्यादा उपयोगी और प्रभावी बनाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दें।

दोस्तों से निवेदन है कि आरटीआई का उपयोग केवल सार्वजनिक हित और सकारात्मक कार्यों के लिए ही करें। सोच बदलो गांव बदलो टीम का उद्देश्य किसी भी प्रकार की नकारात्मकता, वैमनस्यता और विध्वंसात्मक गतिविधियों को बढ़ावा देना नहीं है। आरटीआई का उपयोग सरकारी योजनाओं की जानकारी और उनका लाभ लोगों तक पहुंचाने के लिए करना है।

सूचना का अधिकार– विकास का आधार –ऑनलाइन RTI फाइल करने का तरीका

https%//sso-rajasthan-gov-in/signin इस लिंक पर आप क्लिक कीजिए। जैसे ही यह लिंक खुले तो आपको सबसे पहले Register पर क्लिक करना है फिर आधार कार्ड का आप्शन सलेक्ट कर और टाइप में Citizen पर क्लिक करना है। इसके बाद अपना आधार कार्ड नंबर डालने के बाद आप अपने हिसाब से User ID और पासवर्ड बना लो। इसके बाद इसी लिंक पर आप अपनी User Id और पासवर्ड डालकर लोग इन करो।

इसके बाद SSO Rajasthan का एप्लीकेशन ओपन होगा वहाँ पर आप वहाँ पर RTI एप्लीकेशन पर क्लिक करें और * स्टार वाले सभी कॉलम भरें। इसमें सबसे जरुरी बात यह ध्यान रखनी है कि आपको चाहे कोई भी विभाग से सूचना मांगनी है तो विभाग का नाम सिर्फ योजना विभाग ही चयन करना है।

जिस कॉलम में आपको सूचना का विवरण लिखना है, वहाँ पर उसी विभाग व अधिकारी का पदनाम व पता लिखो जिससे आपको सूचना चाहिए। सबसे अंत में आप एक लाइन ओर जोड़ देना कि "अगर यह सूचना आपके विभाग से सम्बंधित नहीं है तो जिस विभाग से सम्बंधित है प्लीज उस विभाग में तुरंत ट्रान्सफर करने की कृपा करें" फिर योजना विभाग कुछ ही दिन में आपकी सूचना को सम्बंधित विभाग के Head of Department में भेज देगा फिर वहाँ से मार्क होते हुए नीचे तक सम्बंधित अधिकारी के पास आएगी।

अगर आपको डायरेक्ट उसी अधिकारी के पास भेजनी है तो प्लीज Rajasthan Info Service Limited विभाग चयन करना ओर बाकी की प्रक्रिया वही फॉलो करनी है जैसा कि ऊपर बताया गया है। फिर आपकी सूचना यह विभाग डायरेक्ट उसी विभाग के अधिकारी को भेज देंगे जहाँ आपको भिजवानी है बशर्ते आप विभाग का नाम व पदनाम तथा पता सही लिखें। वैसे जैसे ही आप विभाग चयन करेंगे तो Collectorate का नाम भी है किन अगर आपने इस विभाग को सलेक्ट कर लिया तो फिर आपको सूचना मिलना मुश्किल है क्यों कि उन्होंने online सूचना देने का कोई मेकेनिज्म या सिस्टम ही चलन में नहीं कर रखा है। इसलिए प्लीज इस विभाग का चयन करने से बचें।

सारे कॉलम भरने के उपरांत जब आप सबमिट करेंगे तो आपके पास एक नई विंडो ओपन होगी जहाँ आपको RTI Fees

10.00 रुपये का पेमेंट करना (Payment mode ~ Internet banking या Debit Card) से कर सकते है। इसी बीच प्लीज इंबा बटन या अन्य कोई screen का बटन दवाने से बचे। थोडा इंतजार कारण के बाद आपके पास RTI Application का नंबर मोबाइल पर आ जायेगा और प्लीज उसी RTI विंडो पर View Application पर जाकर अपनी एप्लीकेशन का प्रिंट जरूर निकालेना क्यों कि अगर उस विभाग ने आपकी application ट्रान्सफर कर दी, इसके बाद आपकी अप्लिकेशन वहाँ से हट जायेगी। ये कुछ पेचीदगी इसलिए है क्योंकि सरकार ने सभी विभागों को Online RTI से लिंक नहीं कर रखा है और जिनको जोड़ रखा है उनको facility और mechanism system उपलब्ध नहीं करा रखा है।

उपयोगिता एवं लाभः

सूचना का अधिकार कानून को 2005 में मान्यता मिल चुकी है। पूरे देश में यह लागू भी हो गया है। यह भारत जैसे प्रजातान्त्रिक देश को एक जीव–जन्तुओं की उपयोगिता मजबूत आधार प्रदान करने की दिशा मे एक ऐतिहासिक कदम है। गरीब (बीपीएल) व्यक्ति को कोई फीस देय नही है! चूंकि, तात्कालिक भारत सरकार की यह देन है। जिसमें आम आदमी को तमाम शक्तिया प्रदान की हैं। जिसके तहत किसी भी कार्यालय की किसी भी फाइल, पत्र, जांच के कागजों को देख सकता है और उसकी प्रति लिपि भी ले सकता है। वर्तमान भारत में यह अधिकार एक वरदान साबित हुआ है। जिसकी सहायता से आम जन का जीवन आसान हो गया है और प्रशासन जनता को भाव देने लगा है। आप किसी भी जिले / राज्य / तहसील के किसी भी ग्राम पंचायत, तहसील, BDO, SDM, MLA, MP, मिनिस्टर, प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री, पुलिस, बैंक, स्कूल, पोस्ट ऑफिस, PWD, हॉस्पिटल, मनरेगा, वन विभाग, जल विभाग, DSO, NHAI, कृषि विभाग, उद्योग, जिला कलेक्टर, सीईओ, जिला परिषद, रोडवेज, बिजली, कोर्ट, RTO, राजस्थान प्रदूषण कंट्रोल बोर्ड, CID, उपभोक्ता अदालत, पटवारी, किसी भी NGO से घर बेठे जानकारी प्राप्त कर सकते हैं, क्योंकि यह आपकाअधिकार है। जिसे केंद्र सरकार ने 2005 में ही बना दिया।

परिणाम : सीमा शुःल्क व् केन्द्रीय उत्पात शुःल्क विभाग मुंबई जोन मे इंस्पेक्टर से अधीक्षक की सैकड़ों सीट को प्रमोशन के जरिये नहीं भरा और कई वर्षो तक खाली रखा जा रहा था। पूछने पर गलत जानकारियाँ दी जा रही थी। सूचना का अधिकार कानून 2005के तहत जानकारी ली तो रिक्त पदों की जानकारी मिली और प्रशासन को सैकड़ों पदों को 2007मे प्रमोशन से भरना पड़ा। इस अधिकार के तहत एक से एक खबर रोज मिल रही है। पूछेंगे तो पता चलेगा और पता चला तो प्रशासन आपको अहमियत देगा तो देश प्रगति की राह पर चल पड़ेगा और आमजन का भला होगा। अतः उठाओ कलम और ग्राम पंचायत से लेकर राष्ट्रपति कार्यालय से जानकारी लो जिसमें जनहित हो!

उपसंहार :

यह अधिकार कानून की अवधारणा निश्चित रूप से उपयोगी है एवं इसका उद्देश्य भी कल्याणपूर्ण है, परन्तु वास्तविकता से जुड़ने में इसके सामने कई चुनौतियाँ है। एक ओर कार्यपालिका की इसमें महत्वपूर्ण भूमिका है तो दूसरी ओर अधिकारीगण अपने ऊपर पड़ने वाले राजनैतिक दवाबों से अपने आप को किस तरह अलग रख पायेंगें तथा इस कानून का लाभ लोगों को पहुँचा सकेंगे।

आवश्यकता इस बात की है, अच्छी सोच–समझ वाले लोगों को जो विभिन्न क्षेत्रों से जुड़े है, उन्हें लाना सकारात्मक कदम होगा। चूँकि यह अधिनियम जनता के हितों को ध्यान मे रखकर की गई है, इसलिए यह आवश्यक है, कि जतना की जरुरतों को समझने वाले निपुण और गुणवान लोगों को ही तरजीह दी जाए।

टूटी सडक, वनों की कटाई, खाद्य पदार्थों में मिलावट, नरेगा के कामों, खाद बीज, बस व ट्रेन की लेट लतीफी, बिजली के गुल होने जैसी रोजमर्रा की समस्याओं को जनहित के लिए RTI एप्लीकेशन तैयार कर आमजन को उपलब्ध कराया जाना चाहिए, ताकि आम लोगों के हित पूरे हो।

– मनीराम
SBGBT कार्यकर्ता

सोच बदलो – गाँव बदलो

नमस्कार साथियो

सोच बदलो–गाँव बदलो यात्रा के तहत लोगों में चेतना और जागृति पैदा करने वाली स्वरचित कविता आप सभी को समर्पित करता हूँ। उम्मीद है, आपको जरूर पसंद आएगी !

सोच बदलो–गाँव बदलो
सोच बदलो–गाँव बदलो अभियान है चला,
हुआ हर गाँव में भारी प्रचार है,
आगाज चल पडा है अंजाम की राह पर,
हो यात्रा सफल ये हमारा अरमान है,
पिछडे गाँव में चेतना जगाने हेतु,
जागरूक, जिम्मेदार युवा तैयार है,
अपने वतन का उत्तम विकास हो,
यही हम सबके मन की पुकार है।
यही हम सबके...

दुर्भाव, दुर्विचारों से न मन मलीन हो,
निर्मल, स्वच्छ, शुद्ध सोच होनी चाहिए,
साक्षर और ज्ञानी बने हर बाल–बालिका,
सस्ती, सुलभ, अच्छी शिक्षा होनी चाहिए,
जागरूक, जागृत बने हर–एक जन,

सभी को अपने हक की पहचान होनी चाहिए,
मिटे बेरोजगारी, घर–घर में बनें कर्मचारी,
कामयाबी ऐसी हर दिशा में मिलनी चाहिए।
कामयाबी ऐसी हर...

ना आपस में फूट हो ना किसी में तकरार,
धैर्य, सहनशीलता हर दिल में होनी चाहिए,
सद्भाव, विश्वास, भाईचारा बना रहे,
हर–एक मन में अमन होना चाहिए
भेदभाव, शोषण और संघर्ष को दे पनाह,
ऐसे अधर्म का विनाश होना चाहिए,
दूसरे के सुख से सबको खुशी मिले,
दूसरे के दुख से दुख होना चाहिए।
दूसरे के दुख से...

दहेज के कर्ज में ना डूबे अब बाप कोई,
दहेज रूपी दैत्य को समाज से भगाना है,
बहन–बेटी हो किसी–की सबको सम्मान मिले,
अपने–पराये का भेद ये मिटाना है,
बेटों की तरह बेटियों को भी जीने का,
घर और बाहर अधिकार ये दिलाना है,
देश की नारी का कहीं न हो तिरस्कार,
हमें नारी–शक्ति को प्रबल–सबल बनाना है।
हमें नारी–शक्ति को...

– कवि अजय रावत

□□□□

मृत्युभोज – एक सामाजिक कलंक

जश्न–ऐ–मौत। मृत्यु भोज, एक सामाजिक कलंक !!!

सामाजिक कुरीतियां जहां एक ओर व्यक्ति के स्वार्थी और लालची व्यवहार को प्रदर्शित करती हैं, वहीं दूसरी ओर मनुष्य द्वारा मनुष्य के उत्पीड़न और शोषण का कारण बनती हैं। ऐसी ही एक पीड़ा देने वाली कुरीति वर्षों पहले कुछ स्वार्थी लोगों ने भोले–भाले इंसानों में फैलाई गई थी वो है – मृत्युभोज। मानव विकास के रास्ते में यह गंदगी कैसे पनप गयी, समझ से परे है। जानवर भी अपने किसी साथी के मरने पर मिलकर दुःख प्रकट करते हैं, इंसानी बेईमान दिमाग की करतूतें देखो। यहाँ किसी व्यक्ति के मरने पर उसके साथी, सगे–सम्बन्धी भोज करते हैं। मिठाईयाँ खाते हैं। किसी घर में खुशी का मौका हो, तो समझ में आता है कि मिठाई बनाकर, खिलाकर खुशी का इजहार करें, खुशी जाहिर करें, लेकिन किसी व्यक्ति के मरने पर मिठाईयाँ परोसी जायें, खाई जायें, इस शर्मनाक परम्परा को मानवता की किस श्रेणी में रखें ?इंसान की गिरावट को मापने का पैमाना कहाँ खोजे?

इस भोज के भी अलग–अलग तरीके हैं। कहीं पर यह एक ही दिन में किया जाता है। कहीं तीसरे दिन से शुरू होकर बारहवें–तेहरवें दिन तक चलता है। कई लोग श्मशान घाट से ही सीधे मृत्युभोज का सामान लाने निकल पड़ते हैं। मैंने तो ऐसे लोगों को सलाह भी दी कि क्यों न वो श्मशान घाट पर ही टेंट लगाकर जीम लें ताकि अन्य जानवर आपको गिद्ध से अलग समझने की भूल न कर बैठे। रिश्तेदारों को तो छोड़ो, पूरा गांव का गाँव व आसपास का पूरा क्षेत्र टूट पड़ता है खाने को, तब यह हैसियत दिखाने का अवसर बन जाता है। आस–पास के कई गाँवों से ट्रेक्टर–ट्रोलियों

में गिद्धों की भांति जनता, इस घृणित भोज पर टूट पड़ती है।

जब मैंने समाज के बुजुर्गों से इस बारे में बात की व इस कुरीति के चलन के बारे में पूछा, तो उन्होंने बताया कि उनके जमाने में ऐसा नहीं था। रिश्तेदार ही घर पर मिलने आते थे। उन्हें पड़ोसी भोजन के लिए ले जाया करते थे। सादा भोजन करवा देते थे। मृत व्यक्ति के घर बारह दिन तक कोई भोजन नहीं बनता था। 13वें दिन कुछ सादे क्रियाकर्म होते थे। परिजन बिछुड़ने के गम को भूलने के लिए मानसिक सहारा दिया जाता था, लेकिन हम कहाँ पहुंच गए ?परिजन के बिछुड़ने के बाद उनके परिवार वालों को जिंदगीभर के लिए एक और जख्म दे देते है। जीते जी चाहे इलाज के लिए 2000 रुपये उधार न दिए हो, लेकिन मृत्युभोज के लिए 6–7लाख का कर्जा ओढ़ा देते है। ऐसा नहीं करो तो समाज में इज्जत नहीं बचेगी। क्या गजब पैमाने बनाये हैं हमने इज्जत के। इंसानियत को शर्मसार करके, परिवार को बर्बाद करके इज्जत पाने का पैमाना। कहीं–कहीं पर तो इस अवसर पर अफीम की मनुहार भी करनी पड़ती है। इसका खर्च मृत्युभोज के बराबर ही पड़ता है। जिनके कंधों पर इस कुरीति को रोकने का जिम्मा है वो नेता – अफसर खुद अफीम का जश्न मनाते नजर आते है। कपड़ों का लेन–देन भी ऐसे अवसरों पर जमकर होता है। कपड़े, केवल दिखाने के, पहनने लायक नहीं। बरबादी का ऐसा नंगा नाच, जिस समाज में चल रहा हो, वहाँ पर पूँजी कहाँ बचेगी ?बच्चे कैसे पढ़ेगे ? बीमारों का इलाज कैसे होगा ?

घिन्न आती है जब यह देखते हैं कि जवान मौतों पर भी समाज के लोग जानवर बनकर मिठाईयाँ उड़ा रहे होते हैं। गिद्ध भी गिद्ध को नहीं खाता। पंजे वाले जानवर पंजे वाले जानवर को खाने से बचते है। लेकिन, इंसानी चोला पहनकर घूम रहे ये दोपाया जानवरों को शर्म भी नहीं आती। जब जवान बाप या माँ के मरने पर उनके बच्चे अनाथ होकर, सिर मुंडाये आस–पास घूम रहे होते हैं। और समाज के प्रतिष्ठित लोग उस परिवार की मदद करने के स्थान पर भोज कर रहे होते हैं। जब भी बात करते है कि इस घिनौने कृत्य को बंद करो तो समाज के ऐसे–ऐसे कुतर्क शास्त्री खड़े हो जाते है कि मन करता है कि इसी के सिर से सिर टकराकर फोड़ दूं। इनके तर्क देखिए...

1. माँ–बाप जीवन भर तुम्हारे लिए कमाकर गये हैं, तो उनके लिए कुछ नहीं करोगे?

इमोशनल अत्याचार शुरू कर देते है। चाहे अपना बाप घर के कोने में भूखा पड़ा हो लेकिन, यहां ज्ञान बांटने जरूर आ जाता है। हकीकत तो यह है कि आजकल अधिकांश माँ–बाप कर्ज ही छोड़ कर जा रहे हैं। उनकी जीवन भर की कमाई भी तो कुरीतियों और दिखावे की भेंट चढ़ गयी। फिर अगर कुछ पैसा उन्होंने हमारे लिए रखा भी है, तो यह उनका फर्ज था। हम यही कर सकते हैं कि जीते जी उनकी सेवा कर लें, लेकिन जीते जी तो हम उनसे ठीक से बात नहीं करते। वे खांसते रहते हैं, हम उठकर दवाई नहीं दे पाते हैं। अचरज होता है कि वही लोग बड़ा मृत्युभोज या दिखावा करते हैं, जिनके माँ–बाप जीवन भर तिरस्कृत रहे। खैर। चलिए, अगर माँ–बाप ने हमारे लिए कमाया है, तो उनकी याद में हम कई जनहित के कार्य कर सकते हैं, पुण्य कर सकते हैं। जरूरतमंदो की मदद कर दें, अस्पताल–स्कूल के कमरे बना दें, पेड़ लगा दे।

परन्तु हट्टे–कट्टे लोगों को भोजन करवाने से कैसा पुण्य होगा ?कुछ बुजुर्ग तो दो साल पहले इस चिंता के कारण मर जाते है कि मेरी मौत पर मेरा समाज ही मेरे बच्चों को नोंच डालेगा ! मरने वाले को भी शांति से नहीं मरने देते। कैसा फर्ज व कैसा धर्म है तुम्हारा ??

2) आये मेहमानों को भूखा ही भेज दें ??

पहली बात को शोक प्रकट करने आने वाले रिश्तेदार और मित्र, मेहमान नहीं होते हैं। उनको भी सोचना चाहिये कि शोक संतृप्त परिवार को और दुखी क्यों करें ?? अब तो साधन भी बहुत हैं। सुबह से शाम तक वापिस अपने घर पहुँचा जा सकता है। इस घिसे–पिटे तर्क को किनारे रख दें। मेहमाननवाजी खुशी के मौकों पर की जाती है, मौत पर

नहीं!! बेहतर यही होगा कि हम जब शोक प्रकट करने जायें, तो खुद ही भोजन या अन्य मनुहार को नकार दें। समस्या ही खत्म हो जायेगी।

3) तुमने भी तो खाया था तो खिलाना पड़ेगा !!

यह मुर्गी पहले आई या अंडा पहले आया वाला नाटक बंद करो। यह समस्या कभी नहीं सुलझेगी! अब आप बुला लो, फिर वे बुलायेंगे। फिर कुछ और लोग जोड़ दो। इनसानियत पहले से ही इस कृत्य पर शर्मिंदा है, अब और मत करो। किसी व्यक्ति के मरने पर उसके घर पर जाकर भोजन करना ही इंसानी बेईमानी की पराकाष्ठा है और अब इतनी पढ़ाई–लिखाई के बाद तो यह चीज प्रत्येक समझदार व्यक्ति को मान लेनी चाहिए। गाँव और कस्बों में गिद्धों की तरह मृत व्यक्तियों के घरों में मिठाईयों पर टूट पड़ते लोगों की तस्वीरें अब दिखाई नहीं देनी चाहिए।

सोच बदलो गांव बदलो टीम ने मृत्यु भोज के खिलाफ एक अभियान की शुरुआत की है और हमारा प्रत्येक सदस्य शपथ लेकर मृत्यु भोज में खाना न खाने और इस कुप्रथा को समाज से मिटाने का संकल्प लेता है। SBGBT की ओर से सोच बदलो गांव बदलो यात्रा के दौरान हुई एक बैठक में इस कुप्रथा को रोकने के संदर्भ में यह सुझाव प्रस्तुत किए थे। यदि आप इन सुझावों से सहमत हैं तो आप भी इन्हें अपना सकते हैं।

1. यदि हमारा समाज चाहकर भी इस प्रथा को रोकने में विफल हो रहा है, तो हमें लोगों में एक नई सोच पैदा करनी होगी । टीम ने विकल्प के तौर पर एक सुझाव रखा कि यदि व्यक्ति अपने परिवारजन की मृत्यु पर कुछ खर्चा करना ही चाहता है तो क्यों न उसे अच्छे कार्यों में खर्च किया जाए, दिवंगत आत्मा के नाम से एक हैंडपंप लगवा लगवा सकते हैं, प्याऊ लगवा सकते हैं, गांव के विद्यालय में कोई नया कमरा बनवा सकते हैं, विद्यालय को कोई अन्य सामान भेंट कर सकते हैं, अपने गांव के गरीब घरों को शाल या अन्य कोई भेंट देकर उनकी मदद कर सकते हैं । इस तरह से कुछ और भी अच्छा सोचा जा सकता है ।
2. एक खास विचार टीम ने यह रखा कि जब हम राख समेटने जाते हैं तो उसे हम वहीं इकट्ठा कर बाद में यूं ही उड़ते रहने के लिए छोड़ देते हैं। इसके सदुपयोग के लिए टीम का सुझाव था कि इस राख और हड्डियों के चूर्ण के मिश्रण को इकट्ठा कर पौधारोपण में उपयोग में लाया जा सकता है। श्मशान भूमि की बाउंड्री वाल के सहारे एक गड्ढा कर उस में दिवंगत आत्मा के नाम से पौधारोपण किया जा सकता है। टीम का मानना है कि कैल्शियम अथवा कैल्शियम फास्फेट जैसे आवश्यक तत्व मिलने से ऐसा पौधा तेजी से वृद्धि करेगा। कुछ दिन तक जब तक यह पौधा विकसित रूप न ले ले, वह परिवार अपने दिवंगत आत्मा की याद में उस पौधे की देखभाल करें। जिन गांवों में श्मशान भूमि में या उसके सहारे पहले से ही पर्याप्त मात्रा में पेड़ हैं उन गांव में इसे कहीं और जहां शोकाकुल परिवार उचित समझें रोपण किया जा सकता है। स्मार्ट विलेज धनोरा से एक स्वस्थ परंपरा की शुरुआत हो चुकी है और आशा करते हैं यह लोग भी इसे अपनाएंगे।
3. हमारी टीम के कार्यकर्ता ने अपने पिताजी की मृत्यु पर 1000 फलदार पेड़ के पौधों का वितरण किया तथा पुस्तकालय में पुस्तकें दान की। इसी तरह हमारे एक कार्यकर्ता ने विद्यालय प्रांगण में एक कमरा बनवाने की भी घोषणा की।
4. सोच बदलो गांव बदलो टीम का प्रत्येक कार्यकर्ता इस कुप्रथा के खिलाफ मुहिम छेड़ने की शपथ लेता है और आपसे भी आशा करता है कि आप इस बुराई के खिलाफ उठ खड़े होंगे। हमारे पढ़े–लिखे होने का सबसे बड़ा सबूत यही है कि हम मानवतावादी व वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाएं और इस कुप्रथा को समाज से उखाड़ फेंके।

– देवेन्द्र प्रताप
SBGBT कार्यकर्ता

□□□□

जानकारी और जागरुकता

विकास की पहली आवश्यकता

गांवों या शहरों में अपेक्षित विकास के अभाव का कारण, सरकारी योजनाओं और सरकारी निधि (FUND) की कमी नहीं, बल्कि सरकारी योजनाओं व उनके क्रियान्वयन की प्रकिया की सही जानकारी का अभाव तथा सरकारी निधि के सदुपयोग के प्रति लोगों में जागरूकता की कमी है। वर्तमान में विकास प्रकिया में सक्रिय जन भागीदारी अथवा जन सहभागिता का अभाव ही नहीं, बल्कि पूर्ण उदासीनता भी है। ''कोउ नृप होउ, हमें का हानि'' कहावत आज भी प्रासंगिक है। लोकतंत्र केवल एक चुनावी प्रकिया मात्र बनकर रह गया है और चुनाव आज भी जाति, धर्म, संप्रदाय की राजनीति के इर्द–गिर्द धनबल, गुंडागर्दी, घृणा और नफरत फैलाने वाले हथियारों के सहारे संचालित हैं। स्वास्थ्य सुविधाएँ, अच्छी शिक्षा, स्वच्छ पेयजल, आवास सुविधा, कानून व्यवस्था इत्यादि आज भी हमारे लिए कभी सच न होने वाले सपने हैं।

इन परिस्थितियों में केवल सरकार और प्रशासन की आलोचना करना और अपने नागरिक कर्तव्यों का पालन न करना लोकतंत्र का सबसे बड़ा अपमान है। संविधान और लोकतांत्रिक प्रक्रिया ने हमें सभी अधिकार दिए हैं ताकि हम एक सभ्य नागरिक समाज का निर्माण कर सकें तथा जीवन कीमूलभूत सुविधाएं प्रत्येक व्यक्ति को उपलब्ध करा सकें। अतः प्रत्येक सजग नागरिक का कर्तव्य है कि विकास के लिए आवंटित प्रत्येक रुपए की न केवल निगरानी करें, बल्कि सुनिश्चित करें कि उसका सही जगह उपयोग हो । सांसद निधि, विधायक निधि, पंचायत समिति तथा ग्राम पंचायत को आवंटित राशि का सदुपयोग हो, इस बात पर गौर करें।

पंचायतीराज व्यवस्था में ग्राम–सभा का महत्व एवं आवश्यकता

ग्राम–सभा पंचायतीराज व्यवस्था का मूल आधार "लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण" द्वारा लोकतंत्र की जड़ें स्थानीय स्तर पर मजबूत करने के उद्देश्य से 73वें और 74वें संविधान संशोधन द्वारा पंचायती राज्य संस्थाओं का गठन किया गया तथा स्थानीय निकायों को महत्वपूर्ण राजनीतिक और आर्थिक अधिकार दिए गए द्य इसके अंतर्गत ग्रामीण स्थानीय शासन के लिए त्रिस्तरीय व्यवस्था की गई, जो निम्न प्रकार है–

1) ग्राम पंचायत–ग्राम स्तर पर

अ) पंचायत समिति या जनपद समिती– विकासखंड स्तर पर

ब) जिला परिषद– जिला स्तर पर

स्थानीय स्वशासन या ग्राम स्वराज को ग्राम स्तर पर स्थापित करने में पंचायती राज संस्थाओं की महत्वपूर्ण भूमिका देखी जा सकती है। एक मजबूत व सक्रिय ग्रामसभा ही स्थानीय स्वशासन की कल्पना को साकार कर सकती है। नये पंचायती राज के अंतर्गत अब गांव के विकास की जिम्मेदारी ग्राम पंचायत की है। पंचायतें ग्रामीण विकास प्रक्रिया को आगे बढ़ाने का एक मजबूत माध्यम हैं, लेकिन इसका यह अर्थ नहीं कि केवल निर्वाचित सदस्य ही इस जिम्मेदारी को निभायेगें। इसके लिए ग्रामसभा ही एकमात्र ऐसा मंच है जहां लोग पंचायत प्रतिनिधियों के साथ मिलकर स्थानीय विकास से जुड़ी विभिन्न समस्याओं पर विचार कर सकते हैं और सबके विकास की कल्पना को साकार रूप दे सकते हैं। स्थानीय स्वशासन तभी मजबूत होगा जब हमारी ग्रामसभा में गांव के हर वर्ग चाहे वो दलित हों, महिला हो या फिर गरीब सबकी समान रूप से भागीदारी हो और जो भी योजनायें बनें वे समान रूप से सबके हितों को ध्यान में रखते हुये बनाई जायें तथा ग्राम विकास संबन्धी निर्णयों में अधिक से अधिक लोगों की भागीदारी हो। लेकिन, इसके लिए गांव के अन्तिम व्यक्ति की सत्ता एवं निर्णय में भागीदारी के लिये ग्रामसभा के प्रत्येक सदस्य को उसके अधिकारों एवं कर्तव्यों के प्रति जागरूक किया जाना अत्यन्त आवश्यक है ।

यहां इस बात को समझने की आवश्यकता है कि क्या ग्रामीण समुदाय, चाहे वह महिला है या पुरूष, युवा है या बुजुर्ग अपनी इस जिम्मेदारी को समझता है या नहीं। क्या ग्राम विकास संबन्धी योजनाओं के नियोजन एवं क्रियान्वयन में अपनी भागीदारी के प्रति वे जागरूक है ?क्या उन्हें मालूम है कि उनकी निष्क्रियता की वजह से कोई सामाजिक न्याय से वंचित रह सकता है ?ग्रामीणों की इस अनभिज्ञता व निष्क्रियता के कारण ही गांव के कुछ एक प्रभावशाली या यूं कहें कि ताकतवर लोगों के द्वारा ही ग्रामीण विकास पूरी प्रक्रिया चलाई जाती है। जब तक ग्राम सभा का प्रत्येक सदस्य पंचायती राज के अन्तर्गत स्थानीय स्वशासन के महत्व व अपनी भागीदारी के महत्व को नहीं समझेगा एवं ग्राम विकास के कार्यों के नियोजन एवं क्रियान्वयन में अपनी सक्रिय भूमिका को नहीं निभायेगा, तब तक एक सशक्त पंचायत या गांधी जी के स्थानीय स्वशासन की बात करना महज एक कोरी कल्पना है। स्थानीय स्वशासन रूपी इस वृक्ष की जड़ (ग्रामसभा) को जागरूकता रूपी जल से सींच कर उसे नवजीवन देकर गांधी जी के स्वप्न को साकार किया जा सकता है।

ग्रामसभा सदस्यों के अधिकार एवं जिम्मेदारियां

ग्राम सभा को पंचायत व्यवस्था का महत्वपूर्ण अंग माना गया है। पंचायती राजव्यवस्था को सुचारू रूप से चलाने में इसकी अहम् भूमिका होती है। मुख्यतः ग्रामसभा का कार्य ग्राम विकास की विभिन्न योजनाओं, विभिन्न कार्यों का सुगमीकरण करना तथा लाभार्थी चयन को न्यायपूर्ण बनाना है। देश के विभिन्न राज्यों के अधिनियमों में स्पष्ट रूप से ग्रामसभा के कार्यों को परिभाषित किया गया है। उनमें यह भी स्पष्ट है कि पंचायत भी ग्रामसभा के विचारों को महत्व

देगी। ग्राम पंचायतों की विभिन्न गतिविधियों पर नियंत्रण, मूल्यांकन एवं मार्गदर्शन की दृष्टि से ग्रामसभाओं को 73वें संविधान संशोधन अधिनियम के अंतर्गत कुछ अधिकार प्रदत्त किये गये हैं। ग्रामसभा के कुछ महत्वपूर्ण कार्य तथा अधिकार निम्नवत हैं:–

ग्रामसभा सदस्य, ग्रामसभा की बैठक में पंचायत द्वारा किये जाने वाले विभिन्न कार्यों की समीक्षा कर सकते हैं, यही नहीं ग्रामसभा पंचायतों की भविष्य की कार्ययोजना व उसके क्रियान्वयन पर भी टिप्पणी अथवा सुझाव रख सकती है। ग्राम सभा, पंचायत द्वारा पिछले वित्तीय वर्ष की प्रशासनिक और विकास कार्यक्रमों की रिपोर्ट का परीक्षण व अनुमोदन करती है।

पंचायतों के आय व्यय में पारदर्शिता बनाये रखने के लिये ग्रामसभा सदस्य को यह भी अधिकार होता है कि वे निर्धारित समय सीमा के अंतर्गत पंचायत में जाकर पंचायतों के दस्तावेजों को देख सकते हैं आगामी वित्तीय वर्ष हेतु ग्राम पंचायत द्वारा वार्षिक बजट का परीक्षण अनुमोदन करना भी ग्रामसभा का अधिकार है।

ग्राम सभा का महत्वपूर्ण कार्य ग्राम विकास प्रक्रिया में स्थाई रूप से जुड़े रह कर गांव के विकास व हित के लिये कार्य करना है। ग्राम विकास योजनाओं के नियोजन में लोगों की आवश्यकताओं, उनकी प्राथमिकताओं को महत्व दिलाना तथा उनके क्रियान्वयन में अपना सहयोग देना ग्राम सभा के सदस्यों की प्रथम जिम्मेदारी है।

ग्रामसभा को यह अधिकार है कि वह ग्राम पंचायत द्वारा किये गये विभिन्न ग्राम विकास कार्यों के संदर्भ में किसी भी तरह के संशय, प्रश्न पूछकर दूर कर सकती है। कौन सा कार्य कब किया गया, कितना कार्य होना बाकी है, कितना पैसा खर्च हुआ, कुल कितना बजट आया था, अगर कार्य पूरा नहीं हुआ तो उसके क्या कारण हैं आदि जानकारी पंचायत से ले सकती है। राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारण्टी योजना के अंतर्गत ग्राम सभा को विशेष रूप से सामाजिक आडिट करने की जिम्मेदारी है।

सामाजिक न्याय व आर्थिक विकास की सभी योजनायें ग्राम पंचायत द्वारा लागू की जाती हैं। अतः विभिन्न ग्राम विकास संम्बन्धी योजनाओं के अंतर्गत लाभार्थी के चयन में ग्रामसभा की एक अभिन्न भूमिका है। प्राथमिकता के आधार पर उचित लाभार्थी का चयन कर उसे सामाजिक न्याय दिलाना भी ग्रामसभा का परम दायित्व है।

नये वर्ष की योजना निर्माण हेतु भी ग्रामसभा अपने सुझाव दे सकती है तथा ग्रामसभा ग्राम पंचायत की नियमित बैठक की भी निगरानी कर सकती है।

ग्राम विकास के लिये ग्राम सभा के सदस्यों द्वारा श्रमदान करना व धन जुटाने का कार्य भी ग्राम सभा करती है। ग्राम सभा यह भी निगरानी रखती है कि ग्राम पंचायत की बैठकें नियमित रूप से हो रही हैं या नहीं। साल में दो बार आवश्यक रूप से आयोजित होने वाली ग्राम सभा की बैठकों में ग्राम सभा के प्रत्येक सदस्य चाहे वह महिला हो, पुरूष हो, युवक हो बुजुर्ग हो, को भागीदारी करने का अधिकर है। ग्राम पंचायतों को ग्राम सभा के सुझावों पर ध्यान रखते हुये कार्य करना है। ग्राम प्रधान को असामान्य बैठक बुलाने का भी अधिकार है। अतः ग्राम सभा सदस्य ग्राम हित मेंजरुरत होने पर विशेष बैठक की मांग लिखित में कर सकते हैं और इन परिस्थितियों में ग्राम प्रधान द्वारा 30दिनों के भीतर बैठक बुलाई जाती है।

हमने अक्सर देखा व अनुभव किया है कि ग्राम सभा के सदस्य यानि प्रौढ़ महिला, पुरूष जिन्होने मत देकर अपने प्रतिनिधि को चुना है अपने अधिकार एवं कर्तव्य के प्रति जागरूक नहीं रहते। जानकारी के अभाव में वे ग्राम विकास में अपनी अहम भूमिका होने के बावजूद भागीदारी नहीं कर पाते। एक सशक्त, सक्रिय व चेतनायुक्त ग्राम सभा ही ग्राम पंचायत की सफलता की कुंजी है।

ग्राम सभा की बैठक व कार्यवाही

ग्राम सभा की बैठकें वर्ष में दो बार होती हैं। एक रबी की फसल के समय (मई–जून) दूसरी खरीफ की फसल के वक्त (नवम्बर–दिसम्बर)। इसके अलावा अगर ग्राम सभा के सदस्य लिखित नोटिस द्वारा आवश्यक बैठक की मांग करते हैं तो प्रधान को ग्राम सभा की बैठक बुलानी पड़ती है।

ग्राम सभा की बैठक में कुल सदस्य संख्या का 1/5 भाग होना जरूरी है अगर कोरम के अभाव में निरस्त हो जाती है तो अगली बैठक में कोरम की आवश्यकता नहीं होगी।

इस बैठक में ग्राम सभा के सदस्य, पंचायत सदस्य, पंचायत सचिव, खण्ड विकास अधिकारी व विभागों से जुड़े अधिकारी भाग लेंगे।

बैठक ऐसे स्थान पर बुलाई जानी चाहिये जहां अधिक से अधिक लोग विशेषकर महिलाएं भागीदारी कर सकें।

ग्राम सभा की बैठक का एजेण्डे की सूचना कम से कम 15दिन पूर्व सभी को दी जानी चाहिये व इसकी सूचना सार्वजनिक स्थानों पर लिखित व डुगडुगी बजवाकर देनी चाहिये।

सुविधा के लिये अप्रैल 13मार्च तक के एक वर्ष को एक वित्तीय वर्ष माना गया है। ग्राम प्रधान पिछले वर्ष की कार्यवाही सबके सामने रखेगी। उस पर विचार होगा, पुष्टि होने पर प्रधान हस्ताक्षर करेगा।

पिछली बैठक के बाद का हिसाब तथा ग्राम पंचायत के खातों का विवरण सभा को दिया जायेगा। पिछले वर्ष के ग्राम विकास के कार्यक्रम तथा आने वाले वर्ष के विकास कार्यक्रमों के प्रस्ताव अन्य कोई जरूरी विषय हो तो उस पर विचार किया जायेगा।

ग्राम सभा का यह कर्तव्य है कि वह ग्राम सभा की बैठकों में उन्हीं योजनाओं व कार्यक्रमों के प्रस्ताव लाये जिनकी गांव में अत्यधिक आवश्यकता है व जिससे अधिक से अधिक लोगों को लाभ मिल सकता है।

जब ग्राम सभा में एक से अधिक गांव होते हैं तो खुली बैठक में प्रस्ताव पारित करने पर बहस के समय काफी हल्ला होता है। सबसे अच्छा यह रहेगा कि हर गांव ग्राम सभा की होने वाली बैठक से पूर्व ही अपने–अपने गांव के लोगों की एक बैठक कर ग्राम सभा की बैठक में रखे जाने वाले कार्यक्रमों पर चर्चा कर लें व सर्व–सहमति से प्राथमिकता के आधार पर कार्यक्रमों को सूचीबद्ध कर प्रस्ताव बना लें और बैठक के दिन प्रस्तावित करें।

''एक आदर्श पंचायत वही पंचायत हो सकती है, जिसमें गांव की समस्याओं के प्रति संवेदनशीलता हो। तथा एक आदर्श ग्रामसभा वही ग्रामसभा हो सकती है, जिसके सदस्यों में ग्रामविकास और इससे जुड़ी योजनाओं के नियोजन तथा कार्यान्वयन में भागीदारी के प्रति संवेदनशीलता हो।'' इसके अतिरिक्त गांव सुरक्षा, बाल विवाह, दहेज, छूआछूत जैसे विभिन्न सामाजिक मुद्दों को भी बैठक में उठा सकते हैं।

पंचायत प्रतिनिधियों की ग्रामसभा के प्रति जवाबदेही

ग्रामसभा तथा ग्राम पंचायत एक दूसरे के बिना अधूरे हैं। ग्रामसभा ग्राम पंचायत के साथ एक सहयोगी और एक मार्गदर्शक की भूमिका निभा सकती है, लेकिन पंचायत प्रतिनिधियों की भी उसके प्रति कुछ जिम्मेदारियां बनती हैं जिन्हें निभाने से गांव विकास की ओर बढ़ सकता है। बहुत सी ऐसी बातें हैं जिनके संदर्भ में पंचायत को ग्रामसभा के प्रति जवाबदेह होना पड़ता है।

ग्राम विकास सम्बन्धी जो भी योजना गांव में आये, उसकी सारी जानकारी (बजट व कार्यक्रम को लेकर) पंचायत के सूचना पट पर लग जानी चाहिये ताकि गांव के सभी लोगों को इसका पता चल सके।

गांव के लिये जब योजना बने तो ग्रामसभा के सभी सदस्यों के साथ विचार विमर्श के बाद बने। सबकी निर्णय लेने

में भागीदारी सुनिश्चित की जाये।

ग्रामसभा के सदस्यों को बैठक की सूचना समय पर देना तथा सूचना को सार्वजनिक स्थान पर लगाना ग्राम पंचायत की जिम्मेदारी है।

ग्रामसभा जो प्रस्ताव बनाये अथवा निर्णय ले, पंचायत प्रतिनिधियों को उसे सम्मान देना होगा।

ग्राम विकास योजना के अन्तर्गत अगर लाभार्थी का चयन करना है तो सब सदस्यों के सामने, प्राथमिकता के आधार पर तथा सर्वसम्मति से हो।

पंचायत प्रतिनिधियों को चाहिये कि निर्णय प्रक्रिया में मुठ्ठीभर ताकतवर या प्रभावशाली लोगों को नहीं, अपितु ग्रामसभा के प्रत्येक सदस्य को शामिल करें। भागीदारी निभाने हेतु उन्हें प्रेरित करने के लिये स्वयं आगे आयें, तभी दोनों सच्चे अर्थों में एक दूसरे के पूरक बनेंगे।

ग्राम पंचायत समितियों में ग्रामसभा की भूमिका

गांव के समुचित विकास हेतु पंचायत स्तर पर विभिन्न कार्यों के संपादन हेतु विभिन्न समितियों के गठन का प्रावधान है जैसे विकास एवं कल्याण समिति, शिक्षा समिति, आदि। मूल्यांकन की दृष्टि से ग्रामपंचायत की विभिन्न समितियां ग्रामसभा के प्रति जवाबदेह होती हैं। ग्रामसभा को अधिकार है कि वह उनके कार्यों की निगरानी करे तथा उनके कार्यों का मूल्यांकन करे। ग्रामसभा एक ओर जहां पंचायत समितियों के कार्यों की निगरानी हेतु एक निगरानी कर्ता (वॉच–डॉग) का काम कर सकती है, वहीं दूसरी ओर एक सहयोगी की भूमिका भी निभा सकती है। वह एक मूल्यांकन कर्ता की भूमिका निभा सकती है तो एक मार्गदर्शक भी बन सकती है।

ग्रामसभा– स्थानीय स्वशासन की आधारशिला

गांधी जी ने ग्रामस्वराज की जो कल्पना की थी उसे साकार करने के लिये पंचायतों के आधारभूत स्तम्भ "ग्राम सभा" को पहचानना होगा। यदि आधार ही मजबूत न होगा तो एक मजबूत इमारत की कल्पना ही व्यर्थ है। पंचायत रूपी इमारत का आधार सिर्फ ग्रामीण समाज के कुछ एक प्रभावशाली अथवा ताकतवर लोग ही नहीं हैं, अपितु वहां रह रहे विभिन्न वर्गों के वे सभी लोग हैं जिन्हें मत देंने का अधिकार है। ग्रामसभा तभी सशक्त होगी जब सभी समान रूप से विकास की मुख्य धारा से जुड़ेंगे। विभिन्न विकास कार्यों की योजना निर्माण तथा कार्यान्वयन में अपनी भूमिका के महत्व को समझेंगे। ग्रामसभा की बैठक में अपनी उपस्थिति की अनिवार्यता के प्रति भी संवेदनशील हों। यदि देखा जाये तो ग्रामसभा एक ऐसी आधारभूत इकाई है जिसमें उस ग्रामसभा के सभी सदस्य निःसंकोच आकर गांव से जुड़ी विभिन्न समस्याओं तथा मुद्दों पर विचार विमर्श कर सकते हैं। ग्राम सभा के सभी लोग सहभागिता से गांव के विकास के लिये योजना बना सकते हैं। पंचायत में चाहे कार्यक्रम का नियोजन हो या क्रियान्वयन या पूर्ण हुये कार्यों का मूल्यांकन एवं निगरानी, कोई भी कार्य लोगों की सहभागिता के बिना पूर्ण नहीं हो सकता। अतः पंचायत को सफल बनाने के लिये सभी कार्यों व निर्णय स्तर पर सबकी भागीदारी व सहयोग को शामिल करना अति आवश्यक है। सभी की सहभागिता से जहां एक ओर पंचायत संगठित व मजबूत होगी, वहीं दूसरी ओर पंचायत पर आम लोगों का विश्वास भी बढ़ेगा। ग्राम विकास प्रक्रिया में ग्राम समुदाय की सक्रिय सहभागिता के बिना ग्राम स्वराज का सपना अधूरा ही रहेगा। अतः ग्राम समुदाय को ग्राम के विकास व स्वयं उसकी सशक्तता के प्रति जागरूक करना होगा तभी एक सशक्त ग्रामसभा का निर्माण होगा और गांव विकास की ओर बढ़ सकेगा।

– प्रोफेसर प्रियानन्द अगड़े
फाउंडर व प्रेसीडेंट
इको नीड्स फाउंडेशन

□□□□

प्राकृतिक आईना व सामाजीकरण की प्रक्रिया

दोस्तों ! हमें इस बात पर विचार करना चाहिए कि हम सब इस धरती पर मात्र 60 से 70 साल की एक छोटी सी यात्रा पर आए हैं। इस यात्रा के दौरान हमें कुछ नेक कार्य करने का प्रयास करना चाहिए, कुछ ऐसा जो अपने जीवन की सार्थकता सिद्ध कर सके। यदि आप दूसरे व्यक्तियों के जीवन की खुशी और प्रसन्नता में अपना योगदान देंगे, तो आप अपना लक्ष्य, जीवन का सच्चा अर्थ पा सकेंगे। मैं आपको विश्वास दिला सकता हूँ कि "आप जो लोगों को और प्रकृति को देते हैं, बदले में वही आपको प्राप्त होता है।" जैसे प्यार के बदले में प्यार, सकारात्मकता के बदले में सकारात्मकता और नफरत के बदले में नफरत। यह सब आप अपने अनुभव से भी महसूस कर सकते हैं।

दोस्तों यह आपको तय करना है कि आप समाज या प्रकृति से बदले में क्या चाहते हो। यही आपके जीवन की दिशा और दशा निर्धारित करेगा।

जीवन एक पिघलती हुई आइसक्रीम की तरह है। दिन, महीने और साल गुजरते जा रहे हैं और दिन प्रतिदिन हम बूढ़े होते जा रहे हैं। यह आत्ममंथन का समय है कि हम समय के साथ कितने अच्छे समझदार, बुद्धिमान और विनम्र हुए अथवा हमने अपने जीवन में कुछ भी हासिल नहीं किया। समय कभी किसी का इंतजार नहीं करता। लेकिन, समय हमें एक बेहद महत्वपूर्ण पाठ पढ़ाता है कि कुछ भी स्थाई नहीं है जैसे– हमारे दुःखध्दर्द, शिकायतें, परेशानियां और यहां तक कि खुशियां भी। परिवर्तन जीवन का दूसरा नाम है। चलो ! हम अपना आज, कल से बेहतर बनाएं और अपने आप के लिए, परिवार के लिए, समाज के लिए और संपूर्ण मानवता के लिए अपना श्रेष्ठ देने का प्रयास करें। मित्रों ! ऐसी कामना करते हुए कि आने वाला कल, आपके द्वारा एक अर्थपूर्ण अध्याय लिखे जाने के लिए, आपका इंतजार कर रहा है।

हम सभी के जीवन में एक समय आता है, जब हमें सही या गलत का निर्णय स्वयं करना होता है और दोनों में से किसी एक का चुनाव करना होता है। ऐसे समय में यह महत्वपूर्ण हो जाता है कि हमें पता हो कि सही क्या है ?और गलत क्या है ? दोस्तों इस सन्दर्भ में, मैं अपने अनुभव पर आधारित, ''अच्छाई और बुराई का आत्मिक पैमाना'' साझा कर रहा हूं, मेरा पूरा विश्वास है कि यह आप लोगों के लिए उपयोगी सिद्ध होगा।

1. सही व अच्छा क्या है:– आप जिस सोच, विचार, विषय या कार्य को अपने परिवार व समाज के साथ बेझिझक साझा कर सकेंय साझा करने में खुशी हो और आपका अंतर्मन बार–बार बोले कि मुझे यह अपने माता–पिता को, अपने दोस्तों को और समाज में लोगों को बताना चाहिएय तो आप सुनिश्चित हो जाए कि यह सही है। उदाहरण के लिए व्यक्तिगत जीवन में उत्कृष्टता या इच्छित लक्ष्य की प्राप्ति या समाज हित में किया गया कार्य अपार खुशी व ताकत देता है और मनोबल को बढ़ाता है।
2. गलत व बुरा क्या है:– आप जिस सोच, विचार, विषय या कार्य को परिवार व समाज के साथ साझा नहीं कर सकें। जिसे आप लोगों से छुपा कर रखना चाहते हो और सोचते हो कि किसी को भी इस विषय में पता नहीं लगना चाहिएय तो समझ लो यह गलत है, असत्य है, बुराई है।
3. जीवन मे उपयोगः– दोस्तों! इस सत्य–असत्य, अच्छाई और बुराई के पैमाने पर हम अपने आप को कभी भी माप सकते हैं। सही और गलत की पहचान स्वयं कर सकते हैं। जब भी आप कोई कार्य करने जा रहे हों या आपके मन

में कोई विचार पैदा हो रहा हो और आप को संदेह हो कि यह सही है या गलत है तो आप तुरंत अपने आप से पूछिए कि क्या इस कार्य या विचार को मैं अपने परिवार, दोस्तों, समाज के साथ साझा करने में खुशी महसूस करूँगा या मैं इस बात को समाज, परिवार और दोस्तों से छुपाना चाहूँगा। इसका उत्तर आपको अपने आप, आपके अंतर्मन से मिल जाएगा और आप तय कर पाएंगे कि क्या सही है और क्या गलत है। उदाहरण के लिए, यदि मैं किसी दुर्व्यसन में पड़ गया हूं या पड़ने जा रहा हूं तो मेरी कोशिश यह रहेगी कि मैं इसको समाज से, परिवार से, अपने दोस्तों से छुपा कर रखूं। परंतु, यदि आप व्यक्तिगत रूप से किसी भी क्षेत्र में अच्छा कर रहे हैं, तो आप उसे अपने परिवार, समाज व दोस्तों के साथ साझा करोगे और साझा करने के साथ–साथ वह कार्य आपको बहुत खुशी देगा। दोस्तों! आओ, ऐसा काम करें जिसको करने में आपको स्वयं को, हमारे परिवार और समाज को आप के ऊपर फख्र हो।

4. प्रकृति का अटल नियमः– प्रकृति का अटल नियम है – अच्छाई को पुरस्कृत करना और बुराई को दंडित करना। जब आप किसी के लिए अच्छा सोचते हो, निस्वार्थ भाव से मानवता का कोई कार्य करते हो तो आपको आपका अंतर्मन शाबाशी देता है, आप अपने अंदर खुशी और आनंद की अनुभूति करते हैं और आपको कार्य करने की दुगनी ताकत और ऊर्जा भी कुदरत से मिलती है। इसी तरह जब आप किसी व्यक्ति के साथ गलत करते हो या किसी के लिए बुरा सोचते होय तो आपको खुशी और आनंद नहीं मिल सकता। आप अपने अंतर्मन में परेशान व दुखी होते हो।दोस्तों ! आप एक बार अपने अंदर झांककर देखो, अपने कार्यों के विषय में चिंतन करो और मूल्यांकन करो। एक बार सोच कर देखो कि जीवन क्या है?जीवन का उद्देश्य क्या है?मुझे यह जीवन आखिर मिला क्यों है?मुझे जीवन किस तरह जीना चाहिए?मेरा अपने परिवार और समाज के प्रति क्या उत्तरदायित्व है? इस सबके लिए सही–गलत की पहचान होना जरूरी हैद्य अपने अंतर्मन की आवाज सुनना जरूरी है।

समाजीकरण समरसता का आधारः

मनुष्य जन्म से एक संगठित शारीरिक ढांचा होता है, जिसके अंदर विकसित होने की अपार संभावनाए होती हैं। उसका न कोई नाम होता है और न ही जाति, धर्म और संप्रदाय होता है। वह न कोई भाषा जानता और न ही वह देश काल और समाज को पहचानता है। परंतु अपनी विकसीत होने की अपार क्षमताओं के दम पर अपना विकास करता है। घर और समाज उसे उसकी पहचान देता है। घर में, समाज में उसे किस प्रकार का व्यवहार करना चाहिए, यह सब उसे घर–परिवार के सदस्यों, विद्यालय के गुरुओं और मित्रों, आसपास के लोगों और रिश्तेदारों, परिचितों के आचरण और उनके बताने से सीखने को मिलता है। परिवार, मित्र, रिश्तेदार, परिचित, पड़ोसी, शिक्षा, राज्य और जनसंपर्क के साधन समाजीकरण के माध्यम हैं। सीखने और सिखाने की इसी प्रक्रिया को समाजीकरण कहा जाता है। व्यक्ति के व्यक्तित्व के विकास में समाजीकरण की सबसे प्रमुख भूमिका होती है। व्यक्ति जन्म से ही अपने गुणों को प्राप्त नहीं करता है, बल्कि समाज के सदस्य के रूप में वह धीरे–धीरे अर्जित करता है। समाजीकरण की प्रक्रिया ही निर्धारित करती है कि व्यक्ति बड़ा होकर समाज में कैसा व्यवहार करेगा और व्यक्तियों का व्यवहार ही किसी भी समाज का भविष्य निर्धारित करता है। समाजीकरण द्वारा व्यक्ति समाज की संस्कृति के बारे में सीखता है और उसी के अनुरूप व्यवहार करने की अपेक्षा की जाती है। घर, परिवार और समाज में अनुशासन, नैतिकता, समाज के प्रति दायित्व और कानून व्यवस्था का आधार समाजीकरण ही है। हम यदि चाहते हैं कि समाज में बेटियों और महिलाओं को सम्मान मिले, कानून व्यवस्था का सम्मान हो, सड़क पर अनुशासन का पालन हो, लोग आस पास के वातावरण को स्वच्छ रखें, पर्यावरण की रक्षा हो, आतंकवाद और हिंसा खत्म हो, देश और राष्ट्र का समग्र विकास होय तो घर, परिवार, विद्यालय और राज्य द्वारा समाजीकरण पर पूरा ध्यान केन्द्रित करना होगा। मेरा पूर्ण विश्वास है कि आदर्श और सभ्य समाज का निर्माण कानून के डर से नहीं, समाजीकरण द्वारा ही स्थापित हो सकता है। कानून समस्याओं अल्पकालिक समाधान दे सकता है, दीर्घकालीन और पूर्ण समाधान समाजीकरण द्वारा ही संभव है।

– डॉ. सत्यपाल सिंह मीना
SBGBT कार्यकर्ता

समाचार पत्रों में...

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

'सोच बदलो गांव बदलो' टीम का नया प्रकल्प 'शिक्षा पाओ-ज्ञान बढ़ाओ'

ग्रीन विलेज-क्लीन विलेज मुहिम

चार गांवों में चलाया पौधरोपण अभियान

पेड़ों से करें पृथ्वी का श्रृंगार

सोच बदलो गांव बदलो पहल शुरू

ग्रामीणों ने की समस्याओं पर चर्चा

गुमशुदगी का मामला दर्ज

हांसई में स्कूली बच्चों ने चलाया सफाई अभियान

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

डॉ. सत्यपाल मीणा के प्रयासों से निशुल्क कोचिंग शुरू

गरीब विद्यार्थियों के होंगे सपने साकार

प्रादेशिक

चंबल के बीहड़ों से निकला ग्रामीण विकास का मॉडल

प्रधानमंत्री ने विज्ञान भवन में किया धनौरा को सम्मानित

युवाओं ने सोच बदलो गांव बदलो विचार धारा से गांव का किया कायाकल्प

विकास की राह में युवा आए आगे, स्वेच्छा से रास्ते के लिए दी जमीन

महिलाओं को ...

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

विकास प्रक्रिया में हमारी सहभागिता - डॉ. मीणा

शिक्षा पाओ, ज्ञान बढ़ाओ परीक्षा 255 बच्चे हुए शामिल

समाचार पत्रों में...

ग्रीन विलेज, क्लीन विलेज के तहत किया पौधरोपण

चंद्रशेखर आजाद पार्क का किया लोकार्पण

अब अलग से पढ़ने को मिलेगी डॉ. कलाम की संघर्ष गाथा, जैविक खेती की महत्ता

डॉ. मीना ने किया स्कूल का निरीक्षण

धनौरा : जहां दो साल पहले न सड़क थी ना शौचालय, आज बना स्मार्ट गांव

कुरीतियों पर रोक के लिए मंथन

सोच बदलो, गांव बदलो यात्रा का समापन

क्लीन विलेज ग्रीन विलेज अभियान के तहत रोपे पौधे

ग्रामीण विकास का मॉडल बना धनौरा

अग्रणी पहल — डॉ. सत्यपाल मीना के प्रयास ला रहे रंग, गांवों में खुल रही विकास की डगर, लोगों को जागरूक करना है कार्यक्रम का उद्देश्य

सोच बदलो गांव बदलो टीम से जुड़े सदस्यों का चौथा चरण शुरू

एसबीजीबीटी इन पहलुओं पर कर रही कार्य

यह मुहिम चलाई जा रही है जिले में

स्मार्ट विलेज धनौरा में गौरव पथ निर्माण का कार्य शुरू

ग्रामीणों ने स्वेच्छा से जमीन देकर दिया उदारता का परिचय

सोच बदलो गॉव बदलो अभियान

गतिविधियां

✍ सोच बदलो – गांव बदलो यात्रा...

(ग्रामीण क्षेत्रों में जन चेतना व जन जागरूकता को बढ़ावा देने हेतु)

✍ ग्रीन विलेज – क्लीन विलेज अभियान...

(पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देने हेतु)

✍ आओ पढें – आगे बढें अभियान...

(स्कूली शिक्षा को बढ़ावा देने हेतु)

✍ शिक्षा पाओ – ज्ञान बढ़ाओ प्रतियोगिता

(छात्र–छात्राओं में प्रतियोगी दक्षता बढ़ाने हेतु)

✍ उत्थान कोचिंग संस्थान...

(गरीब होनहार छात्र–छात्राओं के लिए प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी हेतु कोचिंग सुविधा)

✍ महिला सशक्तिकरण

बालिकाओं एवं महिलाओं को सशक्त बनाने को प्रयास

✍ आधुनिक खेती – हमारा प्रयास

किसानों को आधुनिक खेती के विषय में जागरूक करना

✍ रक्तदान – महादान

जरूरतमंद लोगों को रक्त उपलब्ध कराना तथा रक्तदान कैम्प लगाना

अंत में दो पंक्तियाँ

ना किसी राहवर, ना किसी रहगुजर से निकलेगा
हमारे पाँव का काँटा है, सिर्फ हमी से निकलेगा!
और इसी गली में कुछ बूढे फकीर गाते हैं,
तलाश कीजिए खजाना यहीं से निकलेगा!!

□□□□

आप हमें अपने सुझाव / प्रतिक्रिया हमारी आधिकारिक वेबसाइट http//sbgbteam.com पर Contact सेक्शन में जाकर लिख सकते हैं अथवा हमें sbgbteam@gmail.com पर सीधे ईमेल कर सकते हैं ।